# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

## पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष ३३, अङ्क १९ | २०८१ माघ १-१५ | पूर्णाङ्क ७८१

प्रकाशक

**सर्वोच्च अदालत**

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७१२, ४२००७२९, ४२००७५०, Ext.२२६९ (सम्पादक), २२७० (सम्पादन शाखा), २१७० (छापाखाना), २२७४ (बिक्री)

टोल फ्री : १६६०-०१-३३३५५, फ्याक्सः ४२००७४९, पो.ब.नं.२०४३८

Email: info@supremecourt.gov.np, admin@supremecourt.gov.np / Web: www.supremecourt.gov.np

**सम्पादन तथा प्रकाशन समिति**

**माननीय न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद फुयाल, सर्वोच्च अदालत - अध्यक्ष**
**माननीय न्यायाधीश श्री सुनिलकुमार पोखरेल, सर्वोच्च अदालत - सदस्य**
**मुख्य रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्रराज ढकाल, सर्वोच्च अदालत - सदस्य**
**नायब महान्यायाधिवक्ता श्री टेकबहादुर घिमिरे, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय - सदस्य**
**रजिस्ट्रार श्री भद्रकाली पोखरेल, सर्वोच्च अदालत - सदस्य**
**अधिवक्ता श्री सुरज खत्री, उपाध्यक्ष, नेपाल बार एसोसिएसन - सदस्य**
**वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हरि शंकर निरौला, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन - सदस्य**
**डा.कृष्णप्रसाद बस्याल, डिन, त्रिभूवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय - सदस्य**
**सहरजिस्ट्रार श्री अर्जुनप्रसाद कोइराला, सर्वोच्च अदालत - सदस्य सचिव**

**सम्पादक :** श्री कालीबहादुर साम्प्यु लिम्बू

**सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत् कर्मचारीहरू**

शाखा अधिकृत श्री सुजता उप्रेती
शाखा अधिकृत श्री सुकराम मोक्तान
शाखा अधिकृत श्री विनिता महर्जन
शाखा अधिकृत श्री समिता श्रेष्ठ
नायब सुब्बा श्री सन्तोष घिमिरे
सिनियर प्रुफरिडर श्री रेशम शर्मा
कम्प्युटर अपरेटर श्री विदुर खड्का
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी
कार्यालय सहयोगी श्री अच्युतप्रसाद दाहाल

**भाषाविद् :** श्री रामचन्द्र फुयाल

**बिक्री शाखा**

नायब सुब्बा श्री खिमा पोखरेल

**मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू**

मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी
सिनियर कम्पोजिटर श्री श्यामकृष्ण प्रजापति
सिनियर प्रेसम्यान श्री सविता पोखरेल
सिनियर प्लेटमेकर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने
सिनियर बुकबाइन्डर श्री तारा वाग्ले
सहायक कार्टोग्राफर श्री विपिन अधिकारी
बुकबाइन्डर श्री सरिता चक्रधर
बुकबाइन्डर श्री मदन तिमल्सिना
बुकबाइन्डर श्री कृष्णप्रसाद घिमिरे
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी
कार्यालय सहयोगी श्री धनमाया नगरकोटी
कार्यालय सहयोगी श्री रमेश नेपाल

**विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू**

| | |
|---|---|
| पूर्ण इजलास | |
| संयुक्त इजलास | १ |
| इजलास नं. १ | ७ |
| इजलास नं. २ | |
| इजलास नं. ३ | १ |
| इजलास नं. ४ | १४ |
| **जम्मा** | **२३** |

| | |
|---|---|
| इजलास नं. ५ | १ |
| इजलास नं. ६ | २ |
| इजलास नं. ८ | १३ |
| इजलास नं. ९ | ७ |
| इजलास नं. १० | २ |
| इजलास नं. १३ | १ |
| **जम्मा** | **२६** |

**कूल जम्मा २३ + २६ = ४९**

# नेपाल कानून पत्रिकामा

प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि हालसम्म)

हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

# www.nkp.gov.np

मा जानुहोला ।

**खोज्ने तरिका**

सर्वप्रथम **www.nkp.gov.np** लगइन गरेपश्चात् देखिने पृष्ठमा **शब्दबाट** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गरी हरियो बटनमा रहेको खोज्नुहोस् भन्ने बटनलाई थिची खोजी गर्न सक्नुहुनेछ । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा मुद्दाको किसिम, मुद्दाको नाम एवं निर्णय नं. तथा ने.का.प. विवरणमा रहेका विविध शीर्षकबाट आफूले चाहेअनुसार फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाम्रो बारेमा** समेतबाट हेर्न सक्नुहुनेछ ।

**यस पत्रिकाको इजलाससमक्ष उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्ने छः**

**सअ बुलेटिन, २०८..., ... .... – १ वा २, पृष्ठ ....**

**(साल) (महिना)**

**उदाहरणार्थः सअ बुलेटिन, २०८१, माघ – २, पृष्ठ १**

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०

# सूचना

**"<u>नेपाल कानून पत्रिका र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन</u>"** को **"<u>वार्षिक ग्राहक</u>"** बन्न चाहनेका लागि **<u>२०७६ वैशाख अङ्क</u>**देखि वार्षिक ग्राहक बन्न पाउने गरी सम्पादन तथा प्रकाशन समितिले निर्णय गरेको हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीका लागि यो सूचना प्रकाशन गरिएको छ ।

समितिको निर्णयानुसार मूल्य समायोजन भई **<u>नेपाल कानून पत्रिका रू.१५०</u>** र **<u>सर्वोच्च अदालत बुलेटिन प्रति अङ्क रू.४०</u>** कायम गरिएकोसमेत सबैलाई जानकारी गराइन्छ ।

---

**मूल्य रू.४०।–**

**मुद्रकः सर्वोच्च अदालत, छापाखाना**

# विषयसूची


| क्र.सं. | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| **संयुक्त इजलास** | | | **१ - १** |
| **१.** | निर्णय दर्ता बदर हक कायमसमेत | सानुकाजी श्रेष्ठसमेत वि. मोहनदेवी श्रेष्ठ | **१** |
| **इजलास नं. १** | | | **२ - १०** |
| **२.** | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | अजय शंकर झा 'रुपेस' वि. श्री पर्सा जिल्ला अदालत, वीरगन्जसमेत | **२** |
| **३.** | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. कृष्णप्रसाद न्यौपाने | **२** |
| **४.** | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. जितेन्द्रकुमार दास तत्मा | **४** |
| **५.** | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | सुरज भुषाल वि. काठमाडौं जिल्ला अदालतसमेत | **५** |
| **६.** | निर्णय दर्ता बदर दर्ता | किरण लामा वि. मालपोत कार्यालय, रामेछाप, मन्थली | **६** |
| **७.** | जायजात तायदात तथा डाँक लिलाम सकार मुचुल्का बदर, तामेली पर्चा बदर, दर्ता बदर दर्ता | हरेरामप्रसाद साह तेलीसमेत वि. जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत, जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत वि. हरेरामप्रसाद साह तेलीसमेत | **७** |
| ८. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | प्रतिक्षा सुवेदी वि. मकवानपुर जिल्ला अदालत, मकवानपुरसमेत | ९ |
| **इजलास नं. ३** | | | **१० – १४** |
| ९. | आयकर (आ.व.२०५७/०५८) | सुरेश प्रधान वि. भृकुटी पल्प एण्ड पेपर नेपाल लिमिटेड, गँ□कोट, नवलपरासी | |
| **इजलास नं. ४** | | | **१४ – २४** |
| **१०.** | उत्प्रेषणसमेत | ओमकार चापागाईँ वि. ऋण असुली न्यायाधिकरण कमलपोखरी, काठमाडौंसमेत | **१४** |
| **११.** | बैंकिङ कसुर | गीता कार्की वि. नेपाल सरकार | **१५** |
| **१२.** | बैंकिङ कसुर | अन्जुला घिमिरे वि. नेपाल सरकार | **१५** |
| **१३.** | उपयुक्त आदेश | श्यामकुमार कटुवालसमेत वि. उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलाससमेत | **१६** |
| **१४.** | नागरिकता | जनकदेव दुबेसमेत वि. नेपाल सरकार | **१६** |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १५. | उत्प्रेषणसमेत | राजेशशम्सेर राणा वि. भूमि सुधार कार्यालय, काठमाडौंसमेत | १७ |
| १६. | मोटरसाइकल चोरी | नेपाल सरकार वि. कृष्ण लामा | १८ |
| १७. | उत्प्रेषणसमेत | प्रमोद साह वि. सर्लाही जिल्ला अदालत मलंगवासमेत | १९ |
| १८. | लेनदेन | तुलसीराम पौडेल वि. पिताम्बर पौडेल | २० |
| १९. | अंश | राधिका रेग्मी वि. शुक्रराज रेग्मीसमेत | २० |
| २०. | अंश | नकली बट्टसमेत वि. हिराकाजी बट्ट | २१ |
| २१. | अंश दर्ता | रोशन कोइराला वि. सूर्यप्रसाद उपाध्यायसमेत | २२ |
| २२. | दूषित लिखत बदर | लक्ष्मी साखकर्मी वि. म[illegible] श्रेष्ठसमेत | २२ |
| २३. | हक कायम | नरेशप्रसाद शर्मा वि. गरौजा मगर | २३ |
| **इजलास नं. ५** | | | **२४ – २५** |
| २४. | जालसाजी | मनिष कार्कीसमेत वि. मणिकुमार कार्कीसमेत | २४ |
| **इजलास नं. ६** | | | **२५ – २६** |
| २५. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत | गंगाप्रसाद सेढाई वि. गंगा तिमिल्सिनासमेत | २५ |
| २६. | उत्प्रेषण | शिवशरण ठाकुर वि. सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत | २६ |
| **इजलास नं. ८** | | | **२६ – ४२** |
| २७. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण समेत | दयाशंकरप्रसाद यादव वि. उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्ज, पर्सासमेत | २६ |
| २८. | अंश चलन | डोरी महरा वि. कुमारी खत्रीसमेत | २७ |
| २९. | कर्तव्य ज्यान र ज्यान मार्ने उद्योग | सुकराम गोले वि. नेपाल सरकार | २९ |
| ३०. | राजीनामा लिखत दर्ता बदर | वीरेन्द्र बनियासमेत वि. तुल्सीराम बनियासमेत | ३० |
| ३१. | व[illegible]शिक रोजगार कसुर | नेपाल सरकार वि. सरला रसाइली विष्टसमेत | ३० |
| ३२. | किर्ते जालसाजी | रविन्द्र बनिया वि. जितेन्द्र बरईसमेत | ३१ |
| ३३. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | शिवकुमार माझी वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत | ३२ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३४. | आयकर (आ.व. ०६५/०६६) | कृष्णप्रसाद पराजुली वि. इस्टर्न प्लाष्टिक इन्डस्ट्रिज प्राइभेट लिमिटेड छातापिपरा, बारा | ३३ |
| ३५. | खुन डाँका | नेपाल सरकार वि. भिमबहादुर राईसमेत | ३५ |
| ३६. | जग्गा खिचोला मेटाई पर्खाल भत्काई निकास खुलाइपाऊँ | रामकुमार श्रेष्ठसमेत वि. रुद्रबहादुर परियार | ३७ |
| ३७. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | प्रतिक्षा घिमिरे वि. उर्मिला घिमिरेसमेत | ३९ |
| ३८. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | गोपीलाल ढकाल वि. उपकुलपति, मध्यपश्चिमाञ्चल विश्वविद्यालय वीरेन्द्रनगर, सुर्खेतसमेत | ४१ |
| ३९. | उत्प्रेषण / परमादेशसमेत | रणबहादुर बस्नेतसमेत वि. नेपाल सरकार, स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालय, रामशाहपथ काठमाडौंसमेत | ४१ |
| **इजलास नं. ९** | | | ४२ – ४८ |
| ४०. | हालद□खिको बकसपत्र लिखत दर्ता बदर दर्ता | लिलादेवी यादव वि. निर्मलादेवी यादव, रविताकुमारी यादवसमेत वि. श्रीपति यादवसमेत | ४२ |
| ४१. | लागु औषध खरी□हिरोइन | दिनेश श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार, रामप्रवेश ठाकुर वि. नेपाल सरकार | ४३ |
| ४२. | डाँका | टेकबहादुर थापा वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. कुमार गुरुङसमेत | ४४ |
| ४३. | परमादेशसमेत | सुनिलकुमार पटेल वि. प्रहरी प्रधान कार्यालय, नक्साल, काठमाडौंसमेत | ४५ |
| ४४. | उत्प्रेषण / परमादेश | संचिदानन्द ठाकुर वि. भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयअन्तर्गतको भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभाग, खरिद इकाइ, बबरमहल, काठमाडौंसमेत | ४७ |
| ४५. | राजस्व चुहावट | नेपाल सरकार वि ललितपुर जिल्ला ललितपुर उपमहानगरपालिका वडा नं. २, सानेपा स्थित इम्प्रिजिलो एस.पि.ए. नेपालसमेत | ४७ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४६. | अंश | बलबहादुर ऐरी थापा वि. टिकाबहादुर ऐडी | ४७ |
| **इजलास नं. १०** | | | **४८ – ५०** |
| ४७. | अवैध साल काठ ओसारपसार | नेपाल सरकार वि. शेरबहादुर कटुवालसमेत | ४८ |
| ४८. | लागु औषध (ब्राउन सुगर) | नेपाल सरकार वि. बिजेन्द्र प्रजापती | ४९ |
| **इजलास नं. १३** | | | **५० – ५२** |
| ४९. | लागु औषध खैरो हिरोइन | कैलाश बस्नेत वि. नेपाल सरकार, भिमबहादुर बस्नेत वि. नेपाल सरकार, कविता गुरुङ वि. नेपाल सरकार, पासाङ्ग शेर्पा वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. पासाङ्ग शेर्पासमेत | ५० |

## संयुक्त इजलास

### १

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** *०७६-CI-०४६८, निर्णय दर्ता बदर हक कायमसमेत, सानुकाजी श्रेष्ठसमेत वि. मोहनदेवी श्रेष्ठ*

मिति २०१८।११।०६ को धर्मपत्रको कागजको प्रतिलिपिबाट हर्षलालको छोरा हर्षबहादुर श्रेष्ठ भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ। मिति २०३७।०६।१५ मा हर्षबहादुर श्रेष्ठले नागरिकताको अस्थायी निस्सा पिता हर्षलाल श्रेष्ठको नाउँबाट लिएको देखिन्छ र उक्त लिखतको पिठमा छोरा दिलबहादुर र बुहारी मनदेवी भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ। मिसिल संलग्न गोपालकृष्ण श्रेष्ठले मिति २०६२।०३।१५ मा ललितपुर उपमहानगरपालिकाबाट प्राप्त गरेको नाता प्रमाणित प्रमाणपत्रबाट हर्षनारायण श्रेष्ठको तीन छोराहरूमा हर्षलाल श्रेष्ठ, हरिकृष्ण श्रेष्ठ र हरिलाल श्रेष्ठ रहेको देखिन्छ। सोहीबमोजिम वादी रामदेवी श्रेष्ठले मिति २०६४।११।०९ मा ललितपुर उपमहानगरपालिकाको कार्यालयबाट नाता प्रमाणित प्रमाणपत्र लिँदा हर्षलाल श्रेष्ठको पत्नी तरिनानी श्रेष्ठ, छोरा हर्षबहादुर श्रेष्ठ हुन् भनी उल्लेख गरेको देखिएबाट हर्षलाल श्रेष्ठ छुट्टै व्यक्तिगत पहिचान भएको व्यक्ति भएको स्पष्ट देखिने।

ललितपुर उपमहानगरपालिकाले गरेको स्थानीय सर्जमिन मुचुल्काको सम्बन्धमा विचार गर्दा विवादित कि.नं. ४६४, ६०१, ४८९, र ५२२ का जग्गाहरू दा.खा. निर्णय दर्ता गर्नुपूर्व ललितपुर उपमहानगरपालिकाले स्थानीय सर्जमिन मुचुल्का गरेको देखिन्छ। तर उक्त सर्जमिन मुचुल्का गर्दा जनप्रतिनिधिलाई रोहबरमा राखेको नदेखिएको र साक्षीहरूले सहीछाप मात्र गरिदिएकै आधारमा उक्त सर्जमिन कानूनत: मिल्ने देखिँदैन। प्रतिवादीहरूले, वादीहरूले उक्त सर्जमिन मुचुल्कालाई अन्यथा भएको भनी कानूनी उपचार नखोजेको भन्ने जिकिर गरे तापनि वादीले पेस गरेका नाता प्रमाणित प्रमाणपत्रको प्रतिलिपिलगायतका अन्य लिखतहरूबाट समेत उक्त सर्जमिन मुचुल्काको बेहोरालाई खण्डन गरेको देखिने।

प्रतिवादीहरूका नाममा विवादित जग्गाहरू नामसारी गरेको कार्य कानूनी रीत पुर्‍याई भएको देखिँदैन। सोहीबमोजिम हर्षलाल श्रेष्ठ र हरिलाल श्रेष्ठ भन्ने व्यक्ति एकै रहेको भन्ने आधार बनाई जग्गा नामसारी दर्ता भएको तर उक्त आधार तथ्ययुक्त प्रमाणबाट पुष्टि नभएको अवस्थामा हकै नपुग्ने प्रतिवादीहरूले विवादित जग्गाहरूमा वादीहरूको हक मेटाउने नियतले दर्ता नामसारी गर्ने गरी मालपोत कार्यालय, ललितपुरको मिति २०६२।०२।१३ को निर्णयलाई सदर गर्ने गरी सुरू ललितपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७४।११।१० मा भएको फैसला उल्टी भई उल्लिखित जग्गाहरू वादीहरूका नाममा नामसारी गरिदिने ठहर्‍याई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७६।०५।२४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने

इजलास अधिकृत :– कृष्णशोभा सुवाल

कम्प्युटर :– विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७८ साल फागुन ११ गते रोज ४ शुभम्।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएको छ :

- ०७६-CR-१२५२, जालसाजी, हिरालाल श्रेष्ठसमेत वि. रामदेवी श्रेष्ठसमेत
- ०७६-CI-०४६९, दूषित बन्डापत्र बदरसमेत, सानुकाजी श्रेष्ठसमेत वि. रामदेवी श्रेष्ठसमेत
- ०७६-CR-१२५१, जालसाजी, सानुकाजी श्रेष्ठसमेत वि. रामदेवी श्रेष्ठसमेत
- ०७६-CI-०४७०, दूषित लिखत दर्ता बदरसमेत, सानुकाजी श्रेष्ठसमेत वि. रामदेवी श्रेष्ठसमेत

## इजलास नं. १

### २

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** *०७८-WH-०११९, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, अजय शंकर झा 'रुपेस' वि. श्री पर्सा जिल्ला अदालत, वीरगन्जसमेत*

पर्सा जिल्ला अदालतका आदेशले मुद्दा पुर्पक्षको लागि बाल सुधार गृहमा राखिएका परिवर्तित नाम ०७८/०७९ (क) १५ वर्षको नाबालक भएकोमा कुनै विवाद देखिएको छैन । निजउपरको कसुर प्रमाणित भएमा निजलाई अधिकतम सजाय गर्दा पनि दुई वर्ष छ महिनासम्म कैद सजाय र पच्चिस हजार रूपियाँसम्म मात्र जरिवाना हुने देखियो अर्थात् निजलाई तीन वर्ष वा सोभन्दा बढी कैद सजाय हुने अवस्था देखिन आएन । यसबाट निजलाई ऐ. दफा २४ को उपदफा (२) को (ख) मा उल्लेख भए अनुसार पुर्पक्षको लागि बाल सुधार गृहमा राख्नुपर्ने देखिएन । त्यस्तै निजलाई पुर्पक्षको लागि बाल सुधार गृहमा राख्न सकिने ऐ. दफा २४ को उपदफा (२) को (क) मा उल्लिखित आधारहरू पनि निजको हकमा रहे भएको देखिन आएन । निजले पटके रूपमा कसुर गरेको पनि अभियोग माग दाबी लिन नसकेको र अभियोग पत्रमा लिएको सजायको माग दाबी हेर्दा हुन सक्ने सजायका आधारमा यी नाबालकले गरेको कसुरलाई जघन्य कसुर वा गम्भीर कसुरको कोटीमा राख्न सकिने पनि देखिन आएन । यस्तो अवस्थामा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाहरूको आधारमा परिवर्तित नाम ०७८/०७९ (क) लाई मुद्दा पुर्पक्षको लागि बाल सुधार गृहमा राख्ने गरी पर्सा जिल्ला अदालतबाट भएको आदेश सो आदेशानुसार निजलाई मुद्दा पुर्पक्षको लागि बाल सुधार गृहमा राखेको कार्य कानून अनुसार मिलेको देखिएन । नेपालको संविधानको धारा १७ को उपधारा (१) मा स्वतन्त्रताको मौलिक हकअन्तर्गत कानूनबमोजिम बाहेक कुनै पनि व्यक्तिलाई वैयक्तिक स्वतन्त्रताबाट वञ्चित गरिने छैन भन्ने व्यवस्था रहेको छ । यी परिवर्तित नाम ०७८/०७९ (क) लाई मुद्दा पुर्पक्षको लागि बालसुधार गृहमा राखिएको कार्य कानून अनुसार मिलेको नदेखिएबाट निज आफ्नो स्वतन्त्रताको मौलिक हकबाट वञ्चित हुनुपरेकोसमेत स्पष्ट हुन गएबाट सोको उपचारको रूपमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरी निजलाई बाल सुधार गृहबाट मुक्त गर्नुपर्ने ।

परिवर्तित नाम ०७८/०७९ (क) उपर मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २४३ (१) र (२) बमोजिमको नकबजनी चोरीको कसुरमा सोही संहिताको दफा २४३ (३) बमोजिम हुने सजायमा ऐ. को दफा ४५ (३) अनुसार आधा सजाय हुनुपर्ने भन्ने माग दाबी लिई अभियोग पत्र दायर भएको अवस्थामा निज परिवर्तित नाम ०७८/०७९ (क) लाई मुद्दा पुर्पक्षको लागि बाल सुधार गृहमा राख्ने गरी पर्सा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७८/६/१८ मा भएको आदेश, सो आदेशानुसार निजलाई बालसुधार गृहमा राखिएको कार्य कानून अनुसार मिलेको नदेखिएको र सोबाट निज नाबालकले आफ्नो स्वतन्त्रताको हकलगायतका मौलिक हकबाट वञ्चित हुनु परेको देखिएकोले निवेदन माग अनुसार निजलाई थुनामुक्त गर्न बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : यदुराज शर्मा

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७८ साल माघ १३ गते रोज ५ शुभम् ।

### ३

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.,** *०७४-CR-१४३०, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. कृष्णप्रसाद न्यौपाने*

प्रतिवादी प्रकाश भन्ने कृष्णप्रसाद न्यौपानेलाई कुनै पीडा नभएको सबै अङ्गहरू सामान्य रहेको भनी अन्य करणीका लक्षणहरू देखिएको थिएन । पीडितले लगाएको कुर्ताको देब्रे भाग च्यातिएको र दाहिने तिघ्रामा घाउचोट भएको भन्ने

पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण रिर्पोटलाई डाक्टर अर्जुन भट्टले अदालतमा उपस्थित भई सो बेहोरालाई पुष्टि हुने गरी बकपत्र गरिदिएको देखिन्छ । पीडित र पीडकको स्वास्थ्य प्रतिवेदन, डाक्टरको बकपत्र बेहोरा वादीका साक्षीहरूले उल्लेख गरेका बेहोरासमेतबाट अभियोग दाबीबमोजिम पीडितउपर जबरजस्ती करणीकै वारदात नभई उद्योगसम्मको वारदात घट्न गएको रहेछ भन्ने देखिने।

यद्यपी जबरजस्ती करणीको उद्योगका लागि तेस्रो पक्षको उपस्थिति अनिवार्य नभए पनि प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी प्रकाश भन्ने कृष्णप्रसाद न्यौपानेको मनसायअनुरूप पीडित सङ्केत नं. ६६ रामनगर 'ख' उपर जबरजस्ती करणीको कार्य सम्पन्न हुन नदिनका लागि वारदात स्थलमा पीडितको भदै जाहेरवालाको उपस्थिती बाधक बन्न पुगेको देखिन्छ । प्रतिवादीले अदालतमा अनुसन्धानको क्रममा भएको बयान झुट्ठा हो भनी कसुरमा पूर्णइन्कार रही बयान गरे पनि पीडित सुतिरहेको ठाउँमा अचानक लोटेको अवस्थामा जाहेरवालाले देखेको हो । पीडितलाई नराम्रो काम गऱ्यो भनी आफन्तले मलाई पिट्छन् मार्छन् भन्ने लागेर वारदात स्थलबाट भागेको हुँ भन्ने बयान बेहोरा, प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको देखेको भन्ने बेहोराबाहेक अन्य बेहोरा मेरो हो भनी जाहेरी दरखास्तलाई आंशिक रूपमा समर्थन गरी गरेको जाहेरवालाको बकपत्र, जबरजस्ती करणीको वारदात घटित हुन लागेको अवस्थामा पीडितको संरक्षक निजको भदै जाहेरवाला सङ्केत नं. ६६ रामनगर 'क' को उपस्थिती र पीडितले लगाएको कुर्ताको देब्रे भाग च्यातिएको, दाहिने तिघ्रामा घाउचोट रहेको भन्ने स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट पीडितउपर अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर जबरजस्ती करणीको कार्य पूरा हुन नपाई उद्योगसम्मको कार्य प्रतिवादी प्रकाश भन्ने कृष्णप्रसाद न्यौपानेबाट भए गरेको भन्ने देखिने।

जाहेरवाला सङ्केत नं. ६६ रामनगर 'क' ले पिसाब गर्न भनी बाहिर निस्किने क्रममा पीडित सुतिरहेको स्थानमा प्रतिवादीलाई देखी के गरेको भनी कराउँदा केही नबोली भागेकोले जाहेरवालाको उपस्थितीले प्रतिवादीको आपराधिक कार्यमा बाधा अवरोध सिर्जना भई जबरजस्ती करणीको कार्यले पूर्णता प्राप्त गर्न नसकेको देखिन्छ । प्रतिवादीले पीडितउपर जबरजस्ती करणी गर्ने उद्देश्य लिएर पीडित सुतेको ठाउँमा गई जबरजस्ती करणी गर्न कोशिस गर्दा पीडितको कुर्था च्यातिएको र तिघ्रामा निलडाम हुन गएको हो भन्ने तथ्य स्वास्थ्य परीक्षण रिर्पोटबाट देखिन्छ। यस अवस्थामा प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको आधारबाट प्रतिवादी प्रकाश भन्ने कृष्णप्रसाद न्यौपानेले पीडित सङ्केत नं.६६ रामनगर 'ख' उपर जबरजस्ती करणी नगरी उद्योगसम्मको वारदात कायम हुने कार्य गरेको देखिने ।

जन्मजात असक्त अपाङ्ग पीडित सङ्केत नं. ६६ रामनगर 'ख' लाई प्रतिवादी प्रकाश भन्ने कृष्णप्रसाद न्यौपानेले जबरजस्ती करणीको उद्योगसम्म गरेको पुष्टि भइरहेको अवस्थामा प्रतिवादीलाई जबरजस्ती करणीको उद्योगमा कसुर ठहर गर्नुपर्नेमा सुरू बर्दिया जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादी प्रकाश भन्ने कृष्णप्रसाद न्यौपानेलाई अभियोग माग दाबीबमोजिमको कसुर अपराधबाट पूर्णरूपमा सफाइ दिने गरी उच्च अदालत तुलसीपुर, नेपालगन्ज इजलासबाट मिति २०७४/०८/२५ मा भएको फैसला मनासिब देखिने।

प्रतिवादी प्रकाश भन्ने कृष्णप्रसाद न्यौपानेले जाहेरवालाको घरमा एक्लै कोलियामा सुतिरहेकी असक्त अपाङ्ग पीडित सङ्केत नम्बर ६६ रामनगर 'ख' लाई जबरजस्ती करणी गर्ने उद्देश्यले क्रियाकलाप गरिरहेको अवस्थामा जाहेरवालाले देखेर कराएपछि निज प्रतिवादी भागेको साथै पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण रिर्पोटसमेतबाट पीडितउपर जबरजस्ती करणीको वारदात घटित नभई उद्योगसम्म गरेको तथ्य स्थापित हुँदा प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम

कसुर ठहर गरी सुरू बर्दिया जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३/०३/१६ मा भएको फैसलालाई उल्टी गरी प्रतिवादीलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी उच्च अदालत तुलसीपुर, नेपालगन्ज इजलासबाट मिति २०७४/०८/२५ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उच्च अदालतबाट भएको फैसला केही उल्टी भई प्रतिवादी प्रकाश भन्ने कृष्णप्रसाद न्यौपानेलाई साबिक मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(५) र ५ नं. बमोजिम जबरजस्ती करणीको उद्योगको कसुरमा प्रतिवादी प्रकाश भन्ने कृष्णप्रसाद न्यौपानेलाई २ वर्ष ६ महिना वर्ष कैद सजाय हुने।

इजलास अधिकृत :- ऋतु राई

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७८ साल पुस ९ गते रोज ६ शुभम्।

**४**

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.**, *०७५-CR-०३६७, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. जितेन्द्रकुमार दास तत्मा*

मौकाकोस्वास्थ्यपरीक्षणप्रतिवेदनबाटपीडित सिराहा क को योनि वरिपरि घाँउ चोटपटक देखिएन, करणीसम्बन्धी लक्षण देखिएन तथा हाइमन च्यातिएको थियो, Sperm Present थियो। र पीडकको लिङ्गमा घाँउ चोटपटक देखिएन, जबरजस्ती करणी गरेको लक्षण देखिएन, करणीसम्बन्धी अन्य कुराहरू देखिएन ।" भन्ने बेहोराको पीडित र प्रतिवादीको स्वास्थ्य परीक्षण रिर्पोट देखिन्छ । उक्त स्वास्थ्य परीक्षण रिर्पोटबाट करणीजन्य लक्षण तथा वारदातसँग सम्बन्धित चिह्न, सङ्केत केही कुरा नदेखिएको, पीडितको कन्याजाली च्यातिएको (Hymen Rupture), Sperm Present थियो र करणीसम्बन्धी अन्य कुराहरू देखिएन भन्ने राय उल्लेख भएको प्रतिवेदन देखिन्छ । पीडितको कन्याजाली च्यातिएको (Hymen Rupture) र Sperm Present (शुक्रकीट) को सम्बन्धमा प्रस्तुत मुद्दाको वारदातको दिन भारतबाट आएको प्रेमी (रमेश) सँग सहमतिमा नै यौन सम्पर्क राखेको थिएँ प्रतिवादीले मलाई जबरजस्ती करणी गरेको होइन भनी पीडितको बकपत्रबाट पीडितको Hymen Rupture र यौनाङ्गमा रहेको Sperm (शुक्रकीट) निजको प्रेमीसँग करणी लिनुदिनु गरेबाट भएको भन्ने देखिन्छ। प्रतिवादी जितेन्द्रकुमार दास र पीडितबिच करणी नभएको अवस्थामा पीडितको यौनाङ्गमा रहेको Sperm प्रतिवादीकै हो भनी भन्न मिल्दैन। जबरजस्ती करणीलाई पुष्टि गर्ने कुनै प्रकारको घाउ, चोटपटक, निलडाम तथा चिह्न सङ्केतहरू नदेखिएको भन्ने पीडित र प्रतिवादीको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन हुँदा प्रतिवादी र पीडितबिच जबरजस्ती करणीको कार्य नभए नगरेको भन्ने देखिने।

पीडितको उमेरको सम्बन्धमा पीडितले जाहेरी दरखास्तमा उमेर १५ वर्ष उल्लेख गरेको र निज अध्ययनरत स्कुलबाट प्राप्त रेकर्ड अनुसार उमेर ११ वर्ष उल्लेख भए अनुसार सोही उमेर ११ वर्ष उल्लेख गरी अभियोगपत्र दायर भएको देखिन्छ। सो अभियोगपत्रमा उल्लेख भएको पीडितको उमेरलाई हेर्दा निज नाबालिका १६ वर्ष नपुगेको नाबालिका देखिन्छ। नाबालक नाबालिकाको सन्दर्भमा साबिकको मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको २४ नं. बमोजिम सोह्र वर्ष नपुगेका नाबालकको हकमा निजको हकवालालाई संरक्षक राख्नुपर्ने भन्ने कानूनी व्यवस्था देखिन्छ। यी पीडित १६ वर्षभन्दा मुनिको भए पीडितको संरक्षकले जाहेरी दरखास्त दर्ता गराएको देखिएन। साथै बयान कागज तथा अभियोगपत्र दायर हुँदाको अवस्थासम्म मा पनि पीडितको संरक्षक वा हकवाला नराखिएकोले यी पीडित नाबालक भन्नेमा अनुसन्धान अधिकारी नै विश्वस्त नभएको देखिन्छ। पीडित अध्यनरत स्कूलको रजिस्टरबाट ११ वर्ष देखिए पनि जाहेरी दरखास्तमा पीडितको उमेर १५ वर्ष लेखिएको र जाहेरवाला स्वयंले आफ्नो उमेर १८ वर्ष हुँ भनी अदालतको बकपत्रसमेतबाट उमेर फरक फरक देखिने।

पीडितको जन्मस्थान देश भारत जिल्ला मधुबनी ग्राम पञ्चायत देवधार वडा नं. ४ रही हाल

सिराहा जिल्ला सिराहा नगरपालिका वडा नं. १ स्थित डेरा गरी बस्दैआएको भन्ने जाहेरी दरखास्त बेहोरा हुँदा पीडित भारतमा जन्म भई नेपाल आएर बसोबास गरेको भन्नेमा कुनै दुविधा देखिएन । पीडित जन्मेको भारतको विहार सरकार साख्यिकी एवं मूल्याङ्कन निर्देशनालय मधुवनी देउधामा मिति १२/०५/२००४ मा बनाएको जन्मदर्ता प्रमाणपत्रमा पीडित सिराहा क को जन्म मिति ०५/०५/१९९७ उल्लेख भएअनुसार पीडितको उमेर १८ वर्ष देखिन्छ । पीडित अध्ययनरत स्कूलमा भर्ना हुँदा उल्लेख भएको उमेरलाई पुष्टि गर्ने कागजात साथै पीडित हाल बसोबास गरेको स्थानमा भारतबाट कहिले आएको हो भन्ने प्रमाणसमेत पेस हुन सकेको छैन । यस अवस्थामा पीडित जाहेरवालाले अदालतमा म १८ वर्षकी हुँ भनी गरेको बकपत्र र पीडितको जन्मस्थान रहेको जिल्लाबाट जारी भएको जन्म प्रमाण पत्रबाट पीडित नाबालक नभई १८ वर्ष उमेर पुगेको साबालिक भन्ने देखिने ।

सुरू सिराहा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३/०७/०२ को फैसला उल्टी भई प्रतिवादी जितेन्द्रकुमार दासले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने गरी उच्च अदालत जनकपुर, राजविराज इजलासबाट मिति २०७४/०९/१९ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत :- ऋतु राई

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७८ साल पुस ९ गते रोज ६ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७८-WH-०१२०, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, सुरज भुषाल वि. काठमाडौं जिल्ला अदालतसमेत*

निवेदक ललितपुर जिल्ला अदालतमा चलेका मुद्दाहरूमा मिति २०७६/४/४ मा पक्राउ परी निज उक्त मुद्दाहरूमा थुनामा नै रहेको अवस्थामा काठमाडौं जिल्ला अदालतमा समेत निजउपर दुई वटा मुद्दाहरू परी सोमा माग भएको धरौटी रकम बुझाउन नसकेकोले स्वाभाविक रूपमा सोही थुनालाई कायम राखी काठमाडौं जिल्ला अदालतमा पनि मुद्दा पुर्पक्ष भएको पाइएको छ । ललितपुर जिल्ला अदालतमा चलेका दुवै मुद्दाहरूमा निजले सफाइ पाउने ठहरी मिति २०७७/११/१८ मा फैसला भएपछि निजले थुनामा बसेको अवधि काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट ०७६-C१-०९५६ को मुद्दामा मिति २०७७/११/४ मा भएको ६ महिना कैद र रु. २५,०००/- जरिवानाको सजायबापत कट्टा गर्नुपर्ने हुँदा सो कट्टा भइसक्दा पनि निज काठमाडौं जिल्ला अदालतमा नै चलेको अर्को ०७६-C१-१०१८ को मुद्दा विचाराधीन अवस्थामा नै रहेकोले थुनामा नै रहिआएको देखियो । यसरी निज निरन्तर थुनामा नै रहेको अवस्थामा निजलाई २ वर्ष कैद र रु. २०,०००/- जरिवाना हुने गरी ०७६-C१-१०१८ को मुद्दामा मिति २०७८/६/१९ मा फैसला भएकोमा सो अनुसारको कैदी पुर्जी जारी गर्दा निज प्रतिवादी मिति २०७६/९/२४ मा हाजिर भई २०७६/९/२५ गतेको आदेशले हालसम्म पुर्पक्षको लागि थुनामा बसेको भनी उक्त मिति २०७६/९/२४ लाई थुनामा रहेको मिति कायम गरी निजलाई भएको कैदको हिसाब गरी कैदमा राख्न भनी उल्लेख भएको मिल्ने देखिएन । निज मिति २०७६/४/४ देखि नै निरन्तर थुनामा रहेकोले सोही मितिबाट थुनामा रहेको मिति कायम गरी फरक फरक मुद्दामा भएको सजायको कार्यान्वयन कसरी गर्ने भन्ने कानूनी व्यवस्थाका आधारमा हिसाब गर्नुपर्ने ।

निवेदक सुरज भुषाल थुनामा नै रहेको अवस्थामा ०७६-C१-०९५६ को मुद्दामा मिति २०७७/११/४ मा ६ महिना कैद र रु. २५,०००/- जरिवानाको सजायसमेत हुने गरी काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट फैसला भएकोमा निजलाई भएको उक्त ६ महिनाको कैद मिति २०७६/१०/३ मा पूरा भई भएको जरिवाना बुझाएमा निज मिति २०७६/१०/४ मा कैदबाट मुक्त हुनेमा अर्को मुद्दा चलिरहेकोले निज

कैद मुक्त भएको देखिएन । मिति २०७८/६/१९ मा अर्को मुद्दामा निजलाई २ वर्ष कैद र रु. २०,०००/- जरिवाना हुने गरी फैसला भएकोले कैदको हकमा सो फैसला अनुसारको कैद अघिको ६ महिनाको कैदभन्दा बढी भएकोले सो बढी भएको १ वर्ष ६ महिनाको कैद सजाय मात्र कार्यान्वयन गर्नुपर्ने देखियो । जरिवानाको हकमा भने त्यस्तो कानूनी व्यवस्था नभएकोले दुवै फैसला अनुसारको हुन आउने जम्मा जरिवाना रकम असुलउपर गर्नुपर्ने नै हुन आयो अर्थात् उक्त दुवै मुद्दाहरूमा निवेदकबाट निज थुनामा बसेको मिति २०७६/४/४ बाट हिसाब गरी जम्मा २ बर्षको कैदको सजाय र दुवै मुद्दा गरी जम्मा रु. ४५,०००/- जरिवाना असुलउपर गर्नुपर्ने हुन आयो । यस अनुसार मिति २०७६/४/४ बाट निजको २ वर्ष कैदको अवधि मिति २०७८/४/३ मा भुक्तान भइसक्ने र निजले निजबाट असुलउपर हुनुपर्ने जम्मा जरिवाना रु. ४५,०००/ १ दिन कैद बसेबापत रु. ३००/ जरिवानाबापतको रकम कट्टी हुने कानूनी व्यवस्था भएकोले ५ महिना कैदमा बसेको अवस्थामा उक्त जरिवाना असुलउपर हुने हुँदा निजको मिति २०७८/९/३ सम्मको कैदले मात्र पनि सो असुलउपर भइसकेको पाइएको छ । यसर्थ निजलाई भएको कैद जरिवानाको रकम उल्लिखित कानूनी व्यवस्था अनुसार असुलउपर भइसकेको देखिएकोले निजलाई थप थुना वा कैदमा राखी राख्नुपर्ने देखिएन । निवेदन माग अनुसार निवेदकलाई कैदबाट छोड्नुपर्ने ।

निवेदक सुरज भुषाल मिति २०७६/४/४ बाट निरन्तर रूपमा थुनामा नै रहेको अवस्थामा काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७७/११/४ मा ०७६-C१-०९५६ को चोरी मुद्दामा ६ महिना कैद र रु. २५,०००/- जरिवानासमेत हुने ठहरी र मिति २०७८/६/१९ मा ०७६-C१-१०१८ को चोरी मुद्दामा २ वर्ष कैद र रु. २०,०००/ जरिवानासमेत हुने गरी फैसला भएको हुँदा फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ३६ अनुसार निजबाट जम्मा २ वर्षको कैद र दुवै मुद्दा गरी जम्मा रु. ४५,०००/- जरिवाना मात्र असुलउपर गर्नुपर्ने भएको र सो निज थुनामा परेको मिति २०७६/४/४ देखि हालसम्म निरन्तर थुनामा नै रहेबाट असुलउपर भइसकेको हुँदा निजलाई थप थुनामा राख्नु नपर्ने भएकोले निजलाई कैदबाट मुक्त गरिदिनु भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने ठहर्छ । आदेशानुसार आजै निवेदक सुरज भुषाललाई कैद मुक्त गरिदिनु भनी आदेश भएको मिति २०७८/१०/१० मा संक्षिप्त आदेश तयार गरी सो आदेशको प्रतिलिपिसहित च.नं. २०४४८ मिति २०७८/१०/१० मा पत्राचार गरिसकेको देखिएकोले सो सम्बन्धमा अब केही गरिरहनु नपर्ने ।

इजलास अधिकृत : यदुराज शर्मा

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७८ साल माघ १० गते रोज २ शुभम् ।

## ६

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७३-CI-०८९२ (र.नं. ०१-०७३-०४८०५), निर्णय दर्ता बदर दर्ता, किरण लामा वि. मालपोत कार्यालय, रामेछाप, मन्थली*

वादीले आफ्नो नाउँमा छुट जग्गा दर्ता गरिपाउँ भनी निवेदन दिएपछि वादी पक्षले दिएका सम्पूर्ण प्रमाणको मूल्याङ्कन र विश्लेषण गरी निर्णय गर्नुपर्ने हुन्छ । फिल्डबुकमा सरकारी भनी लेखिँदैमा सो नै अन्तिम प्रमाण हुन सक्दैन् । अन्य प्रमाणबाट व्यक्तिको नाँउमा जग्गाको हक पुग्न सक्ने अवस्था देखिन्छ भने ती सबै प्रमाणको आधारमा निर्णय गर्नुपर्ने हुन्छ । व्यक्तिको नाउँमा दर्ता हुने जग्गा हो वा सरकारी जग्गा हो भन्ने सम्बन्धमा प्रमाण बुझी सो प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी निर्णय गर्ने अधिकार मालपोत कार्यालयलाई कानूनले दिएको छैन । आफूलाई अधिकार नै नभएको क्षेत्राधिकार मालपोत कार्यालयले ग्रहण गरी निर्णय गरेको देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा हक बेहकमा सम्बन्धित जिल्ला अदालतमा उजुर गर्न जानु भनी मालपोत कार्यालयबाट सुनाउनु पर्नेमा सो

भएको नपाइने ।

हक बेहक सम्बन्धमा प्रश्न उठेपछि त्यसको निराकरण जिल्ला अदालतबाट हुनुपर्नेमा सो भएको देखिएन । हक बेहकको प्रश्न सन्निहित भएको मुद्दामा सुरूमा जिल्ला अदालतबाट मुद्दा हेर्ने र त्यसउपर चित्त नबुझे पुनरावेदन तहमा पुनरावेदन गर्न जाने हो । जिल्ला अदालतबाट हक बेहकको प्रश्नमा आफ्नो क्षेत्राधिकार ग्रहण गरी निर्णय गर्न सक्नेमा अप्रसङ्गिक पुनरावेदन अदालतमा पुनरावेदन गर्न जानुपर्ने भनी फिराद खारेज गर्ने र त्यसैलाई पुनरावेदन अदालतले सदर गरेको देखिने ।

छुट जग्गा दर्ता गरिपाउँ भनी दाबी गरिएको जिल्ला रामेछाप, साबिक चुचुरे गा.वि.स. वडा नं.५(क) कि.नं. २ को जग्गा सरकारी हो वा पुनरावेदक वादीहरूको हक पुग्ने जग्गा हो ? भन्ने विषयमा हक बेहकको प्रश्न निरूपण गर्नुपर्ने देखिएकोले मालपोत कार्यालय रामेछापले मिति २०७१।०९।०७ मा गरेको निर्णय र रामेछाप जिल्ला अदालतले क्षेत्राधिकारको अभावमा दाबी बादी नपुग्ने भनी मिति २०७१।१२।११ मा गरेको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत जनकपुरबाट मिति २०७३।०१।२२ मा भएको फैसलासमेत त्रुटिपूर्ण देखिँदा बदर गरिदिएको छ । अब वादी पक्षले पेस गरेका सम्पूर्ण प्रमाण, सो जग्गाको दर्ता स्रेस्तालगायतका प्रमाण, विवादित विषयमा निर्णय गर्न आवश्यक भौतिक स्थिति र अन्य प्रमाणसमेत अरू जे जो बुझ्नुपर्छ बुझी मिसिल प्राप्त भएका मितिले ६(छ) महिनाभित्र निर्णय गर्नु भनी तारेखमा रहेका पक्षलाई तारेख तोकी मिसिल सुरू रामेछाप जिल्ला अदालतमा पठाइदिनू ।

इजलास अधिकृत : प्रकाश सुवेदी

इति संवत् २०७८ साल माघ ४ गते रोज ३ शुभम् ।

७

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७१-CI-०३१८, ०७१-CI-०८२२, जायजात तायदात तथा डाँक लिलाम सकार मुचुल्का बदर, तामेली पर्चा बदर, दर्ता बदर दर्ता, हरेरामप्रसाद साह तेलीसमेत वि. जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत, जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत वि. हरेरामप्रसाद साह तेलीसमेत*

प्रतिवादी नेसार अहमद अन्सारी ऋणी र हरेरामप्रसाद साह तेली साहु भई निजहरूबिच मिति २०६१/१२/१७ मा रु.२,००,०००/- को कपाली तमसुक तयार गरी सोको आधारमा दायर भएको लेनदेन मुद्दा फैसला भई सो फैसलाबमोजिम प्रतिवादी नेसार अहमद अन्सारीबाट जम्मा बिगो रु.३,३९,२९४/३८ असुल गरिपाउँ भन्दै वादी जाजुल मियाँको नाममा रहेको जग्गाहरूसमेत उल्लेख गरी हरेरामप्रसाद साह तेलीले दिएको दरखास्तबमोजिम पर्सा जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादी नेसार अहमद अन्सारीका नाउँमा म्यादभित्र बिगो दाखिला गर्नु भनी म्याद जारी गरी म्यादभित्र बिगो दाखिला नभएपश्चात् प्रतिवादीका बुबा जाजुल मियाँ अन्सारीका नाउँ दर्ता रहेको पर्सा जिल्ला, वगवन्ना गा.वि.स. वडा नं. ९ को कि.नं. ६८५ को क्षेत्रफल १-४-० जग्गा प्रतिकट्ठा रु.१८,०००/- र ऐ. ऐ. कि.नं. ३४ को क्षेत्रफल ०-०-१८ जग्गा प्रतिकट्ठा रु.१५,०००/- जाने जग्गा हो भनी मिति २०६८/०२/२७ मा जायजात तायदात मुचुल्का भएको देखिन्छ । सो मुचुल्काबमोजिम कि.नं. ६८५ को ज.वि. १-४-० जग्गामध्ये दक्षिणतर्फ ज.वि. ०-१८-१० जग्गा रु.३,३९,२९४/३८ मा लिलाम सकार गर्न मन्जुर छु भनी मिति २०६८/०२/२७ गते हरेरामप्रसाद साह तेलीको हकमा शम्भुप्रसाद चौरसियाले डाँक लिलाम सकार गरेपश्चात् उक्त कि.नं. ६८५ को ज.वि. १-४-० जग्गामध्ये दक्षिणतर्फ कित्ता काट भई कायमी कि.नं. ७८० ज.वि. ०-१८-१० जग्गा हरेरामप्रसाद साह तेलीले आफ्नो नाममा दर्ता गराई मिति २०६८/०९/१२ मा र.नं. ४५०९(क) बाट शम्भुप्रसाद चौरसियालाई बिक्री गरेको देखिने ।

प्रतिवादी नेसार अहमद अन्सारीले घर व्यवहारको लागि लिएको कर्जाका सम्बन्धमा घरको

मुख्य व्यक्ति बाबु जाजुल मियाँलाई जानकारी दिएको वा निजको लिखित मन्जुरी लिएर कर्जा लिएको हो भन्ने कुराको प्रमाण देखिएन । घर व्यवहार चलाउन भनी अख्तियार प्राप्त नगरेका प्रतिवादी नेसार अहमद अन्सारीले व्यक्तिगत रूपमा लिएको कर्जा वादी जाजुल मियाँका नाउँमा रहेको सम्पत्ति लिलाम भई ऋण असुलीबापत प्रतिवादी हरेरामप्रसाद साह तेलीले जग्गा प्राप्त गरेको देखिन्छ । घरको मुख्य व्यक्ति/जग्गा दर्तावाला जाजुल मियाँको मन्जुरीविना प्रतिवादी नेसार अहमद अन्सारीले लिएको ऋणमा बाबुको नाउँको सम्पत्तिबाट भरिभराउ गरिएको कार्य उक्त कानून व्यवस्थाअनुरूप भएको मान्न नसकिने ।

प्रतिवादी हरेरामप्रसाद साह तेलीले वादी जाजुल मियाँका नाउँ दर्ता रहेको सम्पत्ति देखाई बिगो असुल गरिपाउँ भनी दरखास्त दिएको देखिन्छ । जिल्ला अदालतबाट जग्गा दर्तावाला जाजुल मियाँ साथै सगोलमा रहेका अन्य अंशियारहरूका नाउँमा जारी म्याद सूचना रीतपूर्वकको तामेल नभएको र मिति २०६८/०२/२७ मा भएको जायजात तायदात मुचुल्का र मिति २०६८/०७/२७ मा डाँक लिलाम सकार मुचुल्का हुँदासमेत सो सम्पत्तिका दर्तावालाहरूलाई थाहा जानकारी नै नदिई फैसला कार्यान्वयन भएको देखिने ।

कि.नं. ७८० ज.वि. ०-१८-१० प्रतिवादी नेसार अहमद अन्सारीले मात्र आफूखुस गर्न पाउने सम्पत्ति हो कि होइन भन्ने सम्बन्धमा हेर्नुपर्ने हुन आयो । वादी जाजुल मियाँ नाउँ दर्ता रहेको कि.नं. ६८५ को ज.वि. १-४-० जग्गा लिलामी प्रक्रिया हुँदा सो कि.नं.को दक्षिणतर्फ कित्ताकाट भई कायमी कि.नं. ७८० जग्गा प्रतिवादी हरेरामप्रसाद साहले लिलाम सकार गरी आफ्नो नाउँमा दर्ता गरेको देखिन्छ । उक्त जग्गा वादी जाजुल मियाँको नाउँमा दर्ता रहेको देखिँदा प्रतिवादी नेसार अहमद अन्सारीको मात्र हक पुग्ने अथवा स्वआर्जनको आफूखुस गर्न पाउने सम्पत्ति नभई सगोलका अन्य अंशियारहरूसमेतको अंश हक पुग्ने सम्पत्ति देखिन्छ । जग्गा दर्तावाला जाजुल मियाँ र अन्य अंशियारहरूसमेतको मन्जुरीबेगर सगोलको सम्पत्ति लिलामी भई बिगो असुलीउपर सुरू जिल्ला अदालतबाट भएको जायजात तायदात मुचुल्कालगायतका कार्यहरूले कानूनी मान्यता प्राप्त गर्न सक्ने अवस्था देखिँदैन । सगोलको सम्पत्तिबाट बिगो भरिभराउ गर्दा हक पुग्ने अंशियारहरूको अनिवार्य मन्जुरी लिनुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीहरू एक आपसमा मिली प्रतिवादी नेसार अहमद अन्सारीले मात्र आफूखुस गर्न नपाउने सगोलको सम्पत्ति लिलामीको प्रक्रियामा यी जग्गा दर्तावाला व्यक्ति जाजुल मियाँ र अन्य अंशियारहरूसमेतको मन्जुरी बेगर सगोलको सम्पत्तिबाट बिगो भरिभराउ भएको लिलामी मुचुल्कालगायतका कार्यहरू कानूनी व्यवस्थाको प्रतिकूल देखिने ।

फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा तहसिलदार कर्मचारीले गरेको काम कारबाहीकाउपर चित्त नबुझ्ने पक्षले मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको ६१ नं. बमोजिम फिराद दायर हुनपर्ने सोबमोजिम नगरिएको भनी ने.का.प.२०५६ पृष्ठ ५६८ निर्णय नम्बर ६७६२ मा भएको प्रतिपादीत सिद्धान्तसमेतको आधारमा फिराद खारेज गरिपाउँ भनी प्रतिवादी हरेरामप्रसाद साह तेलीको यस अदालतमा दायर भएको पुनरावेदनपत्रका सन्दर्भमा प्रस्तुत मुद्दाका वादीहरू लेनदेन मुद्दा र बिगो असुलीको कार्यान्वयनको प्रक्रियामा संलग्नता रहे भएको भए मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको ६१ नं. बमोजिमको मार्ग आकर्षित हुने थियो । तर जो व्यक्तिहरू उक्त मुद्दासँग सम्बन्धित नै छैनन् साथै वादीहरू जाजुल मियाँ, सखिना अन्सारी, इस्तखार अन्सारी र इन्तहाज अन्सारीसमेतको आफ्नो हक जाने गरी भएको लिलामीसम्बन्धीका कामकारबाहीहरूमा कुनै संलग्नता रहे भएको नदेखिएको र निजहरूलाई सुनुवाइको मौकासमेत नदिइएको यस अवस्थामा मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको ६१ नं. को सम्बन्धमा प्रतिपादित उक्त नजिर प्रस्तुत मुद्दामा आकर्षित हुने

नदेखिने।

वादी दाबीबमोजिम लिलाम बदर नहुने गरी सुरू पर्सा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०/०२/०२ मा भएको फैसला केही उल्टी भई वादीहरूको हक जति ५ भागको ४ भाग लिलामसमेत बदर हुने ठहर्छ भन्ने पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०७१/३/३१ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : ऋतु राई

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७८ साल असोज १२ गते रोज ३ शुभम्।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ :

- ०७१-CI-०३१९, ०७१-CI-०८२१, लिखत दर्ता बदर, हरेरामप्रसाद साह तेलीसमेत वि. जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत, जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत वि. हरेरामप्रसाद साह तेलीसमेत
- ०७१-CI-०३२०, ०७१-CI-०८२०, लिखत दर्ता बदर, राजाराम प्रसाद चौरासियासमेत वि. जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत, जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत वि. राजारामप्रसाद चौरासियासमेत
- ०७१-CI-०३२१, ०७१-CI-०८१९, लिखत दर्ता बदर दर्ता, राजाराम प्रसाद चौरसियासमेत वि. जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत वि. हरेरामप्रसाद साह तेलीसमेत
- ०७३-CR-१०८२, जालसाजी, जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत वि. हरेरामप्रसाद साह तेलीसमेत
- ०७३-CR-१०८३, जालसाजी, जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत वि. राजारामप्रसाद साह तेलीसमेत
- ०७३-CR-१०८४, जालसाजी, जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत, वि. राजारामप्रसाद चौरासियासमेत
- ०७३-CR-१०८५, जालसाजी, जाजुल मियाँ अन्सारीसमेत वि. हरेरामप्रसाद साह तेलीसमेत

८

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७८-WH-०००७, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, प्रतिक्षा सुवेदी वि. मकवानपुर जिल्ला अदालत, मकवानपुरसमेत*

निवेदक प्रतिवादी सिताराम थिङ्गसमेत भई जाहेरवालासमेतलाई २०४६ साल भाद्र महिनामा भारतको बम्बई लगी भा.रू.५०,०००।– को दरले बिक्री गरेको र सो ठाउँबाट मिति २०६८।१२।२२ गते नेपाली मूलको जस्तो देखिने महिलाको सहयोगमा नेपाल फर्की आउन सफल भएको हुँदा यी प्रतिवादी सिताराम थिङ्गसमेतलाई कानूनबमोजिम कारबाही गरिपाउँ भन्नेसमेतको परिवर्तित नाम विन्दियाको जाहेरी दरखास्तबाट प्रस्तुत मुद्दा उठान भएको देखिन्छ । यसरी प्रतिवादी सिताराम थिङ्गसमेतले जाहेरवालासमेतलाई भारतमा बिक्री गरेको हुँदा मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ३, ४(१) र ४ (२)(क) बमोजिमको कसुर गरेकाले निजहरूलाई सोही ऐनको दफा १५(१)(क) बमोजिम सजाय गरी दफा १७ बमोजिम प्रतिवादीबाट पीडितलाई क्षतिपूर्तिसमेत भराइपाउँ भन्नेसमेत बेहोराको अभियोगपत्र दायर भएको देखिन्छ । सुरू मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।६।२३ मा यी निवेदक प्रतिवादी सिताराम थिङसमेतलाई मानब बेचबिखन तथा ओसारपसार मुद्दामा अभियोग दाबीबमोजिम मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार ऐन, २०६४ को दफा ३, ४(१) र ४(२) को कसुर गरेकोमा सोही ऐनको दफा १५(१) को देहाय (क) बमोजिम २० (बिस) वर्ष कैद र रू.२,००,०००।– (अक्षरेपि दुई लाख) जरिवाना हुने र प्रतिवादीहरूलाई भएको जरिवानाको ५० प्रतिशतको दरले हुन आउने रकम

रू.३,००,०००।– (अक्षरेपि तीन लाख) पीडितलाई तत्कालै राज्यको तर्फबाट क्षतिपूर्ति भराइदिने गरी फैसला भएको देखिन्छ । यी निवेदक प्रतिवादीले आरोपित कसुर भएको समयमा आफू १५ वर्षको भएको भन्नेसमेत जिकिर लिई साबिक पुनरावेदन अदालत हेटौंडामा सुरू फैसलाउपर पुनरावेदन गरेकोमा उक्त अदालतले मिति २०७१।१।१६ मा सुरू अदालतबाट भएको फैसलालाई सदर गरेको देखियो । यसरी पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको फैसलाउपर पनि चित्त नबुझाई प्रतिवादीले यस अदालतमा पुनरावेदन गरेकोमा पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी यस अदालतबाट मिति २०७३।१२।२७ मा फैसला भएको देखिन्छ । मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।२।६ मा यी प्रतिवादी सिताराम थिङ्गलाई फैसलाबमोजिम निज पक्राउ परेको मिति २०६९।१।१३ देखि कट्टा हुने गरी कैदको हकमा जरिवाना बुझाए मिति २०८९।१।१२ सम्म थुनामा बसी मिति २०८९।१।१३ मा कैद थुनाबाट छुटी जाने र जरिवाना नबुझाए थप ४ वर्ष कैद हुने भई मिति २०९३।१।१३ मा थुनाबाट छुटी जाने भनी कैदी पुर्जी दिई थुनामा राखिएको देखिने।

प्रतिवादी सिताराम थिङ्गलाई मानव ओसारपसार तथा बेचबिखन मुद्दामा यस अदालतसमेतबाट मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार ऐन, २०६४ को दफा ३, ४(१) र ४(२) को कसुर गरेकोमा सोही ऐनको दफा १५(१) को देहाय (क) बमोजिम २० (बिस) वर्ष कैद र रू.२,००,०००।– (अक्षरेपि दुई लाख) जरिवाना हुने गरी फैसला भई अन्तिम भएको र सोबमोजिम अदालतले दिएको कैदी पुर्जीका आधारमा यी निवेदक प्रतिवादीलाई थुनामा राखिएको देखिँदा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी नहुने भई रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्छ । तथापि यी प्रतिवादीले वारदातको समयमा निज बालबालिका भएको भनी दाबी लिएको र निजले पेस गरेको नागरिकताको प्रमाणपत्र निजउपर अभियोग लाग्नुभन्दा अगावैको देखिएको हुँदा सो प्रमाण ग्रहणयोग्य रहेकाले साबिकको बालबालिका ऐन, २०४८ को दफा ११ (३) बमोजिम सुविधा पाउने भई निजलाई १० (दश) वर्ष कैद र रू.१,००,०००।– जरिवाना हुने ठहर भएकाले यसअगाडि जारी भएको कैदी पुर्जी संशोधन गरिदिनु भनी मकवानपुर जिल्ला अदालतको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत : शिवबहादुर थापा

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७८ साल माघ १६ गते रोज १ शुभम्।

## इजलास नं. ३

### ९

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी,** *०६८-CR-११४३, आयकर (आ.व.२०५७/०५८), सुरेश प्रधान वि. भृकुटी पल्प एण्ड पेपर नेपाल लिमिटेड, गैँडाकोट, नवलपरासी*

अफिस उपकरण, फर्निचर र सवारी साधन पि.एम.१ र पि.एम २ दुवैतर्फ समान रूपमा प्रयोग भएको हुँदा सोमा दाबी भएको ह्रास खर्च रू.१२,०९,४८२।- मध्ये बिक्री अनुपातको हिसाबबाट पि.एम.२ तर्फ कर छुटको कारोबारतर्फ भएको ह्रास खर्च रू.८,६१,१५२।- लाई आयकर ऐन, २०३१ को दफा ६क बमोजिम खर्च छुट नदिने गरी ठुला करदाता कार्यालयबाट कर निर्धारणको निर्णय भएको देखिन्छ। सोउपरको करदाताको राजस्व न्यायाधिकरणमा दिएको पुनरावेदनमा अफिस उपकरण, फर्निचर र सवारी साधन पि.एम.१ को स्वामित्वमा रहेका र विगत आ.व. देखि नै पि.एम १ तर्फ खर्च कट्टी दाबी भई मिन्हा पाउँदै आएको हो । ह्रासकट्टी खर्च सम्पत्तिको प्रयोग भएबापत खर्च कट्टी पाउने हो, बिक्रीका आधारमा हुने कानूनी व्यवस्था नभएकोले आयकर ऐन, २०३१ को दफा १२(१)(ञ) बमोजिम ह्रासकट्टी खर्च खुद आयमा समावेश गर्न नमिल्ने भनी यी करदाताले जिकिर लिएको

देखियो । यससम्बन्धी कानूनी व्यवस्था हेर्दा आयकर ऐन, २०३१ को दफा १२(१) मा उद्योग,व्यापार, पेसा, व्यवसायको खुद आय निर्धारण गर्दा त्यस्तो स्रोतबाट आय आर्जन वा प्राप्त गर्ने सम्बन्धमा भएको देहायबमोजिमका वास्तविक खर्चहरू कट्टा गरिने छ भन्नेर सोको देहाय खण्डको(ञ) मा "आय आर्जन वा प्राप्त गर्ने काममा प्रयोग भएको आफ्नो स्वामित्व भएका मेशिन तथा अन्य सम्पत्तिहरूको किसिम र टिकाउको आधारमा तोकिएबमोजिमको दरमा नबढाई टुटफुट (डिप्रिसियसन) रकम"कट्टा गरिने व्यवस्था गरेको देखिन्छ । सो कानूनी व्यवस्था अनुसार ह्रासकट्टी माग गरिएका सम्पत्ति कम्पनीको स्वामित्वमा रही आय आर्जन वा प्राप्त गर्ने काममा प्रयोग भएको आधारमा ह्रासकट्टी दिनुपर्ने देखिएको स्थितिमा पि.एम.१को स्वामित्वमा रहेका यी सम्पत्तिहरू पि.एम.२ को काममा समेत प्रयोग भएको भन्ने कुरामा विवाद नरहेकाले पि.एम.१को स्वामित्वमा रहे पनि पि.एम.२ को कार्यमा प्रयोग भई कम्पनीको आय आर्जन गर्ने कार्यमा प्रयोग भएको भन्ने देखिएको स्थितिमा पुँजीगत सम्पत्तिको प्रयोग दुवैतिर भएपश्चात् सोको प्रयोगबाट भएको उत्पादन र बिक्री अनुपातमा ह्रास खर्चकट्टी गर्न दिनु नै न्यायोचित र मनासिब हुन्छ । आयकर ऐन, २०३१ को दफा ६क मा यो ऐन वा अन्य प्रचलित नेपाल कानूनबमोजिम कर नलाग्ने आय आर्जन वा प्राप्त गर्ने सम्बन्धमा भएका खर्चहरू कर निर्धारणको प्रयोजनका निम्ति कट्टा गरिने छैन भन्ने व्यवस्था गरी प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशमा "तर कर लाग्ने तथा नलाग्ने आयमा भएको खर्च छुट्याउन वा छुट्टिन नसक्ने भएमा कर अधिकृतले दामासाहीले हिसाब गरी कर नलाग्ने आयमा भएको खर्च मिन्हा दिने छैन" भन्ने स्पष्ट कानूनी व्यवस्था गरेको पाइन्छ । यसर्थ पि.एम.२ मा भएको बिक्री अनुपातका आधारमा ह्रास खर्च दाबी गर्नुपर्नेमा सो पनि पि.एम.१ मा दाबी गरेको देखिँदा यी करदाताले दाबी गरेकोमध्ये रू.८,६१,१५२।- लाई आयकर ऐन, २०३१ को दफा ६क बमोजिम खर्च छुट नदिने गरी ठुला करदाता कार्यालयबाट भएको कर निर्धारणको निर्णयकानूनसम्मत भएको स्थितिमा राजस्वन्यायाधिकरणबाट उल्टी हुने ठहर्‍याई भएको फैसला मनासिब नदेखिने ।

निर्व्याजी रूपमा रु.३५,६९,४२४।- रकम गोल्छा अर्गनाइजेसनअन्तर्गतको नोभानिट नेपाललाई चलाउन दिई समयमा रकम असुल नगरी ब्याजको दायित्व बढाएको देखिँदा उक्त निर्व्याजी डेविट ब्यालेन्समा यस आ.व.मा बेहोरेको ब्याज खर्चको ९ प्रतिशतका दरले हुने रु.३,२१,२४८।- लाई ब्याज आम्दानी मानी आयकर ऐन, २०३१ को दफा ७ बमोजिम खुद आयमा समावेश गर्ने भनी ठुला करदाता कार्यालयबाट कर निर्धारणको निर्णय भएको पाइयो । सो निर्णयउपरको पुनरावेदनमा यी करदाताले उक्त तिर्न बाँकी रकम कम्पनिको जग्गा बिक्रीबापतको रकम भएकाले ब्याज असुल नगरिएको हुँदा आय आर्जन नै नभएको रकमलाई आय मानी आयमा समावेश गरेको नमिलेको भनी जिकिर लिएको मा सोको प्रमाण पेस गर्न सकेको देखिँदैन । कम्पनीले लिएका सापटी रकमबापत तिरेको ब्याज खर्च कट्टी दाबी गर्नु स्वाभाविक भए पनि आफूले सापटी दिएको रकम लामो समयसम्म असुल गर्न कुनै प्रयास नगरी बस्ने र ब्याज पनि नलिने कार्यलाई जायज मान्न नसकिने देखिएको स्थितिमा कम्पनीले सापटी लिएका रकमको बैंकमा तिरेको ब्याजको अनुपातमा करदाताले उठाउन बाँकी रकमको हदसम्म ब्याज खर्च छुट नदिने गरी भएको ठुला करदाता कार्यालयको कर निर्धारण औचित्यपूर्ण नै रहेकोले अन्यथा भएको भनी मान्न सकिने देखिएन । यस सम्बन्धमा पुनरावेदक/वादी ठुला करदाता कार्यालय, हरिहरभवन, ललितपुरका तर्फबाट ऐ.का प्रमुख कर प्रशासक खुमराज पुञ्जाली विरुद्ध प्राइम इन्टरनेसनल प्रा.लि.को तर्फबाट अख्तियारप्राप्त प्रबन्धसञ्चालक मदनकृष्ण श्रेष्ठ भएको आयकर २०५७।०५८ मुद्दा (ने.का.प.२०६९, अङ्क ११, नि.नं.८९१४) मा "तिर्नुपर्ने ब्याज तिरेको भनी

आयबाट कट्टा गर्ने तर लिनुपर्ने रकम लामो समयसम्म असुल नगरी प्रतिफल प्राप्त नगर्ने कार्यबाट आयकर ऐन, २०३१ को दफा १२(ग) को कानूनी व्यवस्थाको दुरूपयोग गरेको देखिनुका साथै कर दायित्व कम गर्ने वा कर दायित्व छल्ने संयन्त्रको रूपमा सो दफाको व्यवस्था प्रयोग गरेको देखिने भनी यस अदालतबाट सिद्धान्तसमेत प्रतिपादन भएकाले ब्याज खर्च छुट नदिने गरी कार्यालयबाट भएको कर निर्धारणको निर्णय नमिलेको भनी राजस्व न्यायाधिकरणबाट भएको फैसला मनासिब मान्न नमिल्ने।

यस आ.व.मा पि.एम.१ तर्फको कुल आय रु.४,४३,६०,९७५।– भई औद्योगिक व्यवसाय ऐन, २०४९ बमोजिम छुट पाउने विज्ञापन तथा व्यापार प्रवर्द्धन खर्च रु.२२,१८,०४९।- रहेकोमा बढी दाबी लिएको व्यापार प्रवर्द्धन खर्च रु.५९,३०,७४१।३० करदाताको आयमा समावेश गर्ने गरी ठुला करदाता कार्यालयबाट कर निर्धारण भएको देखिन्छ । करदाताले आयकर ऐन, २०३१ को दफा १२(१)(ज) ले बिक्री कारोबारमा दिएको डिस्काउन्ट कमिसन छुट पाउने गरी व्यवस्था भएको हुँदा खर्चकट्टी गर्न पाउने करदाताको हकलाई औद्योगिक व्यवसाय ऐन, २०४९ ले निषेध वा नियन्त्रण गरेको होइन भनी खर्च कट्टी पाउन जिकिर लिएको देखिन आयो । यस शीर्षकका खर्च कट्टी दिन मिल्ने वा नमिल्ने भन्ने सम्बन्धमा उक्त दुवै कानूनको अध्ययन गरी विवेचना गर्नुपर्ने देखियो । आयकर ऐन, २०३१ को दफा १२(१) मा उद्योग,व्यापार, पेसा, व्यवसायको खुद आय निर्धारण गर्दा त्यस्तो स्रोतबाट आय आर्जन वा प्राप्त गर्ने सम्बन्धमा भएको देहायबमोजिमका वास्तविक खर्चहरू कट्टा गरिने छ भन्ने र सोको देहाय खण्डको (ज) मा "डिस्काउन्ट कमिसन" कट्टा गरिने व्यवस्था गरेको देखिन्छ । औद्योगिक व्यवसाय ऐन, २०४९ को दफा १५ मा "उद्योगलाई दिइने सुविधा तथा सहुलियतसम्बन्धी व्यवस्था गरी आयकर, बिक्री कर, अन्तशुल्क भन्सारसम्बन्धी कानूनहरू एवम् अन्य प्रचलित कानूनमा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि उद्योगले देहायबमोजिमको सुविधा तथा सहुलियत पाउने छ" भनी सो दफाको देहाय (थ) मा "उत्पादित वस्तुको वितरण बढाउन वा सेवाको प्रवर्द्धन गर्न विज्ञापनको लागि भएको खर्च अतिथि सत्कारमा भएको खर्च र अन्य यस्तै खर्चबापत कुल आयको ५ प्रतिशत रकम खुद आय निर्धारण गर्दा कट्टा गर्न पाउने छ" भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ । आयकर ऐन आयकरका सम्बन्धमा विशेष कानून भए पनि औद्योगिक व्यवसाय ऐन, २०४९ को प्रस्तावना हेर्दा "औद्योगिक विकासका लागि बनेको ऐन" भन्ने देखिन्छ। यी शीर्षकका खर्चमा दुवै कानूनले खर्च कट्टी पाउने गरी व्यवस्था गरेको मा विवाद देखिँदैन । कुल आयमा कति र कुन हदसम्म खर्च कट्टी पाउने भन्ने मुख्य विवाद रहेकोमा ठुला करदाता कार्यालयले कर निर्धारण गर्दा उल्लेख गरेको औद्योगिक व्यवसाय ऐन, २०४९ बमोजिम वा करदाताले दाबी गरेको आयकर ऐन, २०३१ को व्यवस्था अनुसार हुनुपर्ने हो भनी हेरी टुङ्गोमा पुग्नुपर्ने देखियो । यी करदाता उद्योग भएको र उद्योगको सन्दर्भमा औद्योगिक व्यवसाय ऐन, २०४९ विशेष ऐन भएकोले सो ऐनमा नै आयकर एवम् अन्य प्रचलित कानूनमा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि उद्योगले देहायबमोजिमको सुविधा तथा सहुलियत पाउने भनी दफा १५ को देहाय (थ) मा "कुल आयको ५ प्रतिशत रकम खुद आयमा कट्टी गर्न पाउने" भन्ने उल्लेख भएकाले यस सन्दर्भमा आयकरको व्यवस्थासमेत औद्योगिक व्यवसाय ऐनले व्यवस्था गरेको सुविधा र सहुलियतको हदसम्म मात्र वाञ्छनीय हुने देखिन्छ । करदाताको कूल आय रु.४,४३,६०,९७५।– रहेको भन्ने तथ्यमा विवाद नदेखिएको स्थितिमा औद्योगिक विकासका लागि बनेको ऐनले नै कूल आयको ५% मात्र खर्च गर्न पाउने भनी स्पष्ट किटानी व्यवस्थाको प्रतिकूल हुने गरी असीमित रकम छुट दिनु उक्त कानूनी व्यवस्थाको मर्म र भावनाविपरीत हुने देखिन्छ। तसर्थ, ठुला करदाता कार्यालयले कुल आयको ५% भन्दा

बढी दाबी गरेको रु.५९,३०,७४१।३० खर्चकट्टी दिन नमिल्ने भनी गरेको कर निर्धारण आदेश उल्टी गर्ने गरी राजस्व न्यायाधिकरणबाट भएको फैसला मनासिब नदेखिने।

पुनरावेदक ठुला करदाता कार्यालयले उक्त कानूनी खर्च गत आ.व.को भएको र सो रकम कम्पनीको गत वर्षको नाफा नोक्सान हिसाबमा देखाइसकेकोले यस वर्षको आय आर्जनसँग सम्बन्धित नभएको हुँदा आयकर ऐन, २०३१ को दफा १२(झ) बमोजिम आयमा समावेश गर्नुपर्ने भनी जिकिर लिएको देखिन्छ। करदाताले जुन आ.व.मा प्राप्त बिल भरपाई अनुसार खर्च भएको छ सोही आ.व.को हिसाबमा खर्च लेखिएको वास्तविक खर्च भएकाले आयकर ऐन, २०३१ को दफा १२ बमोजिम मिन्हा हुनुपर्ने भनी राजस्व न्यायाधिकरणमा दिएको पुनरावेदनमा दाबी गरेको देखिन्छ। आयकर ऐन, २०३१ को दफा १२(२) मा कुनै आयवर्षको आय त्यसभन्दा पछिको आय वर्षमा मात्र प्राप्त भएको छ भने त्यस्तो आय प्राप्त गर्ने सम्बन्धमा भएको उपदफा (१) बमोजिमको वास्तविक खर्चहरू पनि यसरी प्राप्त भएको वर्षको खर्च मानी कट्टी गरी खुद आय निर्धारण गरिने छ भन्ने व्यवस्था भएको र आयकर ऐन, २०३१ को दफा १२ बमोजिम आय आर्जन वा प्राप्त गर्ने कामसँग सम्बन्ध भएका खर्चहरूलाई खुद आय निर्धारण गर्दा कट्टी गर्न पाइने व्यवस्था भएअनुसार जुन वर्षको उत्पादनको लागि भएको खर्च हो, सोही वर्षको आयमा मात्र कट्टी गर्न पाउने हो, अघिल्लो वर्ष नै खर्च भई लेखाङ्कनसमेत भएको देखिएको कानूनी खर्च पछिल्लो वर्षको आयमा खर्चकट्टी दाबी गर्न मिल्ने देखिँदैन। अघिल्लो आ.व.मा भएको कानूनी खर्चका असरबाट भएका आम्दानी तथा खर्चका विवरणहरू सोही आ.व.मै नाफा नोक्सान हिसाबमा देखाइसकेकोले उक्त खर्च यस आ.व.को आय आर्जनसँग सम्बन्धित हुने देखिँदैन। यसरी अघिल्लो आ.व. को खर्चलाई पछिल्लो आ.व.को आयमा खर्चकट्टी दाबी गरेकोलाई अमान्य गरी खुद आयमा समावेश गर्ने गरी ठुला करदाता कार्यालयबाट भएको कर निर्धारणको निर्णय मनासिब नै भएकोले उक्त शीर्षकको खर्चलाई अमान्य गरेको नमिलेको भनी राजस्व न्यायाधिकरणबाट भएको फैसला मिलेको नदेखिने।

विगत आ.व. मा बढी खर्च लेखिएका तर खर्च नभएका र सोधभर्ना प्राप्त भएका रकमसमेत रु.५,९४,६४४।- यस आ.व.को नाफा नोक्सानी हिसाबको आयतर्फ देखाइएको नपाइएकोले आयकर ऐन, २०३१ को दफा ७(ख) बमोजिम आयतर्फ समावेश हुनुपर्ने भन्ने पुनरावेदक ठुला करदाता कार्यालयको जिकिर रहेको पाइन्छ। यसभन्दा अघिल्ला वर्षहरूको खुद नोक्सानीलाई अमान्य गरी आयमा समावेश गर्ने गरी भएको कर निर्धारण आदेशउपरको मुद्दा पुनरावेदन तहमा विचाराधीन रहेको अवस्था छ। विगतमा लेखिएको बढी खर्चलाई समायोजन गरिएको तर यस आ.व. को नाफा नोक्सानी हिसाबमा समावेश गरेको छैन। विगत वर्षको खर्च यस वर्षमा आय आर्जन वा प्राप्त भएको अवस्थासमेत नरहेकोले खुद आयमा समावेश हुने रकम होइन भन्नेसमेत बेहोराको यी करदाताको पुनरावेदनमा राजस्व न्यायाधिकरणबाट नाफा नोक्सान हिसाबमा खर्चको रूपमा दाबी गरिएको उद्योगको वास्तविक खर्च हो भन्ने Sub-Ledger Detailed बाट पुष्टि हुन आएकोले त्यस्तो खर्चलाई अमान्य गरेको मिलेको देखिएन भनी फैसला भएको देखिन्छ। यसरी राजस्व न्यायाधिकरणबाट भएको फैसलामा उल्लेख भएको नाफा नोक्सान हिसाबमा खर्चको रूपमा दाबी गरिएको उद्योगको वास्तविक खर्च हो भन्ने Sub-Ledger Detailed बाट पुष्टि हुन आएको भन्ने विषयका सम्बन्धमा पुनरावेदक ठुला करदाता कार्यालयले अन्यथा हो भनी स-प्रमाण कुनै जिकिर लिन सकेको पनि देखिँदैन। सो रकम करदाताको नाफा नोक्सान हिसाबमा आयतर्फ समावेश नगरेको भनी जिकिर लिएकै आधारमा मात्र त्यस्तो खर्च अमान्य गरेको सुरू कर कार्यालयको निर्णय जायज मान्न

नसकिने भएकाले ठुला करदाता कार्यालयको निर्णय मिलेन भनी राजस्व न्यायाधिकरणबाट भएको फैसला मनासिब देखिँदा यस शीर्षकका सम्बन्धमा पुनरावेदक ठुला करदाता कार्यालयको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

सोधभर्ना खर्चको हदसम्म राजस्व न्यायाधिकरणको फैसला सदर हुने र सो रकमबाहेक ह्रास खर्च, ब्याज खर्च, विज्ञापन तथा व्यापार प्रवर्द्धन खर्च र कानूनी खर्च रकम सम्बन्धमा ठुला करदाता कार्यालयबाट भएको कर निर्धारणको निर्णय उल्टी हुने गरी राजस्व न्यायाधिकरणबाट भएको फैसला सो हदसम्म नमिलेको हुँदा उल्टी हुने ।

इजलास अधिकृत : सुसन दहाल
कम्प्युटर : चन्दनकुमार मण्डल
इति संवत् २०७७ चैत्र २२ गते रोज १ शुभम् ।
यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएको छ ।

- ०६८-CR-११४४, आयकर (आ.व.२०५८/०५९), सुरेश प्रधान वि. भृकुटी पल्प एन्ड पेपर नेपाल लिमिटेड, गैँडाकोट, नवलपरासी
- ०६८-RB-०१९९, आयकर (आ.व.२०६१/०६२), आन्नदराज ढकाल वि. भृकुटी पल्प एण्ड पेपर नेपाल लिमिटेड, गैँडाकोट, नवलपरासी
- ०६८-RB-०२००, आयकर (आ.व.२०६२/०६३), आन्नदराज ढकाल वि. भृकुटी पल्प एन्ड पेपर नेपाल लिमिटेड, गैँडाकोट, नवलपरासी

## इजलास नं. ४

### १०

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** *०७४-WO-०५०६, उत्प्रेषणसमेत, ओमकार चापागाईँ वि. ऋण असुली न्यायाधिकरण कमलपोखरी, काठमाडौंसमेत*

ऋण असुली न्यायाधिकरणको धितो मूल्याङ्कन समितिले मिति २०७३।०३।१४ मा प्रतिकठ्ठा रु.१५,००,०००।- मोल कायम गर्ने गरेको निर्णयसमेत बदरका लागि निवेदकले ऋण असुली न्यायाधिकरणमा निवेदन दिएकामा ऋण असुली न्यायाधिकरणले मिति २०७३।०५।२४ मा धितो मूल्याङ्कन समितिको मूल्याङ्कन सदर गरेको र सोउपर ऋण असुली पुनरावेदन न्यायाधिकरणमा निजले निवेदन दिएकामा मिति २०७४।०७।१६ मा सुरू आदेश नै सदर भएको देखियो । यसरी धितो मूल्याङ्कन समितिबाट भएको मूल्याङ्कनउपर परेको निवेदकको उजुरी ऋण असुली पुनरावेदन न्यायाधिकरणसमेतबाट अन्तिम टुङ्गो लागिसकेको देखिने ।

मालपोत कार्यालय मोरङ, विराटनगरले निवेदकको कि.नं. १४४१ समेतका सो स्थानका सडकसँग जोडिएका जग्गाको मूल्य प्रतिकठ्ठा रु.६,००,०००।- तोकेकोमा ऋण असुली अधिकृतले सम्बद्ध नियमावलीले तोकेबमोजिमका प्रतिनिधि रोहबरमा राखी, विशेषज्ञको राय तथा प्रचलित बजार मूल्यलाई समेत आधार लिई प्रतिकठ्ठा रु.१५,००,०००।- र घरसमेतको रु.७,८८,७१२।- मूल्याङ्कन गरेको देखिन्छ । मिति २०७४।१०।१७ को गोरखापत्रमा प्रकाशित सूचनामा घर, जग्गा, मेसिनरी, लिगापातसमेतको मिति २०७३।०३।१४ को मूल्याङ्कन मुचुल्का र मिति २०७३।०३।२६ को प्राविधिक मूल्याङ्कनको आधारमा एकमुष्ठ मूल्य रु.१,५७,८८,७१२।- उल्लेख भएको पाइयो । यसरी कानूनबमोजिम भए गरेका कार्यबाट निवेदकको संवैधानिक एवं कानूनी हकमा आघात पुगेको भन्ने जिकिर मनासिब नदेखिने ।

प्राविधिकबाट भएको मिति २०७३।०३।१२ को मोल कायम मुचुल्का, ऋण असुली न्यायाधिकरणको

मिति २०७४।०३।१४ को मोल कायम निर्णय एवं प्राविधिकबाट पेस भएको मिति २०७३।०३।२६ को प्रतिवेदनसमेत बेरितको हुँदा बदर गरिपाउँ भन्ने निवेदन दाबी मनासिब नदेखिएकोले रिट जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्छ । यस अदालतबाट विपक्षीहरूको नाममा जारी भएको मिति २०७४।१०।२४ को अल्पकालीन अन्तरिम आदेशलाई निरन्तरता दिने गरी भएको मिति २०७४।११।२२ को आदेशसमेत यथास्थितिमा रहन नसक्ने हुँदा उक्त आदेशसमेत स्वतः निस्क्रिय हुने ।

इजलास अधिकृत - नारायण पौडेल

कम्प्युटर : राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०८० साल जेठ ३० गते रोज ३ शुभम् ।

**११**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७७-RB-०२५८, बैंकिङ कसुर, गीता कार्की वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादी गिता कार्कीको पुनरावेदन जिकिर हेर्दा, जाहेरवालीको पतिको नाउँमा रहेको जग्गा मेरो साथीले खरिद गर्ने क्रममा ग्यारेन्टीको लागि मात्र आफ्नो खातामा रकम नभएको कुरासमेत जानकारी दिई चेक दिएको हुँदा जाहेरवालीसँग आफ्नो कुनै कारोबार नभएकोले उच्च अदालत पाटनको फैसला उल्टी गरी अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउँ भन्ने मुख्य जिकिर रहेको देखिन्छ । पुनरावेदक प्रतिवादीले जाहेरवालीलाई आफ्नो नाउँको खाताको चेकमा रु.६,००,०००।- (छ लाख रूपियाँ) को चेक दिएको तथ्यलाई स्वीकार गरी पुनरावेदन जिकिर लिएको देखिन्छ । तथापि उक्त चेक जाहेरवालीको पतिको नाउँमा रहेको जग्गा आफ्नो साथीबिच खरिद गर्ने क्रममा ग्यारेन्टीको लागि चेक जारी गरिदिएको हुँ भन्ने जिकिर लिएको देखिन्छ । यसरी जाहेरवालीले जुनसुकै प्रयोजनको लागि भए पनि आफ्नो नाउँको खातामा पर्याप्त रकम नहुँदा नहुँदै जाहेरवालीलाई चेक जारी गरेको पाइयो । पुनरावेदक प्रतिवादीले जारी गरेको उक्त चेक धारक जाहेरवालीले बैंकमा पेस हुँदा खातामा पर्याप्त रकम नभएको कारण बैंकबाट फिर्ता भएको तथ्य लक्ष्मी बैंक लि.को मिति २०७६।०८।२० को पत्र र स्टेटमेन्टसमेतका कागजातबाट देखिने ।

यसरी चेक जारी कर्ताले चेक धारकलाई आफ्नो खातामा पर्याप्त रकम नहुँदा नहुँदै चेक जारी गरेको कार्यको सम्बन्धमा कानूनी व्यवस्था हेर्दा, बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा ३ मा अनधिकृत रूपमा खाता खोल्न वा रकम भुक्तानी माग गर्न नहुने भन्ने व्यवस्था रहेको छ । सोही दफाको उपदफा (ग) मा आफूले काटेको चेकलाई खाम्ने रकम आफ्नो खातामा नरहेको जानी जानी चेक काटी भुक्तानी लिन वा दिन नहुने भन्ने व्यवस्था रहेको छ । चेक जारी कर्ताले जुनसुकै प्रयोजनको लागि भए पनि आफ्नो खातामा अपर्याप्त रकम रहेको अवस्थामा चेक जारी गर्नु नहुने, जारी गरेमा दफा ३(ग) बमोजिमको बैंकिङ कसुर हुने देखिने ।

पुनरावेदक प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा ३(ग) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १५(१) बमोजिम चेकमा उल्लेख भएको रकम रु.६,००,०००।- (छ लाख रूपियाँ) बिगो कायम भई जाहेरवालीले सो बिगो भराइलिन पाउने, बिगो बराबरको जरिवाना हुने, ३ (तीन) दिन कैद सजाय हुने र अपराध पीडित संरक्षण ऐन, २०७५ को दफा ४१ बमोजिम जरिवानाको ४ (चार) प्रतिशतले हुने रकम रु.२४,०००।- (चौबिस हजार रूपियाँ) क्षतिपूर्ति शुल्क बेहोर्नुपर्ने गरी सुरू उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७६।११।१३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत :- कालिबहादुर साम्यु लिम्बु

इति संवत् २०८० साल आषाढ ८ गते रोज ६ शुभम् ।

**१२**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७६-RB-०४९१, बैंकिङ*

*कसुर, अन्जुला घिमिरे वि. नेपाल सरकार*

चेक जारी कर्ताले चेक धारकलाई आफ्नो खातामा पर्याप्त रकम नहुँदा नहुँदै चेक जारी गरेको कार्यको सम्बन्धमा कानूनी व्यवस्था हेर्दा, बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा ३ मा अनधिकृत रूपमा खाता खोल्न वा रकम भुक्तानी माग गर्न नहुने भन्ने व्यवस्था रहेको छ। सोही दफाको उपदफा (ग) मा आफूले काटेको चेकलाई खाम्ने रकम आफ्नो खातामा नरहेको जानी जानी चेक काटी भुक्तानी लिन वा दिन नहुने भन्ने व्यवस्था रहेको छ । चेक जारीकर्ताले जुनसुकै प्रयोजनको लागि भए पनि आफ्नो खातामा अपर्याप्त रकम रहेको अवस्थामा चेक जारी गर्नु नहुने, जारी गरेमा दफा ३(ग) बमोजिमको बैंकिङ कसुर हुने देखिने।

पुनरावेदक प्रतिवादी अञ्जुला घिमिरेलाई अभियोग दाबीबमोजिम बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा ३(ग) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १५(१) बमोजिम चेकमा उल्लेख भएको रकम रु.१,६२,०००।- (एक लाख बैसट्ठी हजार रूपियाँ) बिगो कायम भई जाहेरवालाले सो बिगो भराइपाउने, बिगो बराबरको जरिवाना, ३ (तीन) दिन कैद सजाय हुने र अपराध पीडित संरक्षण ऐन, २०७५ को दफा ४१ बमोजिम जरिवानाको ४ (चार) प्रतिशतले हुने रकम रु.६,४८०।- (छ हजार चार सय असी रूपियाँ) क्षतिपूर्ति शुल्क बेहोर्नुपर्ने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७६।०५।०१ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत :- कालिबहादुर साम्पु लिम्बु
कम्प्युटर : - विकेश गुरागाई
इति संवत् २०८० साल आषाढ ८ गते रोज ६ शुभम्।

**१३**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७७-RB-०२५४, उपयुक्त आदेश, श्यामकुमार कटुवालसमेत वि. उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलाससमेत*

पुनरावेदक लिमिटेडको नियमावली तथा प्रबन्ध पत्रमा भएको उक्त व्यवस्थाबमोजिम सेयरधनीहरूबाट निवार्चित २ जना सदस्य रहनुपर्ने अनिवार्यता गरेको पाइन्छ। कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा ८७(१) को व्यवस्थाबाट पनि साधारण सभाबाट सञ्चालकको नियुक्ति गरिनुपर्ने हुन्छ। यस अवस्थामा नेपाल बैंक लि. र राष्ट्रिय वाणिज्य बैंकले आआफ्नो तर्फबाट प्रतिनिधित्व हुने गरी सञ्चालक समितिमा सदस्य तोकिसकेको पाइयो । सोबाहेक साधारण सभाबाट सेयरधनीहरूको तर्फबाट निर्वाचित गरिनुपर्ने २ जना सदस्यहरू निज बैंकहरूले तोक्न सक्ने व्यवस्था उक्त नियमावली तथा प्रबन्ध पत्रले गरेको देखिने।

ग्रामीण विकास लघुवित्त वित्तीय संस्था लिमिटेडको प्रबन्ध पत्र तथा नियमावली, २०७१ मा रहेको सञ्चालक नियुक्त गर्ने व्यवस्था तथा कम्पनी ऐन,२०६३ को दफा ८७(१) मा भएको व्यवस्थाबमोजिम सञ्चालक नियुक्ति गरेको नदेखिँदा विपक्षीहरू पासाङ दोर्जे शेर्पा र विनयरमण पौडेललाई उक्त संस्थाको सञ्चालक समितिको सदस्यको हैसियतले सहभागी नहुनु, नगराउनु र काम नगर्नु भनी विपक्षीहरूका नाममा उपयुक्त आदेश जारी गर्ने गरी उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट मिति २०७७।०७।२६ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत :- कालिबहादुर साम्पु लिम्बु
कम्प्युटर :- विकेश गुरागाई
इति संवत् २०८० साल आषाढ ८ गते रोज ६ शुभम्।

**१४**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७१-CR-१०१९, नागरिकता, जनकदेव दुवेसमेत वि. नेपाल सरकार*

वंशजको आधारमा नागरिकता प्राप्त गर्ने आधार निजका पूर्वजले नागरिकता लिएको वा नेपाल

नागरिक ठहर्ने वस्तुनिष्ठ आधारबाट पुष्टि हुनुपर्ने हुन्छ। प्रचलित कानूनबमोजिम निजका पुर्खाले नागरिकता लिएको भन्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाण पेस गर्न सकेको देखिँदैन। प्रतिवादीको बाबु बाजे बेलासी दुबेको नाममा जग्गा जमिनसमेत रहेको, निजको मृत्युपछि उक्त जग्गा नामसारीसमेत गराएको, भूमि सुधार ऐन लागु भएपछि १ नं. लगतसमेत भरेको भनी दाबी गर्दैमा यिनै आधारमा वंशजको नागरिकता प्राप्त गर्न पर्याप्त हुन्छन् भनी मान्न नमिल्ने।

मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट यी प्रतिवादी जनकदेव दुबे, वशिष्ट दुबे, सुदिश दुबेले वंशजको नाताले नागरिकता प्राप्त गर्ने कानूनी, अधिकार भएका नेपाली नागरिक भएको नदेखिँदा झुट्ठा विवरण पेस गरी नागरिकता लिएको देखिँदा यी तीनै जना प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबी अनुसार कसुर गरेकै देखियो । नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र राष्ट्रियतासँग जोडिएको हुँदा यस सम्बन्धमा थप छानबिन गर्ने तथा अधिकार प्राप्त निकायले छानबिन निर्णय गर्न पाउने नै हुन्छ। माथि उल्लिखित कानूनी व्यवस्था र यस अदालतबाट प्रतिपादित भएको उल्लिखित सिद्धान्तसमेतको आधारमा प्रस्तुत मुद्दामा पुनरावेदक प्रतिवादीहरूले झुट्ठा विवरण पेस गरी नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र लिएको अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई सजाय गर्ने गरी भएको फैसला अन्यथा परिवर्तन गरिरहनु नपर्ने।

तत्कालीन पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०६९।१०।२१ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत - लिलाधर सुवेदी

कम्प्युटर - राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०८० साल ज्येष्ठ १४ गते रोज १ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७१-CR-१०२०, नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र बदर, जनकदेव दुबेसमेत वि. नेपाल सरकार भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

## १५

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** ०७३-WO-१३७०, उत्प्रेषणसमेत, राजेशशम्सेर राणा वि. भूमि सुधार कार्यालय, काठमाडौंसमेत

का.जि.का.म.न.पा. वडा नं. ४ नक्सा सिट नं. १०२५-१५ कि.नं. ७४८, ७५२, ७४४, ७४६ र ७५० का जग्गामा निवेदक सङ्घले भवन निर्माणको लागि काठमाडौं महानगरपालिकासँग निर्माण अनुमति प्राप्त गरी प्लिन्थ लेवलसम्मको निर्माण कार्य सम्पन्न गरी पुनः निर्माण अनुमतिका लागि काठमाडौं महानगरपालिकामा जाँदा भूमि सुधार कार्यालय, काठमाडौंको पत्रानुसार मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजारको निर्णयबाट जग्गा रोक्का रहेकोले निर्माण अनुमति दिन नमिल्ने भनी काठमाडौं महानगरपालिकाबाट जवाफ प्राप्त भएकोले भवन निर्माणको अनुमति दिनु भनी विपक्षीहरूउपर आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने निवेदन दाबी रहेको सन्दर्भमा हेर्दा, यस अदालतको मिति २०७४।०५।११ को भवन निर्माण कार्यमा रोक नलगाउनु भन्ने अन्तरिम आदेशबाट भवन निर्माण कार्यले निरन्तरता पाएको भन्नेसमेत देखियो । साथै यस अदालतको आदेशबमोजिम काठमाडौं महानगरपालिकाको तर्फका कानून व्यवसायीले बहसको क्रममा इजलाससमक्ष भवन निर्माण सम्पन्न भएको प्रमाणपत्र पेस गरेको र सोसमेतबाट निवेदकको मागबमोजिम भवन निर्माण कार्य सम्पन्न भइसकेको भन्ने देखिने।

साथै, उक्त कित्ता जग्गाको साबिकको जग्गाधनीको हदबन्दीभन्दा बढी जग्गा रहेको भनी भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा ७ बमोजिम छानबिनको क्रममा रहेको र सरकारी जग्गा व्यक्तिको नाउँमा दर्ता रहेको भनी अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट विशेष अदालतमा मिति २०७६।१०।२२ मा मुद्दा नं ०७६-CR-०२७० दर्ता भई हाल उक्त मुद्दा विचाराधीन अवस्थामा रहेको

भन्नेसमेत देखिने।

यस अदालतबाट मिति २०७४।५।११ मा जारी भएको अन्तरिम आदेश हेर्दा “उक्त विवादित जग्गा तह-तह हक हस्तान्तरण भई निवेदकका नाउँमा प्राप्त हुन आएको देखियो। अहिले हदबन्दीसम्बन्धी उजुरी परी प्रारम्भिक छानबिनको अवस्थामा रहेको भन्ने देखियो। हदबन्दी सम्बन्धमा भइरहेको छानबिन कार्यपश्चात् हुने कानूनी कारबाहीका क्रममा पछि ठहरेबमोजिम हुने नै छ। हदबन्दीभन्दा बढी जग्गा हो भन्ने प्रमाणित भई जग्गा कानूनबमोजिम जफत हुने ठहरिएको अवस्थामा सो स्थानमा निर्मित घर आदि भौतिक संरचनासमेत स्वतः जफत हुने गरी हाल निवेदकका नाउँमा दर्ता रहेको जग्गामा भवन निर्माण गर्न रोक नलगाउनु” भनी उल्लेख भएको देखिन्छ। उक्त अन्तरिम आदेशबमोजिम हदबन्दीसम्बन्धी छानबिनपश्चात् जग्गा कानूनबमोजिम जफत हुने ठहरिएको अवस्थामा सो जग्गामा निर्मित घरलगायतको भौतिक संरचनासमेत जफत हुने भन्ने आदेशबमोजिम नै निवेदक गैरआवासीय नेपाली सङ्घले उक्त विवादित जग्गामा भवन निर्माण कार्य सम्पन्नसमेत गरिसकेको अवस्था एवं उक्त विवादित जग्गाको सम्बन्धमा सरकारी जग्गा व्यक्तिको नाउँमा दर्ता गरेको भनी विशेष अदालतमा मुद्दा विचाराधीन रहेकोसमेतको अवस्थामा निवेदकको मागदाबीबमोजिम विपक्षीहरू भूमि सुधार कार्यालय, काठमाडौं र मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजारबाट निवेदकको नाममा दर्ता कायम भएको काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका वडा नं. ४ को कि.नं. ७४४, ७४६, ७४८, ७५० र ७५२ का जग्गाहरू रोक्का राख्ने गरी भएको निर्णय उत्प्रेषणको आदेशले बदर गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिने।

विशेष अदालतमा विचाराधीन रहेको ०७६-CR-०२७० को मुद्दाको रोहमा प्रस्तुत निवेदनमा उल्लिखित कि.नं. ७४४, ७४६, ७४८, ७५० र ७५२ का जग्गाहरू हदबन्दीभन्दा बढी रहेको ठहर भएमा सो कित्ताका जग्गाहरू र सो जग्गामा रहेको भवन तथा भौतिक संरचनाहरूसमेत स्वतः जफत हुने गरी भवन निर्माण कार्य सम्पन्न भइसकेकोले प्रस्तुत रिट निवेदनको औचित्य देखिन नआएकोले खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : राजन खनाल

कम्प्युटर :- विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७९ साल माघ ५ गते रोज ५ शुभम्।

**१६**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७०-CR-०१४९, मोटरसाइकल चोरी, नेपाल सरकार वि. कृष्ण लामा*

चोरीको दाबीको मोटरसाइकल बालाजु माछापोखरीमा पार्किङ्ग गरेको अवस्थामा हराएको भन्ने सुरू हुलिया निवेदन देखिन्छ। उक्त मोटरसाइकल राधेश्याम बस्नेतले सहकारीबाट कर्जा लिई खरिद गरेको र उक्त मोटरसाइकल निजका छोरा अरुण बस्नेतले प्रयोग गरेको देखिन्छ। अरुणले उक्त मोटरसाइकल बिक्री गर्ने उद्देश्यले अर्जुन प्याकुरेललाई प्रयोग गर्न दिएको भनी बकपत्र गरेको देखियो। अर्जुन प्याकुरेल ज्यान मुद्दामा पक्राउ परेको ४ महिनापछि रिहा भएको र निजलाई मोटरसाइकल लैजाउ भन्दा निजले कृष्णलाई तिमी नै राख भनी भनेकोले मैले राखेको हुँ भनी मौका तथा अदालतमा बयान गरेको देखिन्छ। दसीको मोटरसाइकल बानेश्वरबाट कृष्ण लामाको साथबाट बरामद भए पनि यी प्रतिवादी कृष्ण लामाले स्वयं संलग्न भई मोटरसाइकल चोरी गरेको नभई अर्जुन प्याकुरेलबाट प्राप्त गरेको र नम्बर परिवर्तन गरी प्रयोग गरेको देखियो। उल्लिखित अवस्थामा यी प्रतिवादीले स्वयम् संलग्न भई मोटरसाइकल चोरी गरेको नभई चोरीको वस्तु लिएको वा राखेको देखिँदा निजले नै चोरी गरेको भन्ने दाबी मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट पुष्टि हुन नसक्ने।

तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६८।१२।०५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत - लिलाधर सुवेदी

इति संवत् २०८० साल जेष्ठ १४ गते रोज १ शुभम्।

**१७**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७३-WO-११६४, उत्प्रेषणसमेत, प्रमोद साह वि. सर्लाही जिल्ला अदालत मलंगवासमेत*

कि.नं. ९७ र कि.नं. ९९ को जग्गाको मोही फौदार साह तेली जीवित छँदै मोहीसम्बन्धी विवादको मुद्दा चलिरहेको अवस्थामा मोही फौदार साह तेलीको मृत्यु भएको र निजको छोरा प्रमोद साहले कानूनबमोजिमको हकवालाको हैसियतले उक्त मुद्दा सकारेको विषयमा साबिकको जग्गाधनी रमेश साह तेलीले कुनै प्रतिक्रिया नदिई स्वीकार गरी बसेको देखिन्छ । सर्वोच्च अदालतबाट मोहीको प्रमाणपत्र पाउने ठहरी फैसला भएपछि भूमि सुधार व्यवस्था मन्त्रालयले मिति २०७१।८।१६ मा जिल्ला सर्लाही साबिक नोकैल्वा गा.वि.स. वडा नं. ३क को कि.नं. ९७ र कि.नं. ९९ को जग्गाको मोहियानी हकको प्रमाणपत्र फौदार साह तेलीको नाममा जारी गरेकोसमेत देखियो। मोहीसम्बन्धी विवाद भई सर्वोच्च अदालतबाट फौदार साह तेलीले मोहीको प्रमाणपत्र पाउने ठहरी फैसला भई विवाद टुङ्गो लागिसकेपछि फैसला कार्यान्वयनलाई निस्प्रभावी बनाउने नियतबाट साबिकको जग्गाधनी रमेश साह तेलीले उक्त कि.नं. ९७ र कि.नं. ९९ को जग्गा आफ्नो भाउजू गितादेवीलाई मिति २०७१।०५।१९ मा बिक्री गरेको देखिने।

विपक्षीहरूले प्रमोद साह मिति २०४४।१०।१२ मा मोही फौदार साह तेलीसँग छुट्टी भिन्न भई बसेकोले मोहीको मृत्युपछि निजको नाममा मोही नामसारी हुन नसक्ने हुँदा मोही लगत कट्टा हुने भनी जिकिर लिएको सम्बन्धमा हेर्दा, मोहीसम्बन्धी विवाद चलिरहेका अवस्थामा मोही फौदार साहको मिति २०६६।१२।१७ मा मृत्यु भएपछि हकवालाको हैसियतले निवेदक प्रमोद साहले नै उक्त मुद्दा सकार गरेको र विपक्षी गितादेवीका दाता साबिकको जग्गाधनीले समेत मुद्दा सकार गर्दाको अवस्थामा उक्त कुरा स्वीकार गरी बसेको देखिन्छ । यससम्बन्धी कानूनी व्यवस्था हेर्दा, भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१) मा "यस परिच्छेदको अन्य दफाहरूको अधीनमा रही मोहीले कमाइआएको जग्गामा मोहीसम्बन्धी निजको हक अपुतालीसम्बन्धी प्रचलित कानूनबमोजिमको हकवालालाई प्राप्त हुने छ भन्ने व्यवस्था रहेको छ ।" त्यस्तै गरी सोही ऐनको दफा २६(१) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशको खण्ड (ग) मा "कुनै मोहीले जग्गा छाडी भागेमा वा बेपत्ता भएमा वा तोकेएबमोजिमको कुत नबुझाई मोहियानी हक समाप्त भएमा सो कुराको जग्गावालाले लिखित सूचना तोकिएको अधिकारी छेउ २५ दिनभित्र दिनुपर्दछ..." भन्ने व्यवस्था रहेको देखिने।

कागज प्रमाण, निवेदन बेहोरा एवं लिखित जवाफ हेर्दा, जिल्ला सर्लाही साबिक नोकैल्वा गा.वि.स. वडा नं. ३क को कि.नं. ९७ र ९९ को जग्गाको मोही फौदार साह तेली कायम हुने ठहरी यस अदालतबाट मिति २०७०।०८।०७ मा फैसला भएको, प्रस्तुत मुद्दा चल्दा-चल्दैको अवस्थामा बाबु फौदार साह तेलीको मृत्यु भएपछि निजको हकवाला छोरा प्रमोद साहले उक्त मुद्दा सकार गरेको तथ्यलाई साबिक जग्गाधनी विपक्षी गितादेवीका दाता रमेश साह तेलीले समेत स्वीकार गरेको अवस्थामा मोहीको मृत्युपछि निजको हकवाला छोरा प्रमोद साहलाई कि.नं. ९७ र ९९ को जग्गाको मोही नामसारी गरिदिनुपर्नेमा एकासगोलका नरहेको भनी मोही नामसारी नहुने ठहर गरी भएको भूमि सुधार कार्यालय सर्लाहीको मिति २०७३।२।३१ को निर्णय र सोलाई सदर गरेको सर्लाही जिल्ला अदालतको मिति २०७३।९।२१ को फैसला उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने।

इजलास अधिकृत :- राजन खनाल (उपसचिव)
कम्प्युटर :- विकेश गुरागाई
इति संवत् २०७९ साल माघ ५ गते रोज ५ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७३-WO-११६३, उत्प्रेषणसमेत, प्रमोद साह वि.

सर्लाही जिल्ला अदालत मलंगवासमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअुनसार फैसला भएको छ ।

**१८**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७४-CI-०११२, लेनदेन, तुलसीराम पौडेल वि. पिताम्बर पौडेल*

वादी दाबीको मिति २०६८।६।१० को लिखतका सम्बन्धमा प्रतिवादीले लेखाएको सनाखत बयान हेर्दा, उक्त तमसुकमा लागेको ल्याप्चे सहीछाप मेरो हो। लिखत सद्दे साँचो हो। लागेको ल्याप्चे सहीछाप आफ्नै हो भनी स्वीकार गरेको देखिन्छ । विवादको सक्कल तमसुक हेर्दा कानूनको रीत पुऱ्याई भए गरेको देखिन्छ । अर्कोतर्फ प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २७(२) मा "प्रचलित नेपाल कानूनबमोजिम वादीलाई दिनु वा बुझाउनुपर्ने कुरा सो कानूनबमोजिम दिए वा बुझाएको छ भनी प्रमाणित गर्ने भार प्रतिवादीको हुने छ" भन्ने कानूनी प्रावधान रहेको छ। उक्त कानूनी व्यवस्था अनुसार वादी दाबीको रकम यी प्रतिवादीले वादीलाई तिरे बुझाएको हो भनी भन्न र सोबमोजिमको प्रमाण पेस गरी प्रमाणित गर्न सकेको मिसिलबाट देखिँदैन । यस अवस्थामा वादी दाबीको रकम प्रतिवादीले वादीलाई तिर्न बुझाउनुपर्ने देखिने।

मिति २०६८।०६।१० को लिखतबमोजिमको साँवा रु.२५,०००।- र सोको कानूनबमोजिम हुने ब्याजसमेत वादीले प्रतिवादीबाट भराइपाउने ठहर गरी सुरू नवलपरासी जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।१२।१७ मा भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट मिति २०७३।११।२३ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : डोलनाथ न्यौपाने

इति संवत् २०७९ साल चैत्र ३० गते रोज ५ शुभम्।

- यसै लागउको ०७४-CI-०१११, अंश, तुलसीराम पौडेल वि. भद्रकला पौडेल भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसाल भएको छ।

**१९**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७४-CI-०५५२, अंश, राधिका रेग्मी वि. शुक्रराज रेग्मीसमेत*

कि.नं. ३१२ र २३६ को कित्ता जग्गाको खरिद र सोमा घर निर्माण गर्दाको आर्थिक स्रोत हेर्दा, प्रतिवादी कृष्णकुमारीले २०५६।०७।२८ मा चन्द्रप्रसाद सापकोटाबाट रु. पाँच लाखमा खरिद गरेको भन्ने छ । अर्कोतर्फ कि.नं. ३४१ को घडेरी जग्गा मिति २०५१।११।९ मा पिता नन्दराम धमलाबाट रिझाएबापत बकसपत्रबाट प्राप्त गरेको र कि.नं. ३४२ को घडेरी जग्गा मिति २०६१।१२।०५ मा दाजु कविराम धमलाबाट रु.६,००,०००।- मा प्रतिवादी कृष्णकुमारीले राजीनामा गरी लिएको देखिन्छ । प्रतिवादी कृष्णकुमारीको नाममा रहेको उक्त कि.नं. ३४१ र कि.नं. ३४२ को जग्गा मिति २०६३।४।१ मा रु.१६,००,०००।- मा चन्द्रमा कोइराला पाण्डेलाई बिक्री गरेको देखिने।

उक्त कि.नं. ३४१ र कि.नं. ३४२ को जग्गा बिक्री गरी आएको रकम र निज कृष्णकुमारीले २०४० सालदेखि स्वास्थ्य सेवामा कार्यरत रहेकी यी प्रतिवादीले नियमानुसार प्राप्त पारिश्रमिक, तलब भत्ता र व्यक्तिगत स्वास्थ्य सेवा प्रदान गरेबापत प्राप्त रकमसमेत लगानी गरी कि.नं. ३१२ र २३६ मा दुई तले पक्की घर निर्माण गरेको भन्ने जिकिर लिएको छ । सो सम्पत्ति खरिद गर्न सगोलका अन्य अंशियाराको आयस्रोत एवं संगोलको अन्य सम्पत्ति र स्रोतसमेतको रकम परेको भन्ने वस्तुनिष्ट प्रमाण यी पुनरावेदक प्रतिवादीसमेतबाट पेस भएको छैन । सौता नाता सम्बन्ध र व्यवहार रहेकी यी पुनरावेदक प्रतिवादीले प्रतिवादी कृष्णकुमारीले आफ्नो नाममा खरिद गरी दर्ता रहेका उक्त कि.नं. ३४१ र कि.नं. ३४२ का जग्गा बिक्री गरेको व्यवहारमा कहीँकतै उजुर बाजुर गरेको पनि देखिँदैन। उक्त व्यवहारबाट प्रतिवादी कृष्णकुमारीको स्वआर्जनको आफूखुसी गर्न पाउने हो

भन्ने कुरालाई स्वीकार गरेको भन्ने देखिने।

शुक्रराज रेग्मीको फिराद दाबीबमोजिम प्रतिवादी कृष्णकुमारीको नाममा रहेका कि.नं.३१२ र २३६ को घर जग्गामा कृष्णकुमारीको निजी आर्जन हुँदा समान पुस्ताकी सौतेनी नाताकी पुनरावेदक प्रतिवादीको अंश हक नरहने भनी उच्च अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७४।०२।३० मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : डोलनाथ न्यौपाने
कम्प्युटर : विकेश गुरागाई
इति संवत् २०७९ साल चैत्र ३० गते रोज ५ शुभम्।

**२०**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७४-CI-००७१, अंश, नकली बट्टसमेत वि. हिराकाजी बट्ट*

सुरू जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादीहरू एवं अ.बं.१३९ नं. बमोजिम बुझी प्रतिवादीसरह कायम भएका व्यक्तिहरूले तायदाती फाँटवारीमा पेस भएका जग्गाहरूलाई ५ भाग लगाई १ भागबाट ४ भागको एक भाग अंश वादीले छुट्याई लिन पाउने ठहरी फैसला भएको मा उच्च अदालत पाटनबाट प्रतिवादी नकली बट्टले हालैको वकसपत्रबाट प्राप्त गरेको कि.नं. ४२३ को जग्गा वादी हिराकाजी, प्रतिवादी सविन बट्ट र बकसपत्र पाउने नकली बट्टबिच मात्र बन्डा लाग्नेमा मुल अंशियारसमेत सबैलाई बन्डा लाग्ने गरी भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा सो हदसम्म उल्टी हुने भनी फैसला भएको रहेछ। हालैदेखिको बकसपत्र प्राप्त गर्ने प्रतिवादी नकली बट्टले विवादको कि.नं. ४२३ को क्षेत्रफल ०-९-२-० जग्गा प्रतिवादी छोरा सविन, प्रतिवादी आफ्नो पति/श्रीमान् तुइकाजीसमेतलाई बन्डा लाग्ने सम्पत्ति हो भनी स्वीकार गरेको देखिन्छ। बकसपत्र प्राप्त गर्ने श्रीमतीले आफ्नो एकाघरका श्रीमान्समेतले आफूले बकसपत्रबाट पाएको जग्गा बन्डा गर्न स्वेच्छाले स्वीकार गरेको अवस्था देखिन्छ। निज अंशियारभित्रको मुख्य अंशियारसमेत देखिन्छन्। दर्तावाला प्रतिवादी स्वयंको स्वेच्छिक सहमति रहेको कुरामा न्यायको रोहमा अन्यथा हो भनी भन्न पनि नमिल्ने।

पति वा पत्नीले कमाएको सम्पत्ति पति वा पत्नीको सगोलको सम्पत्ति हुने भन्ने र बाबु आमाले आर्जन गरेको सम्पत्तिसमेत सगोलको सम्पत्ति मानिने छ भन्ने व्यवस्थाले पति वा पत्नीले कमाएको सम्पत्ति सगोलमा रहेको बाबु, आमा, छोरा छोरीबिचमा बन्डा गर्न मिल्ने देखियो। यस अवस्थामा प्रतिवादी नकली बट्टले हालैदेखिको बकसपत्रबाट प्राप्त गरेको जग्गा आफ्नो पतिसमेतलाई बन्डा लाग्ने हो भनी यस अदालतमा पुनरावेदन गर्दा जिकिर लिएको कुरालाई उल्लिखित मुलुकी देवानी संहिता, २०७४ को दफा २५७ को उपदफा (२) र (३) को व्यवस्थासमेतले समर्थन गरेको नै देखियो। उक्त कानूनी व्यवस्थाको आसय र मनसायसमेतका आधारमा कि.नं. ४२३ को जग्गा प्रतिवादी तुइकाजी बट्टसमेतलाई बन्डा गर्न मिल्ने नै देखियो। यसरी प्रतिवादी तुइकाजी बट्टलाई उक्त कित्ता जग्गाबाट बन्डा नलाग्ने भनी उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला मिलेको देखिएन। उक्त फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिने।

पुनरावेदक/ प्रतिवादी नकली बट्टले हालैदेखिको बकसपत्रबाट प्राप्त गरेको कि.नं. ४२३ को जग्गा प्रत्यर्थी/वादी हिराकाजी र पुनरावेदकहरू सुविन बट्ट र नकली बट्ट ३ जना अंशियारका बिचमा मात्र बन्डा पाउने ठहऱ्याई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।०१।२५ मा भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई प्रतिवादी नकली बट्टको नाममा दर्ता रहेको कि.नं. ४२३ को जग्गालाई वादी हिराकाजी बट्ट ,प्रतिवादीहरू नकली बट्ट, तुइकाजी बट्ट, सुविन बट्टसमेतका चार अंशियारहरू रहेको हुँदा चार भाग लगाई सो चार भागको एक भाग वादी हिराकाजी बट्टले अंश पाउने।

इजलास अधिकृत : डोलनाथ न्यौपाने
कम्प्युटर : विकेश गुरागाई
इति संवत् २०७९ साल चैत्र ३० गते रोज ५ शुभम्।

## २१

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७३-CI-१५९९, अंश दर्ता, रोशन कोइराला वि. सूर्यप्रसाद उपाध्यायसमेत*

मिसिल संलग्न प्रत्यर्थी प्रतिवादी सूर्यप्रसाद उपाध्यायको नामको स्रेस्ता उतार हेर्दा निज प्रतिवादीको नाममा मालपोत कार्यालयले मिति २०६६।१०।१५ मा स्रेस्ता कायम गरी जग्गा धनी प्रमाण पुर्जा जारी गरेको देखिन्छ । उल्लिखित तथ्य र आधारमा यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी सूर्यप्रसादले ससीम कित्ता जग्गा नै आफ्नो नाममा कायम गरेको भन्ने देखिने ।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६ (क) मा एकाघरसँगका अंशियारहरूमध्ये जुनसुकै अंशियारका नाममा रहेको सम्पत्ति सगोलको सम्पत्ति हो भनी अदालतले अनुमान गर्ने छ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ । वस्तुत: एकासगोलको परिवारमा रहँदाका बखत सगोलका कुनै अंशियारका नाममा कुनै सम्पत्तिको स्वामित्व कायम रहेको छ भने त्यस्तो सम्पत्ति अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म सगोलको सम्पत्ति हो भनी मान्नुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत विवादका जग्गामा प्रत्यर्थी प्रतिवादी सूर्यप्रसादको नाउँमा साबिकमा मोहियानी जनिएको भए तापनि प्रस्तुत मुद्दाको फिराद पर्नुभन्दा अगावै अर्थात् २०६६ सालमा निजको नाउमा जग्गाधनीको हैसियत कायम भई सम्पूर्ण हक प्राप्त भएको अवस्था देखिँदा एकासगोलका अंशियार यी पुनरावेदक वादीसमेतका अंशियारहरूसमेतले अंश प्राप्त गर्न सक्ने नै देखियो । यस अवस्थामा विवादका कित्ता जग्गाहरू प्रत्यर्थी प्रतिवादी सूर्यप्रसाद उपाध्यायको नाममा मोहियानी हकको स्रोतबाट प्राप्त भएको जग्गा हो । मोहियानी हकमा अन्य अंशियारहरूलाई अंश हक लाग्दैन र स्वआर्जनको हुन्छ भनी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूका विद्वान् कानून व्यवसायीहरूले गर्नु भएको बहस जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन । कि.नं. १७२, १७३, २००, २९, १० र १९७ का कित्ता जग्गाहरूसमेतबाट पुनरावेदक वादीले अंश भाग पाउने नै देखिने ।

कि.नं.१७२ समेतका जग्गासमेत बन्डा गर्ने गरी सुरू धनुषा जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला केही उल्टी हुने ठहऱ्याई उक्त कि.नं.१७२ समेतका जग्गासमेत बन्डा नलाग्ने भनी उच्च अदालत जनकपुरबाट मिति २०७३।१०।११ मा भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई सुरू धनुषा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।१०।२२ मा विवादका कि.नं. १७२, १७३, २००, २९, १० र १९७ जग्गाहरूसमेतबाट पुनरावेदक वादीले अंश हक प्राप्त गर्ने गरी भएको फैसला सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : डोलनाथ न्यौपाने

कम्प्युटर : विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७९ साल चैत्र ३० गते रोज ५ शुभम् ।

## २२

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७४-CI-०३६२, दूषित लिखत बदर, लक्ष्मी साखकर्मी वि. मैया श्रेष्ठसमेत*

स्व. गणेशबहादुरको मृत्युपश्चात् वादी हिराबहादुरको मन्जुरीले प्रतिवादी सेते श्रेष्ठको नाममा नामसारी भएपश्चात् प्रतिवादी सेते श्रेष्ठले वादी हिराबहादुरको मन्जुरी नलिई अर्थात् निजलाई साक्षीसमेत नराखी उक्त कि.नं. ३१९ को संयुक्त जग्गामध्ये ३ भागको १ भाग प्रतिवादी दिलकुमार श्रेष्ठलाई हक छोडपत्रको लिखत गरी दिएको कुरामा पनि विवाद देखिँदैन । स्व. गणेशबहादुर श्रेष्ठको मृत्युपश्चात् सेते श्रेष्ठको नाममा नामसारी गर्न दिएको मन्जुरीनामालाई हक छोडपत्र गर्नसमेत दिएको मन्जुरनामा हो भनी अर्थ गर्न मिल्ने देखिँदैन । पुनरावेदक/वादी हिराबहादुरसमेतको हक लाग्ने जग्गा वादीको मन्जुरी र निजलाई लिखतमा साक्षीसमेत नराखी मुलुकी ऐन, लेनदेन व्यवहारको १० नं. विपरीत हक छोडपत्रको लिखत गरिदिएको कार्यबाट यी पुनरावेदक/वादीको अंश हकमा असर पार्ने नै

देखियो । यसै लगाउको यिनै पुनरावेदक/वादीलाई प्रतिवादी बनाई वादी सेते श्रेष्ठ भई दायर भएको ०७४-CI-०३६१ को अंश मुद्दामा आज यसै इजलासबाट वादीले अंश पाउने ठहरी फैसला भएको छ । यसरी फिरादी हिराबहादुर श्रेष्ठ र प्रतिवादी सेते श्रेष्ठबिचमा अंश बन्डा भएको अवस्था नभई एकासगोलमा रहेको भन्ने यसै लगाउको अंश मुद्दाको फैसलाबाट देखिन्छ। यस तथ्यबाट विवादको हक छोडपत्रको लिखत मिति २०६९।११।१८ मा लिखत पारित हुँदाका बखत यी पुनरावेदक/वादी हिराबहादुर श्रेष्ठ र प्रत्यर्थी/प्रतिवादी सेते श्रेष्ठ एकासगोलमा रहे भएको देखिएको अवस्थामा उक्त कि.नं. ३१९ को जग्गामा वादी हिराकाजी श्रेष्ठको र प्रतिवादी सेते श्रेष्ठको ३ भागको १ भागमा आधा आधा हक हिस्सा रहने नै देखिने।

एउटै लिखतका सम्बन्धमा लिखत बदरतर्फको फिराद दाबी नपरेको अवस्थामा पनि जालसाजीतर्फको दाबीले उक्त लिखत स्वतः निष्प्रभावी हुने स्थितिमा प्रस्तुत फिरादबाट लिखत बदर गरिपाउँ भन्ने माग दाबी लिई छुट्टै फिराद दायर भएको अवस्था छ । उक्त जालसाजी मुद्दामा भएको ठहरसँग लिखत बदर मुद्दामा हुने ठहरबिचको सम्बन्ध अन्योन्याश्रित रहनुपर्ने हुन्छ। एउटै लिखतउपर परेका छुट्टाछुट्टै फिराद दाबीका विषयमा फरक फरक परिणाम आउने गरी इन्साफ दिनु न्यायको रोहमा मनासिब र न्यायोचित देखिँदैन । जालसाजीतर्फको फिराद दाबी पुगेको अवस्थामा सो विवादको लिखतलाई वादीले दाबी गरेको हक हिस्सा निष्क्रियसम्म गर्ने कार्य भएको हुन्छ। कानूनी रूपमा हक स्थापित गरेको नहुने।

जालसाजीतर्फ र लिखत बदरतर्फको मुद्दा दायर गर्ने हदम्याद फरक फरक कानूनमा फरक फरक समयावधि उल्लेख भए तापनि दुवै मुद्दा एउटै कार्य कारणबाट उठान हुने हुँदा हदम्यादको प्रश्न उठाई वादी दाबी खारेज गरिनु न्याय सङ्गत हुँदैन । जालसाजीतर्फको वादी दाबीबाट जे जति भाग हिस्सा लिखत निस्क्रिय हुने हो सो हदसम्म लिखत बदरतर्फ दाबी भएकोमा सोतर्फ पनि न्यायको रोहबाट सम्बोधन गरिनु नै विवेकसम्मत हुन्छ । यसरी जालसाजीतर्फको मागदाबी अनुसार लिखत निस्क्रिय भएको हदसम्म लिखत बदरसमेत गर्नुपर्नेमा लिखत बदर नगर्ने गरी उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला मिलेको नदेखिने।

वादी दाबी खारेज हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।०१।०६ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई वादी दाबीबमोजिम मिति २०६९।११।१८ को र.नं.५०५७/ख को हक छोडपत्र लिखतको ३ भागको १ भागलाई २ भाग लगाई सो २ भागको १ भाग लिखत बदर भई सो बदर भएको १ भाग जग्गा वादी हिराबहादुर श्रेष्ठको नाउँमा दर्ता नामसारी हुने।

इजलास अधिकृत : डोलनाथ न्यौपाने
कम्प्युटर : राधिका घोरासाइने
इति संवत् २०७९ साल चैत्र ३० गते रोज ५ शुभम्।
यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ :

- ०७४-CR-०५५२, किर्ते जालसाजी, लक्ष्मी साखकर्मी वि. सेते श्रेष्ठसमेत
- ०७४-CR-०५५३, जालसाजी, लक्ष्मी साखकर्मी वि. सेते श्रेष्ठसमेत
- ०७४-CI-०३६१, अंश चलन, लक्ष्मी साखकर्मी वि. सेते श्रेष्ठसमेत
- ०७४-CI-०३६३, दूषित लिखत बदर, लक्ष्मी साखकर्मी वि. दिलकुमार श्रेष्ठसमेत

## २३

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७४-CI-०३९१, हक कायम, नरेशप्रसाद शर्मा वि. गरौजा मगर*

मालपोत कार्यालय, धादिङमा नरेशप्रसाद शर्माले धादिङ जिल्ला, कुम्पुर गा.वि.स. वडा नं. ६(ख) कि.नं. २७ को क्षेत्रफल ७-७-०-१ को जग्गामा आफ्नो नाममा दर्ता गरिपाउँ भनी निवेदन दिएउपर

प्रस्तुत मुद्दाका वादी बलबहादुर गजौरा मगरले समेत उक्त जग्गा आफ्नो नाममा दर्ताको लागि निवेदन दिई दुवैको दाबी परेकोले हक कायम गरी ल्याउनु भनी मालपोत कार्यालयबाट मिति २०६७।१०।१० मा भएको निर्णयपश्चात् वादी बलबहादुरले प्रस्तुत मुद्दा दर्ता गरेको देखिने।

विवादित कि.नं. २७ को नापीको बखत जग्गाधनीको महलमा जलबहादुर गजौरा मगर भनी फिल्डबुकमा उल्लेख भएको अवस्थामा यी वादीले उल्लिखित जलबहादुर गजौरा मगर भन्ने व्यक्ति म बलबहादुर गरौजा मगर नै हुँ भनी मालपोत कार्यालय, धादिङमा तथा फिराद पत्रमा समेत उल्लेख गरेको देखिन्छ । फिल्डबुकमा उल्लिखित उक्त बेहोराउपर कोही कसैले कहीँ कतै उजुर बाजुर गरेको भन्नेसमेत खुल्न आएको पाइँदैन । यी वादीले फिल्डबुकमा जनिएको जलबहादुर मगर म नै हुँ भनी विवादित जग्गाको दर्ताको कारबाही सुरू गरेपछि मात्र तेरो मेरोको प्रश्न खडा भएको अवस्था देखिन्छ । तत्पश्चात् मालपोत कार्यालय, धादिङले हक कायम गरी ल्याउनु भनी निर्णय गरेको पाइन्छ । यी प्रतिवादी नरेशप्रसाद शर्माले मालपोत कार्यालय, धादिङको निर्णय अनुसार विवादित जग्गामा हक कायम गरिपाउँ भनी सबुद प्रमाणसहित फिराद दाबी लिई अदालत प्रवेश गरेको देखिँदैन । अतः विवादित कि.नं. २७ को जग्गामा प्रतिवादीले हक कायमतर्फ दाबी नै नभएको हुँदा सोतर्फ निजको पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने।

वादी दाबीबमोजिम धादिङ जिल्ला, कुम्पुर गा.वि.स. वडा नं. ६(ख), कि.नं. २७ को क्षेत्रफल ७-७-०-१ को जग्गामा वादीको हक कायम हुने गरी सुरू धादिङ जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलालाई सदरै गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७१।०१।०८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : मनिता गुरुङ

इति संवत् २०७९ साल फागुन २३ गते रोज ३ शुभम्।

## इजलास नं.५

### २४

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** *०७३-CR-००३४, जालसाजी, मनिष कार्कीसमेत वि. मणिकुमार कार्कीसमेत*

प्रतिवादी मणिकुमार कार्की घरका मुख्य भई व्यवहार गर्ने व्यक्ति हुन् भन्ने तथ्यमा विवाद छैन । निजका छोराहरू (वादीमध्येका) मनिष कार्की र आयुष कार्की अध्ययनको सिलसिलामा विदेशमा रहेको अवस्थामा व्यवहार गरिएको देखिन्छ । वादी निर्मला गिरी कार्की र प्रतिवादी मञ्जु गिरी दिदी-बहिनी नाताका मानिस देखिन्छन् । प्रतिवादी मणिकुमार कार्कीले साली नाताकी मञ्जु गिरीसँग मिलोमतो गरेर आफ्ना पत्नी तथा छोराहरूको हक मेट्ने, निजहरूलाई नोक्सान पार्ने मतलब राखेर जग्गा लिखत गरी हक हस्तान्तरण गर्नुपर्ने कुनै पनि उचित कारण खुल्न आएको देखिँदैन। विवादित ललितपुर जिल्ला, इमाडोल गा.वि.स. वडा नं. ६ (ग) कि.नं. ३८० को क्षेत्रफल ०-५-१-० जग्गामध्ये आफ्नो आधा हिस्सा जग्गा र घरसमेतको मूल्य रु. सोह्र लाख वादीमध्येकी निर्मला गिरी कार्कीमार्फत रूपियाँ बुझेको कुरा उल्लेख गरी निज मणिकुमारले २०६३ साल पौषमा सर्तनामाको कागज गरेको समेत देखिन्छ । उक्त सर्तनामालाई अन्यथा किर्ते वा जालसाजयुक्त तवरबाट तयार गरिएको हो भनी मान्न सकिने कुनै उचित कारण र आधार खुल्न आएको पाइएन । लिखत गर्दा साक्षी नराखेको वा मन्जुरी नलिएको कुरालाई नै स्वयम्मा जालसाजी ठहर हुने आधार वा कारण मान्न सकिँदैन। जालसाजी कार्य प्रमाणित हुनका लागि अर्काको हक मेट्ने, हदम्याद तारिख जाने वा कुनै तरहले नोक्सान पार्ने मतलब राखेर कार्य गरेको देखिनुपर्दछ । फौजदारी कसुरको आवश्यक तत्त्व प्रमाणित नभएसम्म लिखत गर्दा साक्षी

नराखेको वा मन्जुरी नलिएकोसम्मको कुरालाई मात्र हेरेर जालसाजी भनी ठहर गर्न मिल्दैन । यसरी हेर्दा प्रस्तुत मुद्दामा जालसाजी भनी वादीले गरेको फिरादपत्र दाबी पुग्न सक्ने अवस्था नदेखिने।

विवादित लिखतलाई जालसाजी भनी लिएको वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७१/११/१६ को फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत:- हरिप्रसाद आचार्य

कम्प्युटर :- कृष्ण गिरी

इति संवत् २०७९ साल चैत २८ गते रोज ३ शुभम्।

**इजलास नं. ६**

**२५**

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** *०७८-WO-१४४९, उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत, गंगाप्रसाद सेढाई वि. गंगा तिमिल्सिनासमेत*

प्रतिवादीको नाममा म्याद तामेल गर्नुको कारण निजउपर वादीले लगाएको आरोपको प्रतिवाद गर्ने मौका प्रदान गर्नु वा निज विरुद्ध लागेको आरोपको सूचना पाउनु हो । उक्त सूचनाको लागि वादीले मुद्दा दर्ता गरेपछि प्रतिवादीको नाममा म्याद जारी गरिनुपर्दछ र जारी भएको म्याद कानूनी रूपमा रीतपूर्वक तामेल भएको हुनुपर्दछ । प्रतिवादीको नाममा जारी भएको म्याद कुनै कारणले तामेल हुन नसकेको अवस्थामा सो कुरा सबैलाई थाहा जानकारीको लागि सार्वजनिक रूपमा सूचना प्रकाशन गर्नुपर्ने भनी कानूनले व्यवस्था गरेको पाइन्छ । कुनै पनि मुद्दामा सार्वजनिक म्याद सूचना जारी गर्नुको उद्देश्य सम्बन्धित कोही पनि म्याद सूचनाबाट वञ्चित नहुने भनी अनुमान गर्नु हो। सार्वजनिक म्याद सूचना जारी गरी म्याद तामेल नगर्ने हो भने कतिपय अवस्थामा प्रतिवादीका नाममा म्याद सूचना तामेल गर्न नसकिने र मुद्दाको कारबाही प्रक्रिया नै अवरुद्ध भई अनन्तकालसम्म म्याद तामेल हुन नसकी न्यायिक प्रक्रिया नै अन्योलग्रस्त हुन जाने हुन्छ। यस अवस्थामा मुलुकी देवानी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १०५ मा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाबमोजिम नै यी निवेदकको हकमा म्याद तामेल भएको अवस्था देखिएबाट उक्त तामेली म्यादलाई बेरितको भन्न मिल्ने नदेखिने।

जहाँसम्म आफ्नो नामको तामेली म्याद बेपत्ते भइआएपछि पक्षबाट अर्को वतन खुलाउन नलगाई पुनः सोही वतनमा गोरखापत्रमा सूचना प्रकाशित गरेको भन्ने जिकिर छ, सो सम्बन्धमा हेर्दा कसैको वतन अस्पष्ट भएमा वा यकिन हुन नसकेको अवस्थामा मात्र पक्षबाट अर्को वतन खुलाउन लगाउनुपर्ने हुन्छ। तर निवेदकको हकमा हेर्दा निजको नागरिकताको प्रमाण-पत्रमा वतन झापा जिल्ला, महारानीझोडा गाउँपालिका वडा नं.२ उल्लेख भएको, मालपोत कार्यालयबाट तयार भएको जग्गा दर्ता स्रेस्ता, दृष्टिबन्धकको लिखतको साथै यी निवेदक वादी तथा प्रतिवादी भई चलेको विभिन्न मुद्दाहरूमा निजको सोही वतन उल्लेख भएको पाइएको र सो वतनलाई निजले स्वीकार गरेको तथा परिवर्तन भएको वतन सम्बन्धित निकाय वा अदालतमा चलेको मुद्दामा समेत नखुलाई मिति २०७८।१०।२३ मा मात्र स्थानीय निकायको सिफारिस लिई आएको अवस्थासमेतबाट निजको वतन सम्बन्धमा द्विविधा हुनुपर्ने अवस्था नहुँदा निजको अर्को वतन खुलाइरहनुपर्ने स्थिति नदेखिने।

निवेदकसमेत प्रतिवादी भएको दृष्टिबन्धक लिखत बदर मुद्दामा यी निवेदकको नामको म्याद मुलुकी देवानी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १०५ मा उल्लिखित प्रक्रिया पूरा गरी तामेल भएको पाइयो । यस स्थितिमा उक्त तामेली म्याद बदरको लागि परेको निवेदनलाई दरपिठ गर्ने गरी भएको भक्तपुर जिल्ला अदालतको स्रेस्तेदारले गरेको आदेशलाई सदर गर्ने गरेको सोही जिल्ला अदालतका न्यायाधीश तथा उच्च अदालत पाटनको आदेशलाई गैरकानूनी भन्न नमिल्ने

हुँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी हुने अवस्था देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत :- कर्णबहादुर राई

कम्प्युटर :- रेखा भट्टराई

इति संवत् २०८० साल जेठ ५ गते रोज ६ शुभम्।

**२६**

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७९-WO-०४८७, उत्प्रेषण, शिवशरण ठाकुर वि. सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत*

निवेदक मिति २०५६।२।११ सम्म पहिलेको सेवामा रहँदा निजामती सेवा नियमावली, २०२१ को नियम १२३(२) बमोजिम बहाल रहेको अवस्थामा निजले मिति २०७९।७।३ मा नोकरी जोडी पाउन निवेदन गरेको र त्यस सम्बन्धमा हदम्याद समाप्त भएको हुँदा नोकरी जोड्न नमिल्ने भनी निवेदकलाई जानकारी गराएको अवस्थामा उल्लिखित मितिभन्दा पछाडि मिति २०५६।४।२७ मा नियमावलीमा दोस्रो संशोधन गरी नियम १२३(२) को व्यवस्था खारेज गरिएको भन्ने मात्र कारणले नियम खारेजीको व्यवस्थालाई पश्चात्दर्शी असर दिई उक्त नियमको व्यवस्था क्रियाशील रहेको अवस्थामा निवेदकलाई नियमले प्रदान गरेको सुविधाबाट वञ्चित गरिनु नियमसम्मत मान्न नमिल्ने हुँदा निवेदकलाई उपदानबापतको रकम जम्मा गर्न लगाई मागबमोजिम सेवाअवधि जोडाउनु कानूनसम्मत हुने।

निजामती किताबखाना राज्यको एक जिम्मेवार निकाय हो। जिम्मेवार निकायले नियमको व्यवस्थाको अक्षरश: पालना गरी निवेदकको सेवाअवधि गणना गरी निजलाई जानकारी दिनुपर्नेमा म्यादभित्र दर्ता गराई प्रक्रियामा रहेको नदेखिएकोले सेवाअवधि हालको सेवामा जोड्न नमिलेको भनी निर्णय गरेको देखिने।

निवेदक निजामती सेवामा स्थायी कर्मचारीको रूपमा मिति २०४२।१।१३ मा सेवा प्रवेश गर्दाको बखत तत्काल लागु रहेको निजामती सेवा ऐन तथा निजामती सेवा नियमावली अनुसार निजले स्थायी कर्मचारीको रूपमा गरेको १४ वर्ष २८ दिनको निजको सेवाअवधि जोडी सोसमेतलाई निजको समग्र सेवाअवधिको रूपमा गणना गरी निजलाई अवकाशपश्चात् निवृत्तिभरण अधिकार प्रदान गर्न मिल्ने नै देखिँदा विपक्षी निजामती किताबखाना (राष्ट्रिय किताबखाना) बाट भएको निर्णय र पत्राचार कानूनसम्मत र न्यायपूर्ण नदेखिने।

निवेदकले मिति २०४२।१।१३ देखि मिति २०५६।२।११ सम्म १४ वर्ष २८ दिन नेपाल न्याय सेवा, न्याय समूह राजपत्र अनङ्कित तृतीय श्रेणी विचारी पदमा अविच्छिन्न सेवा गरेको देखिई सो सेवाअवधि हालको सेवा (पद) मा गणना नगरी निजामती सेवा नियमावली, २०५० को नियम १२३(३) बमोजिम निजामती किताबखानाको मिति २०७९।७।२२ च.नं. ६४४ को निर्णय निवेदकको हकमा मिलेको देखिएन। निजामती सेवा ऐन तथा नियमावली र नेपालको संविधानले प्रदान गरेको हक-अधिकारको प्रतिकूल भएकोले विपक्षीहरूको उक्त मितिको निर्णय र पत्राचार उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ। निवेदकले लिएको उपदानको रकम फिर्ता गरेमा मागबमोजिम निजको पहिलाको स्थायी सेवाअवधि हालको सेवाअवधिमा गणना गरी सेवाअवधि कायम गर्नु गराउनु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेशको आदेश जारी गरिदिएको छ।

इजलास अधिकृत : दिप्ती पौडेल

कम्प्युटर : पद्मा आचार्य

इति संवत् २०८० साल श्रावण २१ गते रोज १ शुभम्।

## इजलास नं.८

**२७**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७९-WH-००७५, बन्दीप्रत्यक्षीकरणसमेत, दयाशंकरप्रसाद यादव वि.*

*उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्ज, पर्सासमेत*

निवेदकको स्थायी वतन बारा जिल्ला, कलैया उपमहानगरपालिका, साबिक को वडा नं. ६ हालको वडा नं.१ मा बसोबास गर्दैआएको भनी निवेदनमा उल्लेख गरेको पाइन्छ। रिट निवेदकले पेस गरेको मिति २०७२।१०।११ को बसाइसराइको प्रमाणपत्र हेर्दा यी निवेदक परिवारसहित मिति २०७२।०१।१० देखि बारा जिल्ला, साबिक कलैया नगरपालिका, वडा नं. ६ मा बसाइँ सरिआएको भन्ने देखिन्छ। उक्त बैंकिङ कसुर मुद्दामा उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्जबाट अभियोगपत्रमा उल्लेख भएको निवेदकको ठेगाना रौतहट जिल्ला, सोनरनीया गा.वि.स. वडा नं. २ हाल परिवर्तित मौलापुर नगरपालिका वडा नं.८ भन्ने उल्लेख गरी निवेदकको नाउँको म्याद जारी भएको देखिन्छ र मिति २०७७।१२।१० मा एकाघरको सदस्यसमेत फेला नपरेकोले मौलापुर नगरपालिका, वडा नं.८ को कार्यालयमा एक प्रति म्याद दिई उक्त म्याद तामेली भएको भन्ने बेहोरा उल्लेख गरेको पाइन्छ । अर्थात् निवेदकको वास्तविक वतन बारा जिल्ला कलैया उपमहानगरपालिका वडा नं. ६ भन्ने देखिएकोमा हाल कलैया उपमहानगरपालिका वडा नं. १ कायम हुन गई निवेदकको बसोबास भएको उक्त वतनमा उच्च अदालत जनकपुर अस्थायी इजलास वीरगन्जबाट निवेदकको नाउँको म्याद जारी भएको देखिन आएन । निवेदक बसोबास नगरेको गलत वतनमा म्याद तामेल गरेको देखिने।

प्रस्तुत मुद्दामा निवेदकको नाउँको म्याद गलत वतनमा तामेल भएको हुँदा त्यस्तो जारी र तामेलीलाई कानूनसम्मत मान्न नमिल्ने र कानूनसम्मत नभएको म्याद र तामेलीको आधारमा निवेदकलाई कसुरदार ठहऱ्याई उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्जबाट मिति २०७८।०५।३० मा भएको फैसला प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्त तथा उल्लिखित कानूनी प्रावधानको प्रतिकूल देखिँदा उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिदिएको छ। उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्जको फैसला बदर भएकोले उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्जबाट निवेदकलाई कैदमा राख्न पठाएको च.नं. ६३९ मिति २०७९।०४।२० को पत्रसमेत निष्क्रिय गरिदिएको छ।

निवेदकलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम बैंकिङ कसुर मुद्दामा उपस्थित गराई अदालतको रोहमा म्याद बुझाई थुनछेक आदेशलगायतका प्रक्रियामा संलग्न गराई पुनः कानूनबमोजिम गर्नु, गराउनुहोला भनी उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्जका नाममा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने।

इजलास अधिकृत : इन्दिरा कार्की गेलाल
कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल
इति संवत् २०७९ साल पुस ३ गते रोज १ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७९-WH-००७४, बन्दीप्रत्यक्षीकरणसमेत, दयाशंकरप्रसाद यादव वि. उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्ज, पर्सासमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

**२८**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७४-CI-०७१६, अंश चलन, डोरी महरा वि. कुमारी खत्रीसमेत*

वादी कुमारी खत्रीले पति कमलेश महराउपर सम्बन्ध विच्छेद मुद्दाको फिराद गर्दा आफ्नो एक मात्र छोरी रहेको उल्लेख गरेको देखिन्छ । अर्की छोरी जन्मेको वा गर्भमा रहेको भन्ने पनि नखुलाएबाट कुमारी खत्रीको छोरी विष्णु पति कमलेश महराको छोरी नभएकोले अंशियार कायम गर्न मिल्दैन भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादी डोरी महराको जिकिर रहेको पाइन्छ। छोरी विष्णु कमलेश महराको छोरी होइनन् भन्ने कुरा यथेष्ट प्रमाणहरूबाट पुष्टि नभएसम्म कुमारी खत्री महराले आफ्नो फिराद पत्रमा निज छोरीको सम्बन्धमा उल्लेख नगरेकै कारणले मात्र अंशजस्तो

नैसर्गिक हकबाट वञ्चित हुने अवस्था रहँदैन । कुमारी खत्री महराले छोरी विष्णुको बारेमा सम्बन्ध विच्छेद मुद्दामा केही उल्लेख नगरी गरेको गल्तीको भागीदार छोरी विष्णुलाई बनाई निजको अंश हकमा प्रतिकूल असर पार्न मिल्दैन । वादी कुमारी महरा र प्रतिवादी डोरी महराले हाम्रो पति कमलेश महराको मिति २०६३।१२।२२ मा मृत्यु भएकोले निजको नाममा रहेको जग्गा जमिन नामसारी गरी लिन पाउने हकदारहरूमा दुई श्रीमती जेठी डोरी महरा र कान्छी कुमारी खत्री महरा रहेको र डोरी महराबाट छोरा श्यामसिं महरा, ओमन महरा र सागर महराङ छोरी पुष्पा महरा रहेका र कुमारीबाट जेठी छोरी **रणु** महरा र कान्छी छोरी विष्णु महराको जन्म भएको कुरा उल्लेख गरी जग्गा दुई श्रीमतीका नाममा नामसारी गरिपाउँ भनी मिति २०६५।१२।२ मा मालपोत कार्यालय, रोल्पामा संयुक्त निवेदन दिनुको साथै सोही बेहोराको गजुल गाउँ विकास समितिबाट मिति २०६५।११।२६ मा सिफारिससमेत भएको देखिन्छ । कुमारी खत्री र छोरी विष्णु महरा आफ्नो अंशियार नभएको भन्ने यी पुनरावेदक प्रतिवादीले प्रस्तुत मुद्दाको उठान हुनुभन्दा अगाडि नै कुमारी खत्री र छोरी विष्णु महरा आफ्नो अंशियार हुन् भनी स्वीकार गरिसकेपछि हाल आएर सो बेहोरा खण्डन हुने गरी आफ्नो अंशियार होइनन् भन्ने पुनरावेदकको जिकिर तर्कसङ्गत देखिएन । वादी कुमारी खत्री महरा कमलेश महराको श्रीमती र विष्णु महरा छोरी नाताका हुन् भन्ने कुरा पुनरावेदक प्रतिवादी डोरी महरासमेतले जग्गा नामसारी गरिपाउँ भनी मालपोत कार्यालयमा दिएको संयुक्त निवेदन, गजुल गाउँ विकास समितिको सिफारिस, मिति २०६५।११।२६ को गजुल गाउँ विकास समितिबाट भएको नाता प्रमाणित प्रमाणपत्र एवं सोही मितिमा जारी भएको विष्णु महराको नागरिकता प्रमाणपत्रबाट पुष्टि भइरहेको अवस्थामा पुनरावेदक प्रतिवादीको उक्त पुनरावेदन जिकिरसमेत कानूनसम्मत देखिएन । प्रत्यर्थी प्रतिवादी कुमारी खत्री र विष्णु महरासमेत यी पुनरावेदक वादीको समान अंशियार रहेको तथ्य पष्टि हुन आएको छ । सम्बन्ध विच्छेद भइसकेकी श्रीमती र सोपछि जन्मिएकी छोरीले अंश पाउने भन्ने कानूनी व्यवस्थाको अभाव रहेको भनी मुद्दा दोहोऱ्याई हेर्ने अनुमति प्रदान गर्दा लिएको आधार, कारणसँग माथि उल्लिखित विवेचनासमेतबाट सहमत हुन नसकिने ।

वादी कुमारी खत्री र विष्णु महरासमेत यी पुनरावेदक प्रतिवादीको अंशियार रहे भएको कुरा पुष्टि भएको र पुनरावेदक प्रतिवादी डोरी महराले तायदातीमा देखाएको जग्गा विवरणमध्ये कित्ता नं. १६९, १७२, १७३, २९९, ३००, ३०१ र ८३८ जग्गा आमा देवा खत्रीबाट खरिद लिएको तथा पेवाको सम्पत्ति भएकोले आफ्नो एकलौटी हक लाग्ने भनी जिकिर लिए पनि सो कुरा पुष्टि हुने कागज पेस गरेको देखिँदैन । वादीले उक्त जग्गा श्रीमान्को जागिरको रकमबाट खरिद गरेको भनी दाबी गरेको अवस्थामा यी पुनरावेदक प्रतिवादीले सो जग्गा आफ्नो कुन निजी आर्जनबाट खरिद गरेको हो ? स्रोत खुलाउन सकेको देखिँदैन । वादी प्रतिवादीहरू पहिले छुट्टी भिन्न भई बसेको भन्ने नदेखिएको र एकासगोलका अंशियार देखिएको अवस्थामा फिराद परेको अघिल्लो दिन मिति २०६९।४।२२ लाई नै मानो छुट्टिएको मिति कायम गरी तायदाँती फाँटवारीमा पेस भएको सम्पत्तिबाट यी प्रत्यर्थी वादीहरूले माग दाबी अनुसार अंश छुट्ट्याइलिन पाउने नै देखियो । अतः वादी प्रतिवादीले तायदाती फाँटवारीमा देखाएको सम्पत्ति विवरणमा ऋणको हकमा कानूनबमोजिम हुने भएकाले सोबाहेक गरी बाँकी चल अचल सम्पत्तिको ७ भागको ३ भाग अंश वादीहरूले पुनरावेदक प्रतिवादीबाट बन्डा छुट्याई लिन पाउने ठहर गरेको सुरू रोल्पा जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरको फैसलालाई अन्यथा मान्न नमिल्ने ।

सुरू रोल्पा जिल्ला अदालतको मिति २०७१।५।८ को फैसला सदर हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरको मिति २०७३।५।१५

को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत - हेमराज शर्मा

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७९ साल असोज ४ गते रोज ३ शुभम् ।

**२९**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७६-CR-०३५९, कर्तव्य ज्यान र ज्यान मार्ने उद्योग, सुकराम गोले वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादी सुकराम गोले र बुद्धबहादुर गोलेबिच विवाद भई झगडा हुँदा आमा र बुद्ध गोले चुलोमा बसी खाना पकाइरहेको समयमा सुकराम गोलेले पेट्रोलको बोतल ल्याई आमा र भाइ बुद्ध गोलेको शरीरमा छर्किँदा चुलोको आगोले भेटेर निजहरूको शरीरमा आगो लागी घाइते भएकाले कीर्तिपुर अस्पतालमा उपचार भइरहेको अवस्थामा आमा भिममायाको मृत्यु भएको र भाइ बुद्ध गोले घाइते भएको भन्ने सोमबहादुरको जाहेरी दरखास्त परेको देखिन्छ । घटनाको प्रत्यक्षदर्शी प्रतिवादीको बहिनी प्रमिला गोलेले मौकामा कागज गर्दा दाइहरू पहिले पनि वादविवाद झैझगडा गर्ने, वृद्ध बाबु आमालाई समेत यी प्रतिवादीले गालीगलौज गर्ने र कुटपिटसमेत गर्ने गर्दथे, वारदातका दिन दाजु बुद्ध र निज सुकरामका बिच वादविवाद हुँदा सुकरामले पेट्रोलको बोतल झोलाबाट झिकी बुद्ध र आमालाई छर्केको कारणले किचनमा बलिरहेको आगोले आमासमेत जली घाइते भएको हो भनी लेखाएको र सोही बेहोरालाई समर्थन गरी अर्का प्रत्यक्षदर्शी जो घटनामा घाइतेसमेत भएका बुद्धबहादुर गोलेले मौकामा कागज गरिदिएको देखिन्छ । प्रतिवादी स्वयम्ले अधिकार प्राप्त अधिकारी तथा अदालतमा बयान गर्दा दाजु बुद्ध गोलेसँग झगडा भई घरमा ल्याई राखेको पेट्रोलको बोतल समाती निज बुद्ध गोलेको शरीरमा खन्याउन खोज्दा आमा बहिनी र आफ्नोसमेत शरीरमा परी नजिकै रहेको चुलोको आगोले भेटाई चारै जनाको शरीरमा आगलागी भएको र आफूले आगो निभाई भागेको, आमा र दाजु बुद्ध गोले घाइते भई उपचारको क्रममा आमाको मृत्यु भएको तथ्य स्वीकारी जाहेरी बेहोरा समर्थित साबिती बयान गरेको पाइन्छ । मृतक भिममायाको मृत्यु कारण Burn injury बाट भएको भन्ने मिसिल संलग्न पोष्टमार्टम रिपोर्टबाट समेत देखिँदा जाहेरी दरखास्तबमोजिमको वारदात भई यी पुनरावेदक प्रतिवादीको काम व्यवहारबाट आमा भिममायाको मृत्यु भएको र बुद्धबहादुर गोले घाइते भएको भन्ने तथ्य पुष्टि भएको देखिन आयो । निज प्रतिवादी सुकाराम गोलेले पहिले पनि घरमा झैझगडा गर्दैआएको भन्ने देखिन्छ । उमेर पुगेका, मानसिक अवस्था स्वस्थ र होस ठेगानमा भएका यी पुनरावेदक/प्रतिवादीले नजिकै आगो बलिरहेको ठाउँमा अति प्रज्वलनशील पदार्थ पेट्रोल छर्किँदा आगलागी हुन सक्छ भन्ने कुराको जानकारी हुँदाहुँदै गरेको उक्त कार्यलाई निज प्रतिवादीले जिकिर गरे अनुसार भवितव्यबाट मात्रै घटना घट्न पुगेको हो भनी मान्न नमिल्ने ।

पुनरावेदक/प्रतिवादीको मौकाको बयान, किटानी जाहेरी दरखास्तको बेहोरा, पोष्टमार्टम रिपोर्ट, मौकामा कागज गर्ने चश्मदिद गवाह निजको बहिनी प्रमिला गोले र मृतक भिममायाको मृत्यु हुनुअघिको मौकाको कागजसमेतका घटना वारदातका सम्बन्धमा स्वाभाविक रूपमा प्रस्तुत भएका मिसिल संलग्न प्रमाण कागजहरूबाट यी पुनरावेदक/प्रतिवादीउपरको कसुर कायम गरी सजाय गरेको सुरू ललितपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।२।१५ मा भएको फैसलालाई सदर गरी प्रतिवादी सुकराम गोलेलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद गरेकोमा हाल प्रचलित मुलुकी अपराध (संहिता) ऐन, २०७४ को दफा ४०(२) समेतको आधारमा सर्वस्वको सजाय गर्न नमिल्ने हुँदा निज प्रतिवादी सुकराम गोलेलाई जन्मकैदको मात्र सजाय हुने र ऐ.१५ नं. बमोजिम ५ (पाँच) वर्ष कैदको सजाय हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत पाटनबाट मिति

२०७५।११।२७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत - हेमराज शर्मा

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०८० साल भदौ २९ गते रोज ६ शुभम्।

## ३०

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७४-CI-०१७२, राजीनामा लिखत दर्ता बदर, वीरेन्द्र बनियासमेत वि. तुल्सीराम बनियासमेत*

प्रमाणमा रहेको मुद्दा नं. ०७२-CP-०१४५ को अंश मुद्दाको फैसलाबाट अंशियारबिच बन्डा गर्नुपर्ने आधाभन्दा बढी नै सम्पत्ति बाँकी नै रहेको देखिएकोले प्रत्यर्थी प्रतिवादी तुल्सीराम बनियाले अर्का प्रत्यर्थी प्रतिवादी जितेन्द्र बरईसँग गरेको उल्लिखित व्यवहार अंशबन्डाको १९(१)नं. ले निर्दिष्ट गरेको कानूनी व्यवस्थाको सीमा र परिधिअन्तर्गत नै रही गरेको देखियो । यस अवस्थामा सगोलको बन्डा गर्नुपर्ने सम्पत्ति आधाभन्दा बढी नै बाँकी रहेको अवस्थामा प्रत्यर्थी प्रतिवादी तुल्सीराम बनियाले घर व्यवहार चलाउन गरेको उल्लिखित व्यवहार गर्दा तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन लेनदेन व्यवहारको १० नं. ले यी पुनरावेदक वादीहरूको मन्जुरी लिनुपर्ने अवस्था देखिएन। कानूनले नै घरको मुख्य भई काम गर्ने व्यक्तिलाई व्यवहार चलाउन अचल सम्पत्तिको हकमा आधीसम्म खर्च गर्न छुट दिएको अवस्थामा यी पुनरावेदक वादीहरूका पति पिता तुल्सीरामले जम्मा सम्पत्तिको आधाभन्दा कम घर खर्चबापत रु.२९,९५,०००।– लिई जितेन्द्र बरईलाई राजीनामा पारित गरिदिएको मा उक्त जग्गा बिक्रीबाट आएको रकम आफूहरूले नपाएको नखाएको वा आफ्नो कुनै व्यवहार चलेन भन्ने वादीहरूको दाबी जिकिरसमेत रहेको नदेखिने।

घर व्यवहार चलाउने मुख्य मानिसले अचल सम्पत्तिको आधीसम्म आफ्नो खुस गर्न पाउँछ, यस स्थितिमा उक्त बिक्री व्यवहार गरेको लाई पत्नी छोराको मन्जुरी लिनु पर्दैन भनी पुनरावेदक प्रतिवादी खामना खातुनसमेत विरुद्ध प्रत्यर्थी वादी साधु नदाफ मियासमेत भएको लिखत दर्ता बदर दर्ता मुद्दामा ने.का.प. २०४१, नि.नं.२०२९, पृष्ठ ५४, अङ्क ६ मा र घर खर्च भनी रूपियाँ लिई बिक्री गरेको घर व्यवहार चलाउन लिएको सम्झनुपर्छ भनी पुनरावेदक प्रतिवादी रत्नादेवी खड्कासमेत विरुद्ध प्रत्यर्थी वादी रुन्चे थारुसमेत भएको लिखत बदर मुद्दामा ने.का.प. २०५५, नि.नं. ६५२५, पृष्ठ १६८, अङ्क ३ मा सिद्धान्त प्रतिपादित भएको पाइन्छ। तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, लेनदेन व्यवहारको १० नं. अनुसार आफूखुसी गर्न पाउनेबाहेकको सम्पत्तिमा मात्र सगोलका अंशियारहरूको हकजति फिर्ता हुन्छ। आफूखुसी गर्न पाउने सम्पत्तिमा सगोलका अन्य अंशियारहरूको मन्जुरी लिन नपर्ने अवस्था देखिन्छ। तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन लेनदेन व्यवहारको १० नं. को व्याख्या गर्दा सोही ऐनको अंशबन्डाको १९ नं.को समग्र परिवेश वा सान्दर्भिकतालाई बेवास्ता गरी व्याख्या गर्न नमिल्ने।

वादीहरूको फिराद दाबी अनुसार पारित राजीनामा लिखत ९ भागको ८ भाग बदर हुने ठहर्‍याई कपिलवस्तु जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३।०२।०९ मा भएको फैसला बदर गरी वादीहरूको फिराद दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याएको उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासको मिति २०७४।०१।२५ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : यज्ञमूर्ति ज्ञवाली

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०८० साल जेठ १७ गते रोज ४ शुभम्।

## ३१

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७८-CR-०२५२, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. सरला रसाइली विष्टसमेत*

प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरू सरला रसाइली

विष्ट, सुमा गुरूङ, रामप्रसाद पराजुली, सुजाता के.सी क्षेत्री र शान्तिकुमारी जिमीले आफूहरूले सुरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बयान गर्दा अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेकोमा इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ । जाहेरवाला सुनिता आचार्यले जाहेरी दिँदा र सुरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बकपत्र गर्दासमेत यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूले आफूलाई वैदेशिक रोजगारमा जापान लैजान्छु भनी आश्वासन दिएको र सोका लागि विश्वास दिलाएको भन्नसमेत सकेको अवस्था देखिँदैन । यी प्रतिवादीहरू र जाहेरवालाबिच भेटघाट भएको र सञ्चार माध्यमबाट कुरा भएको भन्नेसमेत मिसिल संलग्न कुनै पनि प्रमाण कागजातबाट देखिँदैन । जाहेरवाला सुनिता आचार्यले गरेको बकपत्रमा प्रतिवादी गोविन्द तिवारीलाई मात्र चिनेको भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ । यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरू सरला रसाइली विष्ट, कृष्ण रसाइली, सुमा गुरूङ, रामप्रसाद पराजुली, सुजाता के.सी. क्षेत्री, शान्तिकुमारी जिमीलाई चिनेको वा वैदेशिक रोजगारमा पठाउन निजहरूले आफूलाई आश्वासन दिएको भनी किटानीसाथ लेखाउन सकेको पाइँदैन । यी प्रतिवादीहरू आरोपित कसुरमा इन्कार रही बयान गरेका र निजहरूको उक्त इन्कारीलाई जाहेरवाला र प्रतिवादीहरूका साक्षीहरूले गरेको बकपत्रबाट पुष्टि भएको देखिन्छ। प्रतिवादी गोविन्द तिवारीले भनेबमोजिम अन्य प्रतिवादी सरला रसाइली विष्ट, कृष्ण रसाइली, सुजाता के.सी. क्षेत्री, सुमा गुरुङ, रामप्रसाद पराजुली र शान्तीकुमारी जिमीको बैङ्क खातामा रकम जम्मा गरिदिएको भनी जाहेरवाला स्वयम्ले आफ्नो जाहेरी र वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा गरेको कागजमा उल्लेख गरेको र सोही बेहोरालाई यी प्रतिवादीहरूले समेत स्वीकारी गोविन्द तिवारीले भनेका व्यक्तिहरूको नाउँमा उक्त रकम दाखिला गरी दिइसकेको मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिन्छ । मिसिल संलग्न कागजातबाट यी प्रतिवादीहरूले जाहेरवालासमेतलाई वैदेशिक रोजगारमा जापान पठाउन अर्का प्रतिवादी गोविन्द तिवारीसँग मिलेमतो गरी रकम लिएको भन्ने वस्तुनिष्ठ रूपमा पुष्टि हुन सकेको पाइँदैन । यस अवस्थामा यी प्रतिवादीहरूसमेतले जाहेरवालीलाई वैदेशिक रोजगारमा जापान पठाउन रकम लिएको भन्ने पुष्टि हुन सकेको नदेखिँदा वादी नेपाल सरकारले यी प्रतिवादीहरूउपर दाबी लिएको अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर स्थापित हुन नसक्ने ।

प्रतिवादीहरू सरला रसाइली विष्ट, कृष्ण रसाइली, सुजाता के.सी. क्षेत्री, सुमा गुरुङ, रामप्रसाद पराजुली र शान्तीकुमारी जिमीले अभियोग दाबी अनुसारको कसुर गरेको पुष्टि हुने वस्तुनिष्ठ प्रमाणको अभाव देखिँदा निज प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने र मिसिल संलग्न रहेका रसिद भरपाई अनुसारको बिगो र सोको पचास प्रतिशतले हुने हर्जाना रकमसमेत जाहेरवालाले प्रतिवादीमध्येका गोविन्द तिवारीबाट भराइलिन पाउने ठहऱ्याई सुरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७७।१२।०३ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : यज्ञमूर्ति ज्ञवाली

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०८० साल वैशाख २१ गते रोज ५ शुभम् ।

**३२**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७६-CR-०२८८, किर्ते जालसाजी, रविन्द्र बनिया वि. जितेन्द्र बरईसमेत*

यिनै पुनरावेदक वादी रविन्द्र बनियाका पिता तुल्सिराम बनियाले यिनै प्रत्यर्थी प्रतिवादी जाकिर हुसेन मुसलमानलाई मिति २०७१।०७।१३ मा लेखिदिएको वारेसनामामा लागेको सहीछाप पिता तुल्सीरामको होइन, प्रतिवादीहरू जितेन्द्र बरई र जाकिर हुसेन मुसलमानको मिलेमतोमा नक्कली तुल्सीराम खडा गरी वारेसनामा किर्ते गरेका हुन् भनी पुनरावेदक वादी रविन्द्र बनियासमेतले फिराद दाबी लिएको मा उक्त मिति २०७१।०७।१३ को वारेसनामा आफूले प्रतिवादी जाकिर हुसेन मुसलमानलाई नदिएको

वा उक्त वारेसनामामा लागेको ल्याप्चे सहीछाप आफ्नो नभएकोले बदर हुनुपर्ने भनी उक्त वारेसनामा बदरतर्फ वारेसनामा लेखी सहीछाप गरिदिने वादीका पिता तुल्सीराम बनियाले कहीँकतै उजुरी गरेको देखिँदैन । यसरी जुन व्यक्तिको हस्ताक्षर र सहीछापलाई किर्ते जालसाजी भनी दाबी गरिएको छ । सो व्यक्तिले नै अधिकारप्राप्त निकायमा कुनै उजुरबाजुर नगरी उक्त वारिसनामा र सोमा लागेको सहीछापलाई स्वीकार गरी बसेको अवस्थामा तेस्रो व्यक्ति यी पुनरावेदक वादी रविन्द्र बनियाले कुनै आधार प्रमाणविना प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूले नक्कली तुल्सीराम बनिया खडा गरी किर्ते जालसाजी तवरले मिति २०७१।०७।१३ को वारेसनामाको लिखत खडा गरेका हुन् भन्ने वादी दाबी कानूनसङ्गत देखिँदैन । तसर्थ किर्ते जालसाजी गरे भन्ने वादीको फिराद दाबी पुग्न नसक्ने ठहऱ्याएको सुरू फैसला सदर हुने गरी उच्च अदालतबाट भएको फैसला अन्यथा नभई मिलेकै देखिँदा पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिर एवं सोतर्फबाट उपस्थित विद्वान् कानून व्यवसायीहरूको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसक्ने ।

सुरू कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको मिति २०७३।०२।०९ को फैसला सदर हुने गरी उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट मिति २०७४।०१।२५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : यज्ञमूर्ति ज्ञवाली

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०८० साल जेठ १७ गते रोज ४ शुभम् ।

**३३**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७९-WH-०१९८, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, शिवकुमार माझी वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत*

रिट निवेदकले निवेदनमा आफूलाई फैसलाको बारेमा जानकारी नभएको, उक्त फैसलाउपर एक तह पुनरावेदन गर्न पाउने पुनरावेदकीय अधिकार हुँदाहुँदै पुरावेदनको म्याद नदिएकोले आफू थुनामा जानुपरेको, कानूनबमोजिम पुनरावेदनको म्याद बाँकी छँदै हतारमा विपक्षी प्रहरी कार्यालयले पक्राउ गरेको र काठमाडौं जिल्ला अदालत, लगत शाखाले थुनामा राख्न पठाएको मिलेन भनी जिकिर लिएको सन्दर्भमा हेर्दा निज निवेदक प्रतिवादीउपर चलेको बैंकिङ कसुर मुद्दामा निजलाई लागेको जरिवाना रु.१,२०,००,०००।- रहेकोमा निज वादी थुनामा रहेको अवधि २ महिना २८ दिन प्रतिदिन रु.३००।- का दरले रु.२६,४००।- कटाएर रु. १,१९,७३,६००।- कायम भएको देखिन्छ र उक्त जरिवाना निवेदक प्रतिवादीले दाखिला गरेको भने पाइँदैन । तथापिः नेपाल सरकार वादी भई चल्ने बैङकिङ्ग कसुर मुद्दामा एक तह पुनरावेदन गर्न पाउने कानूनी अधिकार प्रतिवादीलाई रहेको भए तापनि सो अधिकारको उपभोगका लागि उक्त फैसलामा निज प्रतिवादीलाई पुनरावेदनको म्याद दिने सम्बन्धमा कुनै बेहोरा उल्लेख भएको पाइँदैन । रिट निवेदक प्रतिवादीले पुनरावेदनको म्याद पाएका मितिबाट ६० दिनभित्र पुनरावेदन गर्न सक्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । उच्च अदालतको फैसलाको तपसिल खण्डमा फैसलामा चित्त नबुझेमा कानूनबमोजिम पुनरावेदन गर्न प्रतिवादीलाई पुनरावेदनको म्याद दिनु भन्ने बेहोरा उल्लेख नभएका कारण मुलुकी फौजदारी कार्याविधि संहिता, २०७४ को दफा १३४(१) बमोजिम प्रतिवादीले पुनरावेदन गर्ने अवसरबाट वञ्चित भएको देखिने ।

उच्च अदालत पाटनको फैसलाले कैद जरिवानाको सजाय ठहर भएको देखिएको र जरिवाना असुल हुन बाँकी रहेको अवस्थामा उक्त जरिवानाबापतको नगद, जमानत वा जेथा दिन नसके अधिकतम १० वर्षसम्म कैद हुन सक्ने अवस्था रहेकोमा निजलाई एक तह पुनरावेदन गर्न पाउने पुनरावेदकीय कानूनी अधिकारबाट वञ्चित गर्नु फौजदारी न्याय प्रणालीको बर्खिलाप हुनुको अलावा

किटानी कानूनी व्यवस्थासमेत विपरीत हुन भएको देखियो। अत: यी निवेदकले उच्च अदालत पाटनको मिति २०७९।०३।३१ को फैसलाउपर न्याय प्रशासन ऐन, २०७३ को दफा ९(१)(क) तथा मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को १३४ बमोजिम पुनरावेदन गर्न पाउने देखिँदा पुनरावेदकीय हकको रक्षार्थ उल्लिखित बैंकिङ कसुर मुद्दामा पुनरावेदन गर्नलाई पुनरावेदन गर्ने अदालतको नामसमेत खोली यी निवेदकलाई निज थुनामा रहेको कारागारमा यथाशीघ्र पुनरावेदनको म्याद दिनु भनी उच्च अदालत पाटनका नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने।

निवेदकउपर चलेको बैंकिङ कसुर मुद्दामा उच्च अदालत पाटनको फैसलाले लागेको जरिवाना नबुझाएको र सोही जरिवानासमेतको फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा साधिकार निकायबाट निवेदकलाई थुनामा राख्न पठाएकोले उक्त थुनालाई गैरकानूनी थुना भनी मान्न नमिल्ने हुँदा निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहन नपर्ने।

इजलास अधिकृत - इन्दिरा कार्की गेलाल

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०८० साल वैशाख १५ गते रोज ६ शुभम्।

३४

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७४-RB-०००८, आयकर (आ.व. ०६५/०६६), कृष्णप्रसाद पराजुली वि. इस्टर्न प्लाष्टिक इन्डस्ट्रिज प्राइभेट लिमिटेड छातापिपरा, बारा*

संशोधित कर निर्धारण गर्ने आन्तरिक राजस्व कार्यालय बाराबाट आयकर ऐन, २०५८ को दफा १०१ बमोजिम संशोधित कर निर्धारण गरी सोही दफा १०१ को उपदफा (६) बमोजिम करदातालाई जानकारी दिएको भन्ने देखिन्छ । आयकर ऐन, २०५८ को दफा १०१ को उपदफा (१) ले यस ऐनको उद्देश्यबमोजिम न्यायोचित आधारमा समायोजन गर्न संशोधित कर निर्धारण गर्नसक्ने भन्ने र उपदफा (६) मा यस दफाबमोजिम कर निर्धारणमा संशोधन गर्दा स्पष्ट आधार खुलाएर करदातालाई समेत सूचना दिनुपर्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ । यसबाट संशोधित कर निर्धारण गर्दा न्यायोचित आधारमा स्पष्ट आधार खुलाएर कर निर्धारण गरी सो सम्बन्धमा करदातालाई सफाइको सबुतसमेत पेस गर्न सूचना दिनुपर्ने देखिन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा करदाताको संशोधित कर निर्धारण गर्दा स्थानीय बिक्री मूल्य कायम गर्दा स्पष्ट आधारविना कायम गरेको र सो सम्बन्धमा करदाताले पेस गरेको जवाफको कुनै विश्लेषण नै नगरी थप बिक्री कायम गरी करदाताको आयमा थप रकम समावेश गर्ने निर्णय गरेको देखियो। अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा प्रतिस्पर्धा गर्न कहिलेकाहीँ स्थानीय बजारको दरभन्दा कम दरमा निर्यात (export) गर्नुलाई स्वाभाविक पनि मान्नुपर्ने हुन्छ । तर त्यसको स्पष्ट आधार र कारण भने देखाउनुपर्दछ। प्रस्तुत मुद्दामा निर्यातको दर कम भए पनि लागत मूल्यभन्दा कम रकममा बेचेको छैन भन्ने करदाताको दाबीलाई कर कार्यालयले खण्डन गर्न सकेको छैन। यस अवस्थामा घटी दरमा export गरेको भन्ने आधार लिई भएको संशोधित कर निर्धारणको निर्णय कानूनसम्मत नदेखिने।

प्रत्यर्थी / करदाता इष्टर्न प्लाष्टिक इन्डस्ट्रिज प्राइभेट लिमिटेडले गत वर्ष तयारी वस्तु मौज्दातमा राखेकोमा यस वर्ष सो तयारी वस्तुलाई Scrap भएको भनी बीजक जारी गरी बिक्री गरेको र के कस्तो कारणबाट Scrap भएको हो भनी खुलाउन नसकेकोले HDPE Pipe प्लाष्टिकको समान सड्ने गल्ने तथा कुहिने सामान नभएकाले एक वर्षमै Scrap हुन सक्दैन भनी पुनरावेदक आन्तरिक राजस्व कार्यालय बाराको पुनरावेदन जिकिर रहेको देखिन्छ । यस सम्बन्धमा सुरू कर निर्धारणको निर्णय हेर्दा HDPE Pipe को सुरू मौज्दात २३४५०.४५ के.जी.मध्ये अन्तिम मौज्दात ९७९७.०७ के.जी. र बिक्री ५४११.७३० के.जी. देखिई ८२४१.६६ के.जी. Missing

देखिएकाले सोको औसत बिक्री मूल्य रु.२६।५५ को दरले हुन आउने रकम रु.२,१८,८१६।- आयमा थप समावेश गर्नुपर्ने भनी उल्लेख भएको देखिन्छ । यस सम्बन्धमा कर निर्धारणउपरको करदाताको जवाफमा HDPE Pipe उत्पादन गर्ने सम्पूर्ण Plant नै बिक्री गरेको हुनाले सो बखत स्टकमा रहेको साइज नमिलेको कवाडी प्राय: भइसकेको HDPE Pipe समेत बिक्री गरेको भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ । यसरी HDPE Pipe उत्पादन गर्ने सम्पूर्ण Plant नै करदाताले बिक्री गरेको हुनाले सोबखत स्टकमा रहेको साइज नमिलेको कवाडी प्राय: भइसकेको सामान कवाडी मूल्यमा बिक्री गरेको भन्ने करदाताको जवाफलाई अस्वाभाविक मान्न सकिँदैन । यी करदाताले राजस्व न्यायाधिकरणमा दिएको पुनरावेदनमा सो कुराका साथै HDPE Pipe कबाडको रूपमा बिक्री गरी सोमा मूल्य अभिवृद्धि कर असुल गरेको र सोलाई स्वीकार गर्ने तर वास्तविक प्राप्तिभन्दा थप रकम आयमा समावेश गरेको त्रुटिपूर्ण छ भन्ने जिकिर लिएको पाइन्छ । करदाताले HDPE Pipe Scrap value मा बिक्री गरी बीजक जारी गरी मूल्य अभिवृद्धि कर असुल गरेकोलाई पुनरावेदक कार्यालयले अन्यथा भन्न सकेको पनि देखिँदैन । मालसामान बिक्रीको बीजक जारी गरेको अवस्थामा सो बीजकमा उल्लेख भएको मूल्यमा सामान खरिद बिक्री भएको मान्नुपर्ने हुँदा बीजकमा लेखिएकोभन्दा बढी रकममा बिक्री गरेको भन्न मिल्ने नदेखिने।

PVC Resin परल मूल्यभन्दा घटी मूल्यमा बिक्री गर्नुपर्नाको औचित्यपूर्ण कारण करदाताले दिन नसकेकोले आयमा थप रकम समावेश गर्ने कर निर्धारणको निर्णय कानूनसम्मत रहेको भन्ने पुनरावेदक कार्यालयको जिकिर रहेको देखिन्छ। संशोधित कर निर्धारण सम्बन्धमा पुनरावेदक कार्यालयबाट भएको निर्णय हेर्दा, Pipe Resin ६०,००० के.जी. रु.४२,५७,९००।०० मा खरिद गरी रु.३८,७८,९००।०० मा बिक्री गरेको पाइयो । परल मोलभन्दा घटी मूल्यमा बिक्री गर्नुपर्ने कारण कर परीक्षणका बखत पेस हुन आएन। यस आ.ब.को औसत मूल्य अभिवृद्धि ८.६९ (कुल नाफाको आधारमा) भएकाले सोही आधारमा माथि उल्लेख गरिएको परिमाणको खरिद रु.४६,२७,९१२।०० मा बिक्री हुनुपर्ने भएकाले बिक्रीमा समावेश भएको रकमबाट फरक परेको रकम रु.७,४९,०१२।- करदाताको आयमा थप समावेश गर्ने निर्णय भएको देखिन्छ । यस सम्बन्धमा संशोधित कर निर्धारणको सूचनाको जवाफमा Resin Pipe को अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा हुने मूल्यको उतार चढावको कारणले बिक्री गर्दाको बखत प्रचलित बजार मूल्यमा बिक्रेताले आफ्नो वस्तु बिक्री गर्नुपर्ने हुन्छ । कुन सामान के कति दररेटमा बिक्री गर्ने भन्ने अधिकार बिक्रेतामाथि हुन्छ। बिक्रेताले प्रचलित मूल्यभन्दा बढी मूल्यमा आफ्नो सामान बिक्री गर्न पाउँदैन । बिक्रेताले कर बीजक जारी गरी बिक्री गरेको सामानलाई अमुक अङ्कमा बिक्री गरेको भनी काल्पनिक अङ्क बनाई खुद आयमा समावेश गर्न नमिल्ने भन्ने बेहोरा उल्लेख भएको देखिन्छ । पुनरावेदक कार्यालयले संशोधित कर निर्धारण गर्दा करदाताको जिकिरलाई खण्डन गर्न सकेको देखिँदैन। यी करदाताले कुनै बीजकबमोजिमको रकम आयमा समावेश नगरेको वा बीजकमा देखाएको मूल्यभन्दा कम रकम आयमा देखाएको अवस्था रहेको भनी पुनरावेदक कार्यालयले पुष्टि गर्न सकेको पनि देखिँदैन । यसरी परल मूल्यभन्दा घटी मूल्यमा बिक्री भएकोले थप बिक्री आय अनुमान गरी थप रकम आयमा समावेश गर्नुपर्ने भन्ने दाबी लिने कर कार्यालयले सो दाबी निर्विवाद रूपमा पुष्टि गर्न सक्नुपर्छ । अन्यथा बीजकले देखाएको बिक्री रकमबाहेक विनाआधार र कारण थप बिक्री कायम गरी कर निर्धारण गर्न नमिल्ने।

आन्तरिक राजस्व कार्यालय, सिमराबाट मिति २०६७।०३।२५ मा भएको निर्णय र सो निर्णयलाई सदर गर्ने गरेको आन्तरिक राजस्व विभागको मिति २०६७।१०।०३ को निर्णयमा PVC Pipe र PVC Fitting, HDPE scrap, PVC Resin शीर्षकको आयमा थप रकम समावेश गर्ने गरी

संशोधित कर निर्धारण गरेको निर्णय मिलेको नदेखिँदा सो हदसम्म उल्टी हुने ठहऱ्याई राजस्व न्यायाधिकरण, काठमाडौंबाट मिति २०७०।०२।२७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत :- टिकाबहादुर थापा / सुभद्रा जि.सी.

कम्प्युटर - मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७९ साल मङ्सिर २९ गते रोज ५ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०७४-RB-०००९, मूल्य अभिवृद्धि कर (आ.व.२०६६ असार), कृष्णप्रसाद पराजुली वि. इष्टर्न प्लाष्टिक इन्डस्ट्रिज प्राइभेट लिमिटेड छातापिपरा, बारा भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

## ३५

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७३-CR-०९६६, खुन डाँका, नेपाल सरकार वि. भिमबहादुर राईसमेत*

पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूले मौका र अदालतमा बयान गर्दा आरोपित कसुरमा इन्कारी रही बयान गरे तापनि डाँका चोरी तथा कर्तव्य ज्यान कसुरमा यी पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूउपर मौकामा किटानी जाहेरी दिने दानबहादुर राईले भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई र ताराबहादुर राईसमेतका व्यक्तिहरूले आफू र आफ्नी श्रीमतीलाई बाधी आफ्नो घरमा डाँका गर्ने क्रममा मनराज सुनुवारलाई धारिलो हतियार प्रयोग गरी हत्या गरेको हुन् भनी मौकामा किटानी जाहेरी दिएको देखिन्छ र उक्त जाहेरी बेहोरालाई समर्थित हुने गरी बकपत्रसमेत गरेको पाइन्छ । प्रस्तुत वारदातको प्रत्यक्षदर्शी एवं जाहेरवालाकी श्रीमती जानकी राईले मनराज सुनुवारको हत्यासमेत गरी आफ्नो घरमा डाँका गर्ने व्यक्तिहरूमध्ये यी प्रतिवादीहरूलाई मैले चिनेको भनी गरिदिएको घटना विवरण कागज समर्थित हुने गरी अदालतमा आई बकपत्र गरेको देखिन्छ । त्यस्तै गरी, यी पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूले डाँका गर्न गएको अवस्थामा जाहेरवाला तथा घटना विवरण कागज गर्ने जानकी राईसमेतलाई कुटपिट तथा हतियारले घाँटीमा काटी घाइतेसमेत बनाएको कुरा निजहरूको मिसिल संलग्न रहेको घा जाँच केस फारामबाट देखिन्छ भने मृतक मनराज सुनुवारको शव परीक्षण प्रतिवेदन हेर्दा, निज मृतकको मृत्युको कारण Cause of death मा Due to head injury and excess blood loss भनी उल्लेख भएको पाइन्छ । घटना विवरण कागज गर्ने संगिता राईको मौकाको कागज हेर्दा उक्त वारदातमा रहेका मानिसहरूमध्येका एक जनाले निलो ट्र्याक, स्वीटर, भेडाको ऊन भएको टोपी लगाएको थियो भनी उल्लेख गरिदिएकोमा प्रतिवादीमध्येका चमारसिह राईले पनि मौकामा बयान कागज गर्दा निलो ट्र्याक, स्वीटर, सर्ट र कालो मोटो भेडाको ऊन भएको टोपी लगाएका थिए भनी बयान कागज गरेकोसमेत पाइन्छ । माथि विश्लेषण गरिएको मिसिल संलग्न मौकाको किटानी जाहेरी, जाहेरवाला तथा घटना देख्ने तथा घटनाबाट घाइते हुने प्रत्यक्षदर्शीको बकपत्र, प्रतिवादीहरूको अनुसन्धान अधिकारी र अधिकारीसमक्ष Alibi का सम्बन्धमा गरेका परस्पर बाझिएका बयानसमेतका आधार प्रमाणबाट यी प्रतिवादी भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई तथा ताराबहादुर राईले मृतक मनराज सुनुवारलाई धारिलो हतियार प्रयोग गरी कर्तव्य गरी मारी मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १ र १३ नं.को कसुर गरेको स्थापित हुन आयो । यस्तो स्थितिमा यी प्रतिवादी भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई र ताराबहादुर राईलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(१) नं. बमोजिमको कसुर अपराधमा सोही महलको १३(१) नं. बमोजिम सजाय गर्नुपर्नेमा सुरू खोटाङ्ग जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला केही उल्टी गरी यी पुनरावेदक/प्रतिवादीहरू भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई र ताराबहादुर राईले कर्तव्य ज्यानतर्फको अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७३।०५।२० को फैसला मिलेको नदेखिने ।

प्रतिवादीहरू भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई तथा ताराबहादुर राईलाई डाँकातर्फको कसुरमा समेत अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको र डाँकातर्फ सजाय ठहर गरेको फैसला बदर गरी अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउँ भन्ने प्रतिवादीहरूको पुनरावेदन जिकिरतर्फ हेर्दा, यी पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूले जाहेरवालाको घरबाट रु.३४,३२,०००।- बिगो बराबरको धनमाल डाँका गरेकोमा निज प्रतिवादीहरूलाई मुलुकी ऐन, चोरीको महलको १ र ६ नं. बमोजिमको कसुरमा सोही महलको १४(४) नं. बमोजिम सजाय गरी डाँका भएको बिगो रकम चोरीको महलको १० र २१ नं. बमोजिम जाहेरवालालाई दिलाइपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको डाँका कसुरतर्फको अभियोग दाबी रहेको देखिन्छ । यी पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूले मौका र अदालतमा बयान गर्दा जाहेरवालाको घरमा डाँका गरेको भन्ने अभियोग दाबीमा इन्कारी रहेको र प्रस्तुत वारदातमा जाहेरवालाको घरबाट डाँका भएको भनिएको धनमाल सामान यी प्रतिवादीहरूबाट बरामद भएको मिसिलबाट देखिँदैन । त्यस्तै गरी, वादी नेपाल सरकारको तर्फबाट यी पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूले जाहेरवालाको घरबाट रु.३४,३२,०००।- बिगो बराबरको धनमाल डाँका गरेको भन्नेतर्फको अभियोग पुष्टि हुने कुनै ठोस एवं वस्तुनिष्ठ आधार, प्रमाण पनि पेस गर्न सकेको पाइँदैन । केवल जाहेरवालाको जाहेरीका आधारमा नेपाल सरकारले डाँका कसुरतर्फको अभियोग दाबी पेस गरेको आधारमा मात्र जाहेरवालाको धनमाल सामान यी पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूले डाँका गरी लगेको हो भन्ने अनुमान गरी प्रतिवादीहरूलाई डाँकातर्फको कसुरमा सजाय गर्न मिल्ने नदेखिँदा यी प्रतिवादीहरू भिमबहादुर राई, चमारसिह राई र ताराबहादुर राईले डाँकाको कसुर गरेको भन्नेतर्फको वादी दाबी पुष्टि हुन आएन । यस्तो स्थितिमा यी प्रतिवादी भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई र ताराबहादुर राईलाई मुलुकी ऐन, चोरीको १४(४) नं. बमोजिमको अभियोग दाबीबाट सफाइ दिनुपर्नेमा सुरू खोटाङ्ग जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला केही उल्टी गरी यी पुनरावेदक/प्रतिवादीहरू भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई र ताराबहादुर राईले जाहेरवाला तथा निजको श्रीमती जानकी राईको सँगसाथमा भएको नगद रु.८७,०००।- सम्म डाँका गरी लगेको देखिएको हुँदा यी प्रतिवादीहरूलाई मुलुकी ऐन, चोरीको १४ नं.को देहाय ४ नं. बमोजिम जनही ६ वर्ष कैद र बिगोको डेढो रु.१,३०,५००।- (एक लाख तिस हजार पाँच सय) रुपियाँ जरिवाना हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७३।०५।२० को फैसला मिलेको देखिन नआएकोले उक्त फैसला सो हदसम्म बदर भई पुनरावेदक प्रतिवादीहरूले डाँका चोरीको अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्छ । डाँका चोरीको अभियोग दाबीबाट प्रतिवादीहरूले सफाइ पाएको हुँदा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम नै डाँका गरेको कसुरमा सजाय गरिपाउँ भन्ने नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर मिसिल संलग्न आधार प्रमाणबाट पुष्टि हुन नआएकोले नेपाल सरकारको सो हदसम्मको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादीहरू भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई र ताराबहादुर राईलाई कर्तव्य ज्यान कसुरतर्फ मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने र डाँका कसुरतर्फको अभियोग दाबीबाट निज प्रतिवादीहरूले सफाइ पाउने ठहरी भएको सुरू फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरूले कर्तव्य ज्यान कसुरमा अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने र यी प्रतिवादीहरूलाई डाँका चोरीतर्फको कसुरमा मुलुकी ऐन, चोरीको १४(४) नं. बमोजिम जनही ६ वर्ष कैद र बिगोको डेढो रु.१,३०,५००।- (एक लाख तिस हजार पाँच सय) रुपियाँ जरिवाना हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत, राजविराजको मिति २०७३।०५।२० को फैसला मिलेको नदेखिँदा उक्त फैसला बदर भई कर्तव्य ज्यानको कसुरमा प्रतिवादीहरू भिमबहादुर

राई, चमारसिंह राई र ताराबहादुर राईलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिमको सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्छ । तथापि, मिति २०७५।०५।०१ देखि लागु भएको मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) मा "कानूनमा कुनै कसुरबापत सर्वस्वको सजाय हुने रहेछ भने यो संहिता प्रारम्भ भएपछि त्यस्तो कसुरमा सजाय गर्दा सर्वस्व हुने गरी सजाय गरिने छैन" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको र मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ ले विगतमा रहेको सर्वस्वको सजाय गर्ने कानूनी प्रावधानसमेतलाई अन्त्य गरेबाट प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई र ताराबहादुर राईलाई सर्वस्वको सजाय हुने देखिएन । तसर्थ, निज प्रतिवादीहरूलाई तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम जन्म कैदको मात्र सजाय हुने र सर्वस्वको सजाय नहुने भएकोले निजहरूको भागमा पर्न आउने चल अचल सम्पत्ति प्रस्तुत मुद्दाको रोहबाट रोक्का राखिएको भए फुकुवासमेत हुने ठहर्छ । साथै, निज प्रतिवादीहरू भिमबहादुर राई, चमारसिंह राई र ताराबहादुर राईलाई डाँका चोरीतर्फ मुलुकी ऐन, चोरीको १४(४) नं. बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको अभियोग दाबी पुग्न नसकी निजहरूले सो अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ।

इजलास अधिकृत : शिवप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७९ साल माघ १५ गते रोज १ शुभम् ।

**३६**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७१-CI-०५४९, जग्गा खिचोला मेटाई पर्खाल भत्काई निकास खुलाइपाऊँ, रामकुमार श्रेष्ठसमेत वि. रुद्रबहादुर परियार*

मिति २०७०।०२।१८ मा तनहुँ जिल्ला अदालतबाट भइआएको नक्सा मुचुल्काको न.नं. १, ३ प्रतिवादीको जग्गा रहेको देखिन्छ भने न.नं. १२ को जग्गा सुर्यकुमार जोशीको कि.नं. ११८ को जग्गा रहेको देखिन्छ । उक्त नक्सा मुचुल्काबाट यी वादीको कि.नं. ११६ को जग्गा के कुन न.नं.मा रहेको छ भन्ने सन्दर्भमा हेर्दा यी वादीको कि.नं. ११६ र वादी प्रतिवादीको जग्गाको बिचमा रहेको कि.नं. ११८ को जग्गाको दक्षिणतर्फको न.नं. १४ को जग्गा कि.नं. ४२३ को जग्गा रहेको भनी नक्सा मुचुल्काबाट खुल्न आएको देखिन्छ । उक्त कि.नं. ११८ र ४२३ को जग्गामा पर्ने भनिएका न.नं. १२ र १४ का जग्गाहरूसमेत प्रतिवादीले आफ्नो कि.नं. ९३३ भित्रको जग्गा भनी जिकिर लिएको भए तापनि न.नं. १२ मा भएको जग्गामा घरसमेत बनाई सुर्यकुमार जोशीको भोगचलनमा रहेको अवस्था देखिँदा यी प्रतिवादीले सो सम्बन्धमा छुट्टै कुनै कारबाही चलाएको र खिचोला गरेको भनी उजुर गरेको अवस्थासमेत मिसिल संलग्न प्रमाणबाट देखिँदैन । यी प्रतिवादीले कि.नं. ११८, ४२३ र ११६ को जग्गा यो यतातर्फ यस न.नं. भित्र पर्छ भनी देखाउन सकेकोसमेत पाइँदैन । उक्त जग्गाको ट्रेस नक्सा तथा नक्सा प्रिन्टसमेतबाट कि.नं. ११८ कै जग्गा न.नं. १२ अन्तर्गत रहेको र कि.नं. ४२३ को जग्गा न.नं. १४ अन्तर्गत रहेको देखिँदा यी प्रतिवादीको कि.नं. ९३३ को जग्गा अन्तर्गत पर्ने भनी नक्सा मुचुल्काको कैफियतमा लिएको जिकिर पुग्न सक्ने देखिएन । नक्सा प्रिन्टमा कि.नं. ४२३ को पूर्वतर्फ यी वादीको कि.नं. ११६ को जग्गा र नक्सा मुचुल्काको न.नं. १४ को पूर्वतर्फ न.नं. १५ रहेको अवस्था देखिँदा विवादित न.नं. १५ को जग्गा वादीको कि.नं. ११६ अन्तर्गतको नै मान्नुपर्ने देखियो । वादीको कि.नं. ११६ को जग्गाको क्षेत्रफल ०-४-१-२ रहेको जग्गाधनी प्रमाण पुर्जाबाट देखिन्छ भने नक्सा मुचुल्काको विवादित न.नं. १५ को जग्गाको क्षेत्रफलसमेत जग्गाधनी प्रमाण पुर्जाबमोजिमको ०-४-१-२ नै रहेको देखिने ।

तनहुँ जिल्ला अदालतमा प्रस्तुत मुद्दासँग लगाउमा रहेको अन्नपूर्ण क्षेत्री वादी र यिनै पुनरावेदकसमेत प्रतिवादी रहेको नोक्सानी बिगो लुटपिट मुद्दामा तनहुँ जिल्ला अदालतबाट मिति

२०६९।०५।१६ मा भइआएको नक्सा मुचुल्कामा न.नं. १२ को जग्गा कि.नं. ११९ को भनी लेखिएको र प्रतिवादीले उक्त नक्सा मुचुल्कामा वादीको कि.नं. ११६ को जग्गा नै उल्लेख भएको छैन भनी जिकिर लिएको भए तापनि साबिक कि.नं. १०१ कित्ताकाट भई कि.नं. ११६ र ११७ कायम भएको देखिन्छ, सोही कि.नं. ११७ कित्ताकाट भई कि.नं. ११८ र ११९ कायम भएको देखिन्छ । त्यसै गरी उक्त कि.नं. ११९ समेत कित्ताकाट भई कि.नं. १२० र १२१ कायम भएको र तत्पश्चात् पनि उक्त जग्गाहरू कित्ताकाट भई नयाँ कि.नं. कायम हुँदै गएको अवस्था नापी कार्यालय तनहुँको मिति २०७१।०३।८ को प्लट रजिस्टर उतारबाट देखिन्छ। कि.नं. ११९ कित्ता काट भइसकेको अवस्थामा न.नं. १२ मा सोही कि.नं. ११९ को रहेको भनी लेखिएको देखियो। कित्ताकाट नक्सा मुचुल्का गर्दा वादी प्रतिवादीको जग्गाबाहेक नक्साभित्र परेका सम्पूर्ण जग्गाको वास्तविक कि.नं. र क्षेत्रफल मुचुल्का गराउने व्यक्तिहरूलाई यकिन हुने अवस्था नहुन सक्ने तथ्यलाई समेत विचार गर्नुपर्ने हुन्छ। यस अवस्थामा सोलाई नै यथार्थ मान्ने र अन्य प्रमाणले पुष्टि गरेको तथ्यलाई इन्कार गर्न सक्ने अवस्था आउँदैन । उल्लिखित तथ्यहरूबाट उक्त नक्सा मुचुल्काको कैफियत विवरणमा न.नं. १२ को कि.नं. ११९ को भनेको घर जग्गा भनी लेखिएको बेहोरा विश्वसनीय रहेको पाइएन। सो हुँदा ट्रेस नक्सा, नक्सा प्रिन्ट तथा प्लट रजिस्टर उतारसमेतको प्रमाणहरूले पुष्टि गरिरहेको अवस्थामा मिति २०७९।०५।१६ मा भएको नक्सा मुचुल्काको न.नं. १२ को जग्गा यी वादीको कि.नं. ११६ भित्रको जग्गा होइन भनी भन्न सकिने अवस्था देखिएन। उपर्युक्त तथ्य प्रमाणहरूबाट न.नं. १५ को जग्गा वादीको कि.नं. ११६ अन्तर्गतकै हो भन्ने पुष्टि हुने।

पर्खाल भत्काई निकास खुलाइपाउँ भन्ने सन्दर्भमा विचार गर्दा, मिति २०७०।०२।१८ मा भइआएको नक्सा मुचुल्काको न.नं. ७ ढुण्डुबहादुर चुहानले भोग गरेको सार्वजनिक जग्गा, न.नं. ९,११ प्रतिवादीले सार्वजनिक जग्गा च्यापी बनाएको पक्की घर, न.नं. १३ सुर्यकुमार जोशीले भोग गरेको सार्वजनिक जग्गा र न.नं. १६ अर्थात् विवादित न.नं. १५ को उत्तरतर्फको ढकालटार जाने पक्की पिच बाटोसँग जोडिएको मोहडा पट्टिको सार्वजनिक जग्गा रहेको तथ्य नक्साको कैफियत विवरणबाट देखिन्छ। उक्त तथ्यहरूबाट यी वादी तथा प्रतिवादीहरूको विवादित जग्गालगायतमा उल्लिखित जग्गाहरूको बाटो तर्फको मोहडा र पक्की पिच बाटोको बिचमा सार्वजनिक जग्गा रहेको तथ्य पुष्टि हुन आएको छ र उक्त तथ्यमा विवाद रहेकोसमेत देखिँदैन । प्रतिवादीले न.नं. १३ र १६ को सार्वजनिक जग्गामा लगाएको विवादित पर्खाल न.नं. १७ रहेको भन्ने देखिन्छ। कानूनबमोजिम प्राप्त अधिकारबाहेक सार्वजनिक जग्गामा कुनै पनि व्यक्तिले निजी प्रयोजनका लागि प्रयोग गर्ने उद्देश्यले कब्जा गर्ने र त्यस्तो सम्पत्तिमा अरु कसैलाई उपभोग गर्नबाट अवरोध गरी रोकटोक गर्न पाउने अधिकार व्यक्तिगत तवरमा कसैलाई रहेको हुँदैन । तत्कालीन मुलुकी ऐन, घर बनाउनेको महलको ३ नं मा "अघिदेखि चलिआएको वा दिई आएका ठाउँको निकास कसैले थुन्न हुँदैन । अघिदेखि नचलेको वा दिई नआएका ठाउँमा जबरजस्ती गरी लिन, चलन गर्न पनि हुँदैन भन्ने व्यवस्थासमेतबाट चली आएको निकास थुन्न नहुने भनी पहिलेदेखि प्रयोग गरिँदै आएको निकास थुन्न प्रतिबन्ध लगाएको देखिन्छ। माथि विवेचित आधार, प्रमाणबाट न.नं. १५ को जग्गा यी वादीको कि.नं. ११६ को जग्गाअन्तर्गत पर्ने अवस्था देखिएकोले उक्त जग्गाको मोहडातर्फ रहेको न.नं. १६ को सार्वजनिक जग्गासमेतलाई अवरोध पुग्ने गरी न.नं. १७ को पर्खाल यी प्रतिवादीले आफ्नो हक अधिकारको जग्गामा लगाएको नभई बाटो सामुन्नेको सार्वजनिक जग्गामा अनधिकृत रूपमा लगाएको देखियो । प्रतिवादीले आफ्नो भोगको अधिकार नभएको जग्गामा पर्खाल लगाएको कार्यबाट वादीलाई आफ्नो जग्गामा भइरहेको

बाटोको पहुँचबाट वञ्चित गर्ने गरी निकास बाटो बन्द गरेको अवस्था देखियो । कसैले सार्वजनिक जग्गा अनधिकृत रूपमा कब्जा गर्दैमा निजको स्वामित्व स्थापित हुन सक्ने अवस्था हुँदैन। वादीको कि.नं. ११६ को जग्गाको अगाडि सडक बाटो नभई न.नं. १६ को सार्वजनिक जग्गा रहेको र सोबाहेक निजको जग्गाबाट अन्य बाटोको पहुँच नभएको अवस्था देखियो। वादीले आफ्नो जग्गाअगाडि रहेको सार्वजनिक जग्गाबाट नै सडक बाटोसम्म जाने सुविधा भोग गर्दैआएको अवस्था देखियो। यस अवस्थामा उल्लिखित कानूनी व्यवस्था र परापूर्वदेखि प्रयोग गर्दैआएको निकासलाई रोक्न नमिल्ने सुविधाधिकार (Servitude) को सिद्धान्तसमेतबाट वादीको जग्गाको बाटोसँग जोडिने चलन चल्तीमा रहेको निकासलाई अनधिकृत व्यक्तिले अवरोध पुऱ्याउनुलाई न्यायसङ्गत मान्न मिल्ने देखिएन । सार्वजनिक जग्गामा व्यक्तिले आफूखुसी पर्खाल लगाउनुलाई कानूनसङ्गत मानिदैँन। वादीको जग्गाको निकासको रूपमा रहेको सार्वजनिक जग्गामा प्रतिवादीले पर्खाल लगाई वादीको न.नं. १५ को जग्गामा जाने बाटोमा अवरोध सिर्जना गरी गैरकानूनी कार्य गरेको देखिँदा प्रतिवादीले सार्वजनिक जग्गा अतिक्रमण गरी खिचोला गरेको भन्ने देखिन आयो। अतः वादीको कि.नं. ११६ को जग्गाबाट आउने निकास रहेको जग्गामा लगाएको न.नं. १७ को पर्खाल भत्काई वादी दाबीबमोजिम निकास खुलाउनुपर्ने नै देखिने।

वादी रुद्रबहादुर परियारको फिराद दाबीबमोजिम प्रतिवादी रामकुमार श्रेष्ठ, संझनाकुमारी श्रेष्ठ, राजु श्रेष्ठसमेतले खिचोला गरेको ठहर गर्नुपर्नेमा वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहऱ्याई सुरू तनहुँ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।०३।२७ मा भएको फैसला उल्टी गरी वादी रुद्रबहादुर परियारको कि.नं. ११६ क्षेत्रफल ०-४-१-२ को जग्गामा प्रत्यर्थीले पर्खाल लगाई खिचोलासमेत गरेकोले खिचोला मेटाई पर्खाल भत्काई सार्वजनिक निकास बाटो खुलाई चलनसमेत चलाइदिने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०७१।४।२७ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत :- सुभद्रा जि.सी.

फैसला लेखनमा सहयोग गर्ने - गेहेन्द्रराज रेग्मी

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७९ साल साउन १९ गते रोज ५ शुभम्।

**३७**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७९-WH-०२०२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, प्रतिक्षा घिमिरे वि. उर्मिला घिमिरेसमेत*

बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश कुनै व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रता हरण हुने गरी कसैले गैरकानूनी रूपमा बन्दी बनाएमा वा थुनामा राखेमा त्यस्तो थुना वा बन्दी अवस्थाको वैधताको परीक्षण गरी थुना गैरकानूनी देखिएमा जारी हुने हो। यो कानूनबमोजिमबाहेक कुनै पनि व्यक्तिलाई वैयक्तिक स्वतन्त्रताबाट वञ्चित गरिने छैन भन्ने संवैधानिक व्यवस्था एवम् संवैधानिक कानूनको सिद्धान्तमा आधारित रहेको हुन्छ। यो राज्य वा जोसुकैबाट भए पनि कसैलाई गैरकानूनी रूपमा थुनामा राखेको वा बन्दी बनाएको वा थुनामा राख्नुपर्ने कारण देखाउन नसकेको अवस्थामा अदालतबाट बन्दीलाई प्रत्यक्षीकरण गर्नु वा थुनामुक्त गर्नु भनी जारी हुने गर्दछ। यस प्रकृतिको रिट मूलतः कुनै व्यक्तिलाई गैरकानूनी रूपमा बन्दी बनाई निजको स्वतन्त्रता अपहरण भएको अवस्थामा आकर्षित हुने गर्दछ। कुनै व्यक्तिलाई कानूनविपरीत थुनामा राखिएको वा वन्दी बनाइएको भनी दाबी लिनेले त्यस्तो व्यक्तिलाई थुनामा राखिएको वा बन्दी बनाएको र त्यस्तो थुना वा बन्दी कानूनविपरीत रहेको भनी पुष्टि गर्नुपर्ने।

प्रत्यर्थीहरूले बन्धक बनाई राखिएकी भनिएकी अनन्तमाया घिमिरे मुटुको बिरामी रहेको तथा परिवारका अन्य सदस्यको सहारा आवश्यक पर्ने करिब ७४ वर्षकी ज्येष्ठ नागरिक देखिनुभएको छ। निजका छोराहरू आमासँग नबसी अलग बस्दैआएको भन्ने देखिएको अवस्थामा निज आमालाई प्रत्यर्थीमध्येकी

आफ्नै जेठी छोरी उर्मिला घिमिरेले नर्भिक अस्पताल काठमाडौंमा नियमित उपचार गराइरहेको भन्ने उक्त अस्पतालमा मिति २०७९/१२/०३ र २०७९/१२/२८ मा स्वास्थ्य परीक्षण गरिएका कागजातबाट देखिन्छ । साथै निवेदिकाले समेत दिदी उर्मिला घिमिरेलगायतले आमाको नामको जग्गा शेषपछिको बकसपत्र गरिलिएको भन्ने उल्लेख गरेको र प्रत्यर्थीहरूले आमाको बैंक खातामा रहेको ठुलो रकम निवेदिकाले आफ्नो र निजको छोरासमेतको नाममा सारेको, जग्गासमेत आफ्नो नाममा लिएको र बाँकी रहेको घर जग्गासमेत लिने उद्देश्यले रिट दायर गरेको भन्ने उल्लेख गरेको देखिँदा विवादको उठान आमाको नामको सम्पत्तिको कारणबाट भएको देखिन्छ । निज अनन्तमाया कसैको सहारा तथा हेरचाहमा रहनुपर्ने देखिएकोमा आफ्नै छोरी उर्मिला घिमिरेले आमाकै घरमा बसी आमाको स्याहार एवम् हेरचाह गरेको भन्ने निवेदकको निवेदन बेहोराबाट समेत देखिएको अवस्था छ । आफैँ एक्लै बस्न नसक्ने अवस्थामा रहनुभएकी रोगी ज्येष्ठ नागरिक निज अनन्तमायालाई परिवारका कुनै सदस्यले सहारा दिई हेरचाह तथा औषधी उपचार गर्नुपर्ने अवस्थामा केही समय अगाडिसम्म रिट निवेदिकाले समेत आफूले हेरचाह तथा औषधी उपचार गर्दैआएको भन्ने निजको निवेदन कथनबाट देखिएको र हाल अर्की छोरी प्रत्यर्थीमध्येकी उर्मिला घिमिरेले निज आमासँगै आमाको घरमा बसी हेरचाह तथा औषधी उपचार गरेको अवस्थालाई बन्दी बनाएको वा बन्धकमा लिएको भन्न नमिल्ने ।

नियमित औषधी उपचार गर्नुपर्ने अवस्थाकी ज्येष्ठ नागरिकलाई निजको सर्वोत्तम हित हुने गरी उपर्युक्त बासस्थानमा निजको उचित स्याहार सुसार तथा नियमित औषधी उपचारसमेत गर्नुपर्ने अवस्थामा निज अनन्तमाया घरमा एक्लै भएको, छोराहरू आमासँग नबसी अलग बस्ने गरेको भन्ने देखिएको र रिट निवेदकले केही समय अगाडिसम्म आमालाई आफूले हेरचाह तथा औषधी उपचार गरिआएको भनी उल्लेख गरेकोमा निवेदिकाले आमाको करोडौँ रकम लिई मासी खाएको भन्ने प्रत्यर्थीहरूको बेहोरालाई पुष्टि हुने गरी निज निवेदकले आमाको बैंक खाताबाट आफ्नो र छोराको संयुक्त खातालगायत अन्य व्यक्तिको खातामा समेत रकम ट्रान्सफर गरेको देखिन्छ । हाल निज अनन्तमायाकी जेठी छोरी उर्मिला घिमिरेले आमाको औषधी उपचार गरी आमाकै घरमा बसी निजको हेरचाह एवम् स्याहार सुसार गरेको अवस्था देखिएकोमा निज उर्मिला घिमिरेले मुटुसम्बन्धीलगायतका विभिन्न रोगबाट ग्रसित भई नियमित औषधी सेवन गराउनुपर्ने वृद्ध अवस्थाकी आफ्नै आमालाई उचित आहारविहारबाट वञ्चित गरेको भन्ने निवेदन जिकिर विश्वसनीय मान्न सकिने देखिएन । साथै प्रत्यर्थीमध्येकी रेणुका बराल घरमा समेत नबसी माइतीको शरणमा माइतीको नजिकै बसेकी छु भनी लिखित जवाफ पेस गरेको देखिन्छ । अर्का प्रत्यर्थी अर्थात् निज अनन्तमायाका जेठा छोरा बल्लभमणि घिमिरे आफैँ बिरामी भई आफ्नै घरमा एक्लै बसी आएको र जेठी छोरी उर्मिला घिमिरेले मात्र आमाकै घरमा बसी आमाको स्याहार सुसार तथा औषधी उपचार गरिरहेको देखिँदा छोरीको सहारामा आफ्नै घरमा बसिरहेकी आमालाई बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरी निवेदिकाको जिम्मा लगाइपाउँ भनी रिट निवेदक असल मनसायले सफा हात लिई अदालत प्रवेश गरेकोसमेत नदेखिने ।

अनन्तमाया घिमिरे बिरामी हुनुका साथै ज्येष्ठ नागरिक भई कसैको सहारा र सहयोग आवश्यक पर्ने अवस्था देखिएको र निजलाई निजकै जेठी छोरी उर्मिला घिमिरेले आमासँगै आमाकै घरमा बसी आमाको रेखदेख, स्याहार सुसार तथा औषधी उपचारसमेत गरी संरक्षण दिइरहेको अवस्था देखियो । यसबाट निवेदक असल नियतले सफा हात लिई अदालत प्रवेश गरेको नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको

आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था देखिएन । रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : दुर्गाप्रसाद खनाल/इन्दिरा कार्की

इति संवत् २०८० साल वैशाख १५ गते रोज ६ शुभम् ।

**३८**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७१-WO-००२१, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, गोपीलाल ढकाल वि. उपकुलपति, मध्यपश्चिमाञ्चल विश्वविद्यालय वीरेन्द्रनगर, सुर्खेतसमेत*

रिट निवेदक गोपीलाल ढकाल पहिला त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रहेका र पछि मध्यपश्चिमाञ्चल विश्वविद्यालयअन्तर्गत समावेश गरिएका पब्लिक साइन्स क्याम्पस विरेन्द्रनगर, सुर्खेतमा च.नं. ३२ मिति २०६५।६।२५ मा सहायक प्रशासक, अधिकृत तृतीय श्रेणीको पदमा रही १ वर्षसम्म कामकाज गर्ने गरी पहिलो पटक करार नियुक्ति पाएको तथ्य मिसिल संलग्न रहेको निजको नियुक्ति पत्रको प्रमाणित छायाँप्रतिबाट खुलेको देखिन्छ । मध्यपश्चिमाञ्चल विश्वविद्यालय सङ्गठन तथा शैक्षिक प्रशासनिक नियमावली, २०६९ को नियम १७६(१) मा समायोजन गर्दा जुन जुन पदमा जो जो कार्यरत छन् सम्पूर्ण स्थायी, अस्थायी, करार र ज्यालादारी र आंशिक शिक्षक तथा कर्मचारी सबैको सम्मान हुने गरी निजहरूलाई सोही सोही पदमा समायोजन गरिनेछ । ज्येष्ठता र कार्यबोझलाई प्रमुख आधार मानी स्थायी सेवामा नभएकाहरूका लागि समायोजनसँगै तत्काल स्थायी गर्ने विधि र प्रक्रिया अवलम्बन गरिने छ । यसको विस्तृत कार्ययोजना कार्यकारी परिषद्ले तयार पार्ने छ भन्ने कानूनी प्रावधान रहेको पाइन्छ । तथापि, मध्यपश्चिमाञ्चल विश्वविद्यालयअन्तर्गत करार, ज्यालादारीसमेतमा कार्यरत रहेका कर्मचारीहरूको समायोजन गर्ने कार्य मिति २०६९।११।२८ मा गरिएको हो भनी मध्यपश्चिमाञ्चल विश्वविद्यालय, कार्यकारी परिषद् विरेन्द्रनगर, सुर्खेतसमेतका विपक्षीहरूले लिखित जवाफमा उल्लेख गरेको पाइन्छ । साथै, गोपीलाल ढकालको मिति २०६९।७।३० पछि पब्लिक साइन्स क्याम्पसको सहायक प्रशासक पदमा करार सेवाको नवीकरण नभएको अभिलेखबाट देखिन्छ भन्ने बेहोरा मध्यपश्चिमाञ्चल विश्वविद्यालय, विज्ञान तथा प्रविधि सङ्काय, विज्ञान तथा प्रविधि केन्द्रीय क्याम्पस, विरेन्द्रनगर सुर्खेतको च.नं. ११२ मिति २०७३।१०।४ को पत्रमा उल्लेख रहेको अवस्था छ । यसरी निवेदक गोपीलाल ढकालको करार अवधि नवीकरण नभएको कारणबाट समायोजन हुने मितिभन्दा अगावै निज मध्यपश्चिमाञ्चल विश्वविद्यालयमा समावेश भएको पब्लिक साइन्स क्याम्पसको कर्मचारी नै नरहेको देखिँदा निजलाई समायोजन गर्न नमिल्ने ।

रिट निवेदक गोपीलाल ढकाललाई मध्यपश्चिमाञ्चल विश्वविद्यालयअन्तर्गत समावेश गरिएका पब्लिक साइन्स क्याम्पसमा निज करारको रूपमा कार्यरत रहेको सहायक प्रशासक, अधिकृत तृतीय श्रेणीको पदमा समायोजन गर्न मिल्ने नदेखिँदा विपक्षीहरूका नाममा परमादेशको आदेश जारी गर्न मिलेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत - गगनदेव महतो

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७९ साल पौष १९ गते रोज ३ शुभम् ।

**३९**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७५-WO-०४३३, उत्प्रेषण/परमादेशसमेत, रणबहादुर बस्नेतसमेत वि. नेपाल सरकार, स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालय, रामशाहपथ काठमाडौंसमेत*

निवेदकहरूलाई नेपाल स्वास्थ्य सेवा ऐन, २०५३ मा मिति २०६९।१२।२९ मा भएको चौथो संशोधन अध्यादेश तथा मिति २०७०।१२।१२ मा उक्त ऐनमा भएको चौथो संशोधनपश्चात् थप भएको दफा ९(१) को व्यवस्था अनुसार सहायक चौथो तहबाट सोही सेवाको सहायक पाचौँ तहमा स्तरवृद्धि

गर्दा तत्काल प्रचलित नेपाल स्वास्थ्य सेवा ऐन, २०५३ को दफा ९को उपदफा (७क) को खण्ड (ङ) मा भएको व्यवस्थाबमोजिम स्तरवृद्धि गरिएको भन्ने मिसिल संलग्न रिट निवेदकहरूले पेस गरेका स्तरवृद्धिसम्बन्धी पत्रबाट देखिन्छ । निवेदकहरूले आफूलाई चौथो तहमा सुरू नियुक्ति भएकै मितिबाट ५ वर्ष सेवा अवधि गणना गरी पाँचौ तहको ज्येष्ठता कायम हुनुपर्छ भनी निवेदन दाबी लिएतर्फ विचार गर्दा ऐन लागु हुने सम्बन्धमा नेपाल कानून व्याख्यासम्बन्धी ऐन, २०१० को दफा ३ को व्यवस्था हेर्नु वाञ्छनीय हुन्छ । उक्त दफामा कुनै पनि ऐन भूतप्रभावी हुने गरी लागु हुन सक्ने कुनै कानूनी व्यवस्था गरेको देखिँदैन । तसर्थ, यी रिट निवेदकहरूलाई नेपाल स्वास्थ्य सेवा ऐन, २०५३ को तत्काल प्रचलित दफा ९ को उपदफा (७क) को खण्ड (ङ) मा भएको व्यवस्थाबमोजिम पाचौँ तहमा गरिएको स्तरवृद्धि उक्त दफा लागु भएको मितिबाट मात्र लागु हुने हुँदा आफूहरूलाई चौथो तहमा सुरू नियुक्ति भएको मितिदेखि ५ वर्ष सेवा अवधि गणना गरी सोको आधारमा मात्र ज्येष्ठता कायम गरी पाँचौ तहमा स्तरवृद्धि गरिनुपर्छ भन्ने निवेदकहरूको निवेदन जिकिरको कानूनी आधार नदेखिने ।

निवेदकहरूको चौथो स्तरबाट पाँचौ तहमा स्तरवृद्धि गर्दा मिति २०६८ र २०६९ मा भएकोमा उक्त स्तरवृद्धि गर्ने निर्णय तथा पत्र बदरका लागि करिब ६/७ वर्षपछि मिति २०७५।७।१९ मा मात्र यस अदालतमा रिट निवेदन दायर गराएको देखिन्छ । यी रिट निवेदकहरूले पाँचौ तहमा स्तरवृद्धि भई करिब ६/७ वर्षसम्म उक्त वृद्धि भएको तहको अधिकार प्रयोग तथा सेवा सुविधा उपभोग गरेर मात्र अनुचित विलम्ब गरी प्रस्तुत निवेदन दिएको देखियो । अनुचित विलम्ब गर्नुको मनासिब आधार, कारणसमेत यी रिट निवेदकहरूले खुलाउन सकेको देखिँदैन । प्रस्तुत रिट निवेदन विलम्बको सिद्धान्तका आधारमा समेत विचारणीय नदेखिने ।

निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी हुन सक्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा निवेदकहरूको रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : यज्ञमूर्ति ज्ञवाली

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७९ साल साउन २५ गते रोज ४ शुभम् ।

## इजलास नं.९

### ४०

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७५-CI-०१९४, ०७५-CI-०१९५, हालैदेखिको बकसपत्र लिखत दर्ता बदर दर्ता, लिलादेवी यादव वि. निर्मलादेवी यादव, रविताकुमारी यादवसमेत वि. श्रीपति यादवसमेत*

मुलुकी ऐन, दानबकसको १ नं.को भएको सन्दर्भमा मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको १९(१) नं. को सुविधा प्राप्त गर्न सकिँदैन । घरको मुख्य व्यक्तिले बकसपत्रको माध्यमबाट घर व्यवहार चलाउनका लागि मुलुकी ऐन, लेनदेन व्यवहारको १० नं. बमोजिम हस्तान्तरण गरेको भएमा मात्र मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको १९(१) को सुविधा पाउने हो । साथै यी प्रतिवादी श्रीपति यादवले सगोलमा रहेको अवस्थामा बकसपत्र गर्दा अन्य अंशियारहरूको मन्जुरीसमेत लिएको देखिँदैन । घरको मुली व्यक्ति प्रतिवादी श्रीपति यादवले घर व्यवहार चलाउन उक्त जग्गा आफ्नो विवाहिता छोरीलाई बकसपत्र गरेको भन्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाणसमेत पेस गरेको देखिँदैन । प्रत्यर्थी श्रीपति यादवले छोरी निर्मलाकुमारी यादवलाई मुलुकी ऐन, दान बकसको १ नं. बमोजिम हक हस्तान्तरण गरेको देखिएकोले सोबमोजिमको दाबीका सम्बन्धमा मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको १९(१) को सुविधा दिने गरी भएको उच्च अदालत जनकपुरको फैसला मिलेको देखिन आएन । तसर्थ प्रतिवादी श्रीपति यादवले विवाह भएकी आफ्नो छोरी निर्मलादेवी यादवलाई मिति २०६९।३।२६ मा हालैदेखिको बकसपत्र गरिदिएको लिखत र अंश मुद्दाको

तायदातीमा उल्लिखित जग्गा मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको १९(१) मा भएको अचल सम्पत्ति आधीसम्म व्यवहार चलाउन आफूखुस गर्न पाउने वादी दाबीबमोजिम र.नं. १०४३२ख बाट भएको विवादका जग्गाहरूको लिखत दर्ता सदर हुनुपर्छ भन्ने प्रत्यर्थीहरूका तर्फबाट भएको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादी श्रीपति यादवले विवाह भएकी आफ्नो छोरी निर्मलादेवी यादवलाई र.नं.१०४३२ख को मिति २०६९।०३।२६ को लिखत सदर कायम गर्नुपर्नेमा लिखत दर्ता बदर हुने ठहर गरेको भनी सुरू महोत्तरी जिल्ला अदालतको मिति २०७१।०५।२९ को फैसला उल्टी गरी मिति २०७३।०९।११ मा भएको उच्च अदालत जनकपुरको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई वादी दाबीबमोजिम र.नं. १०४३२ख को मिति २०६९।०३।२६ को लिखत र दर्तासमेत ६ भागको ४ भाग बदर भई वादीहरूको नाममा संयुक्त दर्तासमेत हुने।

इजलास अधिकृत : हिरामाया अवाल / नारायण प्रसाद चापागाई

कम्प्युटर : सरस्वती दाहाल

इति संवत् २०७९ साल चैत्र १५ गते रोज ४ शुभम्।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएको छ :

- ०७५-CI-०१९६, लिखत दर्ता बदर दर्ता, रविताकुमारी यादवसमेत वि. इन्दरदेवी यादवसमेत
- ०७५-CI-०१९९, लिखत दर्ता बदर दर्ता, लिलादेवी यादवसमेत वि. इन्दरदेवी यादवसमेत
- ०७५-CI-०१९७, लिखत दर्ता बदर दर्ता, लिलादेवी यादवसमेत वि. निर्मलादेवी यादवसमेत
- ०७५-CI-०१९८, लिखत दर्ता बदर दर्ता, रविताकुमारी यादवसमेत वि. इन्दरदेवी यादवसमेत

**४१**

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७४-CR-०९५२, ०७४-CR-१०९१, लागु औषध खैरो हिरोइन, दिनेश श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार, रामप्रवेश ठाकुर वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीहरूबाट बरामद भएको वस्तु लागु औषध भएको भनी पुष्टि भएको, प्रतिवादीहरूको मौकाको साबिती बयानलाई बरामदी मुचुल्काले समर्थन गरेको, बरामदी मुचुल्कालाई प्रतिवादीहरूले अन्यथा प्रमाणित गर्न नसकेकोले निजहरूको मौकाको बयान र बरामदी मुचुल्का प्रमाणमा ग्राह्य हुने भएकाले सो प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीहरूले लागु औषध बिक्री वितरणको कसुर गरेको स्थापित भएको हुँदा निजहरूलाई कसुरदार ठहर गरेको सुरू र उच्च अदालतको फैसला मिलेकै देखिँदा आफूहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिनुपर्छ भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीहरूको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादी रामप्रवेश ठाकुरको साथबाट जम्मा २०० ग्राम हेरोइन बरामद भएको देखिन्छ । माथि विवेचना गरिए अनुसार सो हेरोइन निजले बिक्री वितरण गर्दै ल्याएको भन्ने देखिन्छ। लागु औषध ऐन, २०३३ को दफा १४(१) को खण्ड (छ) अनुसार अफिम, कोका वा सोबाट बनेको लागु औषधको सेवन र खेती गर्ने कार्यबाहेक अन्य निषेधित कार्य गर्ने व्यक्तिलाई सोही खण्डको (३) बमोजिम "एक सय ग्रामदेखि माथि जतिसुकै परिमाणको कारोबार गर्नेलाई पन्ध्र वर्षदेखि जन्म कैद र पाँच लाख रूपियाँदेखि पच्चिस लाख रूपियाँसम्म जरिवाना" हुने व्यवस्था रहेको पाइन्छ । यसर्थ २०० ग्राम लागु औषध हेरोइनको कारोबारको कसुरमा यी प्रतिवादी रामप्रवेश ठाकुरलाई १५ वर्ष कैद र ५ लाख रूपियाँ जरिवाना हुने ठहर गरेको सुरू अदालत र उच्च अदालतको फैसला मिलेकै देखिँदा निजको हकमा सदर हुने।

अर्का पुनरावेदक प्रतिवादी दिनेश श्रेष्ठको हकमा विचार गर्दा, यी प्रतिवादी लागु औषध हेरोइनको

खरिदकर्ता र अर्का प्रतिवादी रामप्रवेश ठाकुर बिक्रीकर्ता भएकोमा तीनै जना प्रतिवादीहरूको मौकाको बयानबाट प्रतिवादी रामप्रवेश ठाकुरको साथबाट बरामद भएको २०० ग्राम लागु औषधमध्ये यी प्रतिवादीले १०० ग्राम मात्र लागु औषध खरिद गर्ने सहमतिबमोजिम भेट गरेको र खरिद बिक्री हुने क्रममा प्रतिवादीहरू पक्राउ परेको देखिन्छ । लागु औषध ऐन, २०३३ को दफा १४(१) को खण्ड (छ) को (२) मा "पच्चिस ग्रामदेखि एक सय ग्रामसम्मको कारोबार गर्नेलाई दश वर्षदेखि पन्ध्र वर्षसम्म कैद र पचहत्तर हजार रूपियाँदेखि दुई लाख रूपियाँसम्म जरिवाना" हुने व्यवस्था रहेको पाइन्छ । एकै वारदातमा २०० ग्राम लागु औषधको कारोबारको कसुरमा अर्का प्रतिवादी राम प्रवेश ठाकुरलाई ऐनले तोकेको सजायको हदमध्ये न्यूनतम १५ वर्ष कै र रु.५,००,०००।- (पाँच लाख रूपियाँ) जरिवाना गर्दा १०० ग्रामको कारोबारको कसुर गर्ने यी प्रतिवादीलाई बढी परिमाणको कसुरबापत गरिएको कैद तथा जरिवाना बराबर हुने गरी तथा १०० ग्रामको कारोबारको कसुरको परिणामको सम्बन्धमा ऐनले तोकेको अधिकतम हद १५ वर्ष कैद र तोकिएभन्दा बढी पाँच लाख रूपियाँ जरिवाना गर्दा न्यायोचित नहुने।

प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुर गरेको ठहऱ्याई सजायसमेत गर्ने गरेको सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७१।०३।०५ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर गरेको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७४।०३।१९ को फैसला प्रतिवादी दिनेश श्रेष्ठलाई भएको सजायको हकमा मात्र केही उल्टी भई निज प्रतिवादी दिनेश श्रेष्ठलाई १० वर्ष कैद र रु.२,००,०००।- (दुई लाख रूपियाँ) जरिवाना हुने।

इजलास अधिकृत - विकाशकुमार राजक

कम्प्युटर : सरस्वती दाहाल

इति संवत् २०७९ साल पौष १७ गते रोज १ शुभम्।

**४२**

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७४-CR-०८३८, ०७४-CR-१७६१, डाँका, टेकबहादुर थापा वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. कुमार गुरुङसमेत*

प्रतिवादीहरू कुमार गुरुङ, लालबहादुर गुरुङ र टेकबहादुर थापा मगरले जाहेरीमा उल्लिखित मिति र समयमा जाहेरवालाको घरमा भएको वारदातमा आफूहरूसहित हाल फरार रहेका नवीन भन्ने फन्द्रबहादुर थापा र विशाल भन्ने जीवन लामा संलग्न रहेको, बरामद भएका खुकुरी वारदातमा प्रयोग भएकामध्येका हुन्, बरामद मोबाइललगायतका सामानहरू जाहेरवालाका तथा आफूहरूका निजी सामानहरूसमेत हुन् भनी अनुसन्धानका क्रममा बयान गरेको देखिन्छ। अदालतसमक्ष भएको बयानमा समेत प्रतिवादी लालबहादुर गुरुङले अधिकार प्राप्त अधिकारीसमक्ष भएको बयान बेहोरा ठिक छ भनी, प्रतिवादी टेकबहादुर थापा मगरले म वारदातस्थलमा गएको हुँ तर मैले पैसा पाएको छैन, लगेको छैन भनी तथा प्रतिवादी कुमार गुरुङले वारदात मितिमा आफू ओखलढुंगामा भएको तथ्यलाई स्वीकार गरी बरामद क्यापसमेतका सामान र नागरिकताको प्रमाणपत्र आफ्नो हो भन्ने बेहोरा उल्लेख गरेको देखिन्छ । वारदातमा प्रयोग भएका खुकुरीहरू बरामद भएका छन् र उक्त खुकुरीहरू प्रतिवादीहरूले आफ्नो घरबाट डाँका गरी लगेका हुन् भनी रामेछापमा जाहेरी दिने जाहेरवाला सेरबहादुर बस्नेतले सनाखत कागज गरेको देखिन्छ भने प्रतिवादीहरूको साथबाट बरामद भइआएका मोबाइल मेरो घरबाट डाँका गरी लगेको मेरो मोबाइल हो, हेरी चिनी सनाखत गरिदिएको छु, मेरो घरमा डाँका गर्ने मानिसहरूसमेत यिनै हुन् भनी पक्राउ प्रतिवादीहरू र बरामद सामानहरू हेरी, चिनी जाहेरवालाका छोरा मोहनकुमार सुनुवारले सनाखत कागज गरेको देखियो। यसका साथै प्रतिवादीहरूले डाँका गरी लगेका मोबाइललगायतका सामानहरू निजहरूको साथबाट बरामद भएको बरामदी मुचुल्काबाट देखिएको छ । प्रस्तुत सबुद प्रमाणहरूको आधारमा यी प्रतिवादीहरू कुमार गुरुङ, लालबहादुर गुरुङ र टेकबहादुर थापा

मगर प्रस्तुत मुद्दाको डाँकाको वारदातमा संलग्न रही निजहरूले अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको पुष्टि हुने।

गोरे शेर्पाको जाहेरीले नेपाल सरकार वादी र यिनै प्रतिवादीहरू कुमार गुरुङ, लालबहादुर गुरुङ र टेकबहादुर थापा मगरसमेत प्रतिवादी भएको मुद्दा नं. ०७४-CR-०८३९ को डाँका मुद्दामा प्रतिवादी टेकबहादुर थापा मगरले पहिलोपटक डाँका गरेको ठहरी तथा प्रतिवादीहरू कुमार गुरुङ र लालबहादुर गुरुङले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहरी तथा हर्कबहादुर सुनुवारको जाहेरीले नेपाल सरकार वादी र यिनै प्रतिवादीहरू कुमार गुरुङ, लालबहादुर गुरुङ र टेकबहादुर थापा मगरसमेत प्रतिवादी भएको मुद्दा नं. ०७५-CR-१३१७ को डाँका मुद्दामा यी प्रतिवादीहरूले डाँका गरेको पुष्टि हुन आई निजहरूमध्ये कुमार गुरुङ र लालबहादुर गुरुङलाई पहिलोपटकको र प्रतिवादी टेकबहादुर थापा मगरलाई दोस्रोपटक डाँकाको कसुर गरेको हुने ठहरी आज यस इजलासबाट फैसला भएको अवस्था हुँदा प्रतिवादीहरू कुमार गुरुङ र लालबहादुर गुरुङका हकमा उल्लिखित मुद्दा नं. ०७५-CR-१३१७ को डाँका मुद्दामा पहिलोपटक डाँका गरेको मानी यस मुद्दामा दोस्रोपटक डाँका गरेको ठहरेकाले प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीहरू कुमार गुरुङ र लालबहादुर गुरुङलाई जनही ९ वर्ष कैद र रु.४,५९,०००।- जरिवाना तथा प्रतिवादी टेकबहादुर थापा मगरका हकमा उल्लिखित मुद्दा नं. ०७४-CR-०८३९ को डाँका मुद्दामा पहिलोपटक मुद्दा नं. ०७५-CR-१३१७ को डाँका मुद्दामा दोस्रोपटक र प्रस्तुत मुद्दामा तेस्रोपटक डाँका गरेको ठहरेकाले प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी टेकबहादुर थापा मगरलाई १२ वर्ष कैद र रु. रु.४,५९,०००।- जरिवाना हुने ठहर गरी डाँका गरिएको धनमाल यी प्रतिवादीहरूबाट बरामद हुन नसकेकाले बिगो भराइदिनुपर्ने दाबी नपुग्ने गरी सुरू अदालतल र उच्च अदालत विराटनगर अस्थायी इजलास ओखलढुंगाको फैसलालाई नमिलेको भन्न नमिल्ने।

इजलास अधिकृत - विकाशकुमार रजक

कम्प्युटर : चन्द्राबती तिमल्सेना

इति संवत् २०७९ साल पौष १७ गते रोज १ शुभम्।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएको छ :

- ०७४-CR-०१९०, ०७५CR- १३१७, डाँका, नेपाल सरकार वि. कुमार गुरुङसमेत, टेकबहादुर थापा वि. नेपाल सरकार
- ०७४-CR-०८३९, ०७४-CR-१७६२, डाँका, टेकबहादुर थापा वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार, वि. कुमार गुरुङसमेत

**४३**

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७७-WO-००९२, परमादेशसमेत, सुनिलकुमार पटेल वि. प्रहरी प्रधान कार्यालय, नक्साल, काठमाडौंसमेत*

सङ्क्रमितको अवस्थामा भएका नागरिक मात्र नभई प्रत्येक नागरिकले स्वस्थ जीवन बाँच्न पाउनुपर्दछ र आकस्मिक र आधारभूत उपचारको अधिकार प्रत्येक व्यक्तिको रहने स्वास्थ्यसम्बन्धी हकसँग सरोकार रहेको अत्यन्तै संवेदनशील र अन्य कुनै अधिकारसँग सम्झौता गर्न नसकिने बाँच्न पाउने अधिकारसँग जोडिएको विषय रहेको छ। जीवनको अधिकार कुनै पनि तवरबाट मान मर्दन गर्न नसकिने, बन्धक बनाउन नसकिने, सबै अधिकारभन्दा सर्वोच्च अधिकारको रूपमा रहेको हुन्छ। सामान्य अवस्थामा मात्र नभई असामान्य अवस्थामा वा विशेष परिस्थितिमा समेत आकस्मिक र आधारभूत स्वास्थ्य सेवाको पहुँचको सुनिश्चितता गर्नु स्वास्थ्य संस्था र स्वास्थ्यकर्मी/चिकित्सकको दायित्व रहेको छ। कोरोना महामारीमा समेत सो अधिकारको संरक्षण गर्नुपर्ने दायित्व राज्यमा रहेको नै देखियो। राज्यले नै स्वास्थ्य संस्था, चिकित्सक र स्वास्थ्यकर्मीलाईसमेत उत्तरदायी बनाउनुपर्ने देखिन्छ। नागरिकको

स्वास्थ्यसम्बन्धी विषय जीवनको अधिकारसँग जोडिएको विषय हुँदा यस्तो विषयमा राज्य अत्यन्त संवेदनशील र गम्भीर हुनुपर्छ । नागरिकको स्वास्थ्यको लागि राज्यबाट प्रभावकारी कदम चालिनुपर्छ भन्ने कुरामा विवाद पनि छैन । नागरिकले उपचार गर्नका लागि स्वास्थ्य केन्द्र वा अस्पताल पुग्दा आकस्मिक स्वास्थ्य उपचार पाउनु नागरिकको अधिकारभित्र पर्ने।

कोभिड-१९ को महामारीको समयमा कोभिड १९ मात्र नभई अन्य रोग लागेका बिरामी पनि हुन सक्ने र निजहरूको पनि यथाशीघ्र उपचार पाउने अधिकार हुन्छ। जनस्वास्थ्य सेवा ऐन, २०७५ को दफा ५२ को देहाय (घ) मा स्वास्थ्य संस्थाले आधारभूत स्वास्थ्य सेवा तथा स्वास्थ्य संस्थामा उपलब्ध हुने आकस्मिक उपचार गर्न इन्कार गर्न नपाइने र इन्कार गरेमा उक्त ऐन विरुद्ध कसुर हुने व्यवस्था रहेको छ । फेरी "स्वास्थ्य संस्था" भन्नाले जनस्वास्थ्य ऐन, २०७५ को दफा २ (थ) ले "सरकारी स्वास्थ्य संस्था सम्झनुपर्छ र सो शब्दले प्रचलित कानूनबमोजिम स्थापित गैरसरकारी वा निजी वा सहकारी वा गैरनाफामूलक सामुदायिक स्वास्थ्य संस्थालाई समेत जनाउँछ" भनी परिभाषित गरेको छ अर्थात् यस्तो सेवाप्रतिको उत्तरदायित्व सरकारी स्वास्थ्य सेवाको मात्र नभई गैरसरकारी निजी, गैरमुनाफामूलक स्वास्थ्य सेवाको पनि हो । तथापि स्वास्थ्य संस्था वा चिकित्सक एवं स्वास्थ्यकर्मीहरूमा निवेदकले निवेदनमा उल्लेख गरेलगायतका कोभिड महामारीको समयका बिरामीहरूलाई स्वास्थ्य उपचार नगर्ने वा इन्कार गर्ने मनसाय, तयारी रहेको थियो भनी अनुमान र आशङ्का गर्नु न्यायोचित हुने देखिँदैन । बिरामीले ज्यान गुमाउनुपर्ने अवस्था स्वास्थ्य संस्था वा स्वास्थ्य उपचार गर्ने जिम्मेवारी लिएको चिकित्सक एवं स्वास्थ्यकर्मीहरूको लापरबाहीको कारणबाट नभई व्यापकरूपमा ज्यानै जाने किसिमबाट विश्वव्यापी कोभिड महामारीको सङ्क्रमण फैलिएको कारणबाट स्वास्थ्य संस्था र सेवा प्रदायक चिकित्सक र राज्यको कुनै तयार नरहेको, कोभिडको औषधी उपचार नरहेको अवस्था तथा परिकल्पना नै नगरिएको विषम महामारीको परिस्थितिमा संसार नै स्तब्ध (Shock) रहेको परिस्थितिले निम्त्याएको भन्ने देखियो । स्वास्थ्य संस्था तथा स्वास्थ्य सेवा प्रदायक पनि यसै परिस्थितिबाट गुज्रेको यथार्थलाई कसैले इन्कार गर्न सक्ने अवस्था देखिएन। महामारीको समयमा कुनै धनी वा गरिब देश होस् वा जतिसुकै आर्थिकरूपमा सक्षम भएका व्यक्तिहरू वा स्वास्थ्यकर्मीसमेतले स्वास्थ्य उपचारको सेवा नपाई ज्यान गुमाउनु परेको यथार्थलाई समेत भुल्न सकिँदैन । विभिन्न लाञ्छना विभेद सहँदै देशमा उपलब्ध भएको सीमित साधन स्रोतको बाबजुद पनि कतिपय स्वास्थ्य संस्था एवं स्वास्थ्यकर्मीहरूले बिरामीको स्वास्थ्योपचारमा पुऱ्याएको योगदानले नै नेपालमा बिरामीको मृत्युदरमा कमी आएको हो भन्ने यथार्थलाई पनि हामीले भुल्न र नकार्न मिल्दैन।

बिरामीलाई सेवा प्रदान गर्नु चिकित्सा व्यवसायी र अस्पतालको कर्तव्य भए तापनि कोभिड–१९ महामारीको असाधारण जोखिमयुक्त अवस्थालाई बेवास्ता गर्न मिल्दैन । कोभिड–१९ एउटा अकस्मात् आइपरेको अवस्था हो जसले संसारलाई स्तब्ध बनाएको छ । कोभिड–१९ को महामारीसँग कसरी सही ढङ्गले जुध्ने भन्नेबारे विश्वका कुनै चिकित्सक समुदायलाई जानकारी नभएको र कोभिड–१९ भाइरसको सङ्क्रमणका कारण स्वास्थ्यकर्मीहरूको जीवन आफैँमा पनि जोखिमको विद्यमानता रहेको तथ्यलाई नकार्न मिल्दैन।

प्रस्तुत विषयमा यसप्रकार कोभिड-१९ को महामारीको अवस्थामा प्रत्यर्थीहरूबाट निर्वाह भएको भूमिका एवं पूरा गरेको उत्तरदायित्वसमेतलाई ध्यानमा राख्दै स्वास्थ्य संस्था एवं स्वास्थ्यकर्मीहरूले लापर्बाहीपूर्ण गरेको कार्यबाट कसैको ज्यान गएको स्थिति विद्यमान भए मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ बमोजिमको विधि र प्रक्रिया अवलम्बन गर्न सकिने अवस्था हुँदाहुँदै रिट क्षेत्रबाट उपचार खोजिएको हुँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी

गर्नुपर्ने अवस्था विद्यमान देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृतद्वय :- इन्द्रकुमार श्रेष्ठ/हिरा डंगोल/ मतिना शाक्य

कम्प्युटर :- सरस्वती दाहाल

इति संवत् २०७९ साल ज्येष्ठ ३ गते रोज ३ शुभम्।

**४४**

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,** *०७९-WO-०११७, उत्प्रेषण / परमादेश, संचिदानन्द ठाकुर वि. भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयअन्तर्गतको भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभाग, खरिद इकाइ, बबरमहल, काठमाडौंसमेत*

निवेदकलाई कालोसूचीमा राख्ने गरी विपक्षीहरूबाट भए गरेको काम कारबाही र निर्णयमा अधिकारक्षेत्रात्मक त्रुटि रहेको नदेखिएको, निवेदक र विपक्षीबिच भएको सम्झौतामा नै कालोसूचीमा राख्न सकिने व्यवस्थालाई करारको एउटा सर्तको रूपमा उल्लेख गरिएको देखिएको, करारीय विषयवस्तु र त्यसबाट सिर्जित दायित्व परिपालना भए नभएको वा सम्झौताबमोजिमको गुणस्तरयुक्त सामग्री आपूर्ति भए नभएको भन्ने सम्बन्धमा करारको विषयवस्तुभित्र प्रवेश गरेर रिट क्षेत्राधिकारबाट परीक्षण गर्न सकिने अवस्था नरहेको तथा कुनै तरहले विपक्षीबाट सम्झौताको सर्तविपरीत काम कारबाही भएको अवस्था रहेको भए करारमा उल्लिखित कानूनी उपचारको मार्गको माध्यमबाट उपचार पाउन सक्ने नै देखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदनको रोहबाट मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न मिल्ने देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : इन्द्रकुमार श्रेष्ठ

कम्प्युटर : सरस्वती दाहाल

इति संवत् २०८० साल वैशाख १३ गते रोज ४ शुभम्।

**४५**

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,** *०७५-RB-०५१४, राजस्व चुहावट, नेपाल सरकार वि ललितपुर जिल्ला ललितपुर उपमहानगरपालिका वडा नं. २, सानेपा स्थित इम्प्रिजिलो एस.पि.ए. नेपालसमेत*

कालीगण्डकी जलविद्युत् आयोजनाका लागि भन्सार सुविधामा ल्याएको सिमेन्टमध्ये ४०६.६८ मे.टन हिनामिना गरी राजस्व चुहावट (अनुसन्धान तथा नियन्त्रण) ऐन, २०५२ को दफा ३, ४(क) र ४(ग) बमोजिमको कसुर गरेको भनी प्रतिवादी इम्प्रिजिलो एस.पि.ए., प्रतिवादी सलमान आजमी, प्रतिवादीहरू कृष्णबहादुर राना, कृष्णकुमारी थापा र कुम्भ सिं रानासमेतको हकमा सोही ऐनको दफा २३(१) बमोजिम हदैसम्मको सजाय गरी प्रतिवादी कृष्ण कुमारीको घर कोठामा सिलबन्दी अवस्थामा रहेको सिमेन्ट सोही ऐनको दफा ३३ बमोजिम जफत गरिपाउँ भन्नेसमेतको अभियोग दाबी रहेकोमा सुरू रूपन्देही जिल्ला अदालतबाट मिति २०६४।१।२७ मा फैसला हुँदा इम्प्रिजिलो एस.पि.ए. नेपालले हानि नोक्सानी भएको राजस्व तिर्न बुझाउन मन्जुर गरेकाले दाबीबमोजिमको हानि नोक्सानीको राजस्व धरौटीबाट असुल हुने देखिएको र प्रस्तुत अभियोग पत्र हदम्यादभित्र दायर नभएकोले खारेज हुने ठहऱ्याई भएको फैसलालाई सदर हुने ठहराई पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०६७।०१।१४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत - शिवबहादुर थापा, हिरा डंगोल

इति संवत् २०७९ साल माघ २३ गते रोज २ शुभम्।

**४६**

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,** *०७३-CI-१०८३, अंश, बलबहादुर ऐरी थापा वि. टिकाबहादुर ऐडी*

मिसिल संलग्न काप्रीचौर गा.वि.स. सुर्खेतको मिति २०७३।०१।१३ को पत्र र संलग्न सर्जमिन मुचुल्कामा बलबहादुर ऐरीले आफ्नो अंश भागको जग्गा २०२८ सालमा निजकै काका डुम्या ऐरीलाई बिक्री गरेको तथा राजीनामाको लिखत आगलागी हुँदा

जली नष्ट भएको हो भन्ने बेहोरा परेको देखिन्छ। वादी बलबहादुरले पुनरावेदन अदालत सुर्खेतमा बयान गर्दा पुर्खाको पालामा काप्रीचौर, सुर्खेतमा भएका जग्गा कान्छा बाबु डुम्या ऐरीलाई चलन चल्तीको मूल्यमा बिक्री गरेको स्वीकार गरेको देखिन्छ। यसबाट वादीले आफ्नो अंश भागको जग्गा बिक्री गरेको कुरा स्थापित भएको मान्नुपर्ने देखिन आयो। यी प्रमाणहरूको रोहमा विचार गर्दा वादी र प्रतिवादीबिच पहिले नै घरसारमा बन्डा भइसकेको मान्नुपर्ने देखिन आयो।

यसप्रकार वादी र प्रतिवादीहरूबिच २०३४ सालअगाडि नै अंशबन्डा भएको तथ्य व्यवहार प्रमाणबाट स्थापित हुन आएको देखिएको र पहिले एकपटक अंशबन्डा भई वादीले अंश लिए पाएको देखिन आएको अवस्थामा पुन: प्रतिवादीहरूबाट अंश पाउनसक्ने नहुँदा वादी दाबीबमोजिम अंश पाउने ठहर्‍याई सुरू जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलालाई केही उल्टी गरी तायदातीमा उल्लिखित कि.नं. ११२४ र कि.नं. १४५१ को जग्गाको हदसम्म बन्डा लाग्ने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालतबाट भएको फैसलासमेत मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई वादी बलबहादुर ऐरी थापाको फिराद दाबी पुग्न नसक्ने।

इजलासमा बस्ने :- विकाशकुमार रजक

इजलास अधिकृत:- श्रेया पौडेल

इति संवत् २०७९ साल माघ २० गते रोज ६ शुभम्।

## इजलास नं. १०

४७

**मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७१-CR-०७९१, अवैध साल काठ ओसारपसार, नेपाल सरकार वि. शेरबहादुर कटुवालसमेत*

प्रतिवादीहरूमध्ये उपेन्द्र साह इजाजत लिई काठ काठमाडौं पठाउने व्यक्ति रहेका र प्रतिवादी गोविन्द भन्ने शेरबहादुर कटुवाल काठ बोकी काठमाडौं ल्याउने ना.३.ख ५९५० का ट्रकधनी रहेको देखियो। प्रतिवादी दीपक श्रेष्ठ काठ लोड गरी काठमाडौंसम्म ल्याउने ना.३.ख ५९५० नं.को ट्रकको चालक हुन् भने हरिकृष्ण खाइतु र सुन्दर श्रेष्ठ काठ पाउने भोलेबाबा स.मिलका सञ्चालक भन्ने देखिए पनि निजहरूको प्रतिवादी उपेन्द्र साहसँग सम्बन्ध लेनदेन रहेको कुनै प्रमाण नरहेको भन्ने आधारमा निजहरूलाई अनुसन्धानको क्रममा कार्यालयले खोजेका बखत हाजिर गराउने सर्तमा जिम्मा जमानीमा छोडेको देखिने।

अन्य प्रतिवादीहरू प्रगास सहनी, राम सागर यादव, सञ्जय झा, अच्छेलाल राय र सत्रुधन ठाकुर वनका कर्मचारीहरू भई निजहरूको कामको दायित्व र भूमिका हेर्दा स.व.अ. प्रगास सहनी स्थानान्तरण हुने काठ चेक जाँच निरीक्षण तथा प्रमाणित गर्न तोकिएको व्यक्ति रहेका, स.व.अ. रामसागर यादव र वन रक्षक सञ्जय झा काठ लोड गराई सिलछाप मुचुल्का तयार पार्ने दायित्वमा रहेका देखिए। अर्का वन रक्षक अच्छेलाल राय सिल भइसकेको ट्रकलाई त्यसै स्थानमा सिल हेरी दरपिठ गर्ने र प्रतिवादी सत्रुधन ठाकुर वनरक्षक भई निजले पहिलो पटक दरपिठ भएको स्थानबाट १०/१५ कि.मि. टाढा रहेको बाग्मती चेकपोष्टमा सिलछाप पुर्जी हेरी पुनः दरपिठ गर्ने कार्यमा खटिएको देखिने।

जिल्ला वन कार्यालय, सर्लाहीको च.नं.२५०२, मिति २०६८।२।२९ को पत्रबाट सिसौ चिरान काठ २९३ थानको २५३/८५ क्यू.फि. सिसौकै स्ट्रीप ३० क्वीन्टल र मसला जातको स्ट्रीप ४० क्विन्टल काठ स्थानान्तरणका लागि इजाजत प्राप्त भएको र उक्त वन पैदावार भोले बाबा स.मिल ग्वार्को ललितपुरले पाउने सो स्थानान्तरण पत्रमा उल्लेख भएको पाइन्छ। प्रतिवादी उपेन्द्र साहले निजी आवादी जग्गाको रुख कटानबाट निस्केको माथि उल्लिखित परिमाणको काठमा टाँचा लगाई स्थानान्तरणको लागि अनुमति प्राप्त गरेको देखिने।

प्रतिवादीहरू प्रगास सहनी, राम सागर यादव, सञ्जय झा, अच्छेलाल राय र सत्रुधन ठाकुरले सुरू अदालतमा बयान गर्दा इजाजत पत्रबमोजिमका काठहरू नै पठाएको हो। आफूहरूले तोकिएबमोजिम नै कामको दायित्व पूरा गरेकोले अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुनुपर्ने होइन भनी आरोपित कसुरमा इन्कारी रहेको देखियो। यी प्रतिवादीहरूको इन्कारी बयानलाई समर्थन गर्ने गरी निजहरूको साक्षीहरूले अदालतमा आई बकपत्रसमेत गरिदिएका छन्। बुझिएका मानिस उदिमप्रसाद राई, रामबहादुर गुरुङ्ग, दिलबहादुर बुर्जा पुन, युवराज कार्की र भैरव भट्ट, प्रतिवेदक लालबाबु झा घटनाको प्रत्यक्षदर्शी रहेको देखिँदैन। निजहरू कसैले पनि सुरू अदालतमा बकपत्र गर्दा यी प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुर गरेका हुन् भनी गढाउ गरी भन्न सकेका छैनन्। बरामद भएको ट्रकको सिल र सुरुमा काठ लोड हुँदा लगाएको सिल उही (एउटै) थियो, थिएन ? सो को प्राविधिक जाँच गरी यकिन गरेको पनि देखिँदैन। साथै काठ लोड भएको उक्त ट्रक चलान भइसकेपछि सिल बिचबाटोमा पनि तोडफोड हेरफेर हुन सक्ने सम्भावना र सिल नक्कली सक्कली के हो भन्ने सम्बन्धमा समेत कसुरको प्रकृतिअनुसार प्रमाण सङ्कलन गर्नेतर्फ पर्याप्त अनुसन्धान भएको नदेखिने।

सुरू ललितपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८/११/२१ मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट भएको मिति २०७०/११/१२ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : मनोज बराल

कम्प्युटर : प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७९ साल चैत्र २६ गते रोज १ शुभम्।

## ४८

**मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७१-CR-०२५१, लागु औषध (ब्राउन सुगर), नेपाल सरकार वि. बिजेन्द्र प्रजापती*

प्रतिवादी कमल कार्कीले अनुसन्धानको क्रममा बयान गर्दा स.ज. १५ मा निज लागु औषध सेवन गर्ने भएकोले आफैँले सेवन गर्न लागु औषध खरिद गरी ल्याएको हो भनी बयान गरेका र सुरू अदालतमा बयान स.ज.६ मा पाँच ग्राम ब्राउन सुगर लागु औषध मैले आफूलाई सेवनका लागि किनेको हुँ, म लागु औषध सेवन गर्ने गर्छु भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ। निजको भनाइ समर्थित हुने गरी निजका साक्षी मनोजकुमार राउतले बरामद लागु औषध साथीसङ्गतले चाख्नका लागि लिई हिँडेको हो। लागु औषध कारोबारका लागि होइन भनी अदालतमा बकपत्र गरेको देखिन्छ। यी प्रतिवादीले लागु औषध ब्राउन सुगर खरिद बिक्री वितरण गरी लागु औषधको कारोबार गर्ने गरेको पुष्टि हुने गरी अनुसन्धान पक्षबाट प्रमाण पेस गरेको देखिँदैन। मिसिलको अध्ययनबाट निज कारोबारमा संलग्न भएका व्यक्ति हुन् भन्ने पुष्टि गर्ने प्रमाण सङ्कलन नै गरेको देखिँदैन। बरामद भएको लागु औषधको परिमाणले सेवनको लागि मात्र लागु औषध खरिद गरेको मान्न मिल्दैन भन्ने वादी पक्षको जिकिर गराइबाट पनि सो पुष्टि हुन्छ। जहाँसम्म परिमाणको आधारमा यी प्रतिवादी लागु औषधको कारोबारी हुन् भन्नेतर्फ हेर्दा, प्रथमतः माथि उल्लेख भएअनुसार अनुसन्धानकर्ताले त्यसतर्फ अनुसन्धान गरेको नदेखिएको र मौकाको बयानमा यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी कमल कार्कीले बरामद भएको लागु औषध सेवन गर्नको लागि खरिद गरेको हुँ भनेका तथा निज यो यस कारणले लागु औषध सेवनकर्ता (दुर्व्यसनी) मात्र होइनन् भन्ने वादी पक्षको अभियोग दाबी र पुनरावेदन जिकिरसमेत देखिँदैन। साथै लागु औषधको कारोबार गर्न आवश्यक पर्ने लागु औषध नाप तौल गर्ने कुनै साधन वा सरसमान यी प्रत्यर्थी/प्रतिवादीबाट बरामद गरेको स्थिति पनि देखिँदैन। निजले उक्त लागु औषध रु. ७,०००।– मा खरिद गरेको भन्ने निजको बयान बेहोराबाट देखिन्छ। लागु औषध खरिद गर्दा लागेको रकमको अङ्क सामान्य नै रहेको र सो रकमबाहेक अरू रकम एवम् लागु औषध निजबाट बरामद भएको देखिँदैन। यसरी यी प्रतिवादी कमल कार्की लागु औषध

बिक्री वितरण गर्नका लागि सञ्चय गरेको पुष्टि हुने प्रमाण गुजार्न नसक्ने वादी पक्षको पुनरावेदन जिकिर तथ्य सङ्गत नभई मनासिब देखिन नआएकोले यी प्रतिवादी लागु औषधको बिक्री वितरण अर्थात् कारोबारमा संलग्न रहेकोले अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुनुपर्ने भन्ने नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रत्यर्थी प्रतिवादीले सहप्रतिवादी कमल कार्कीउपरको अभियोग दाबीको मतियारको कसुरमा लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४ (१) (छ) (१) को आधा सजायको मागदाबी रहेकोमा माथि उल्लेख गरिएबमोजिम सहप्रतिवादी कमल कार्कीउपरको ऐ. ऐनको दफा ४ को देहाय (च) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १४ को उपदफा १ देहाय (छ) (१) बमोजिमको सजायको मागदाबी पुग्न नसक्ने भई निजलाई ऐ. ऐनको दफा १४ को उपदफा (१) खण्ड (ङ) को कसुरमा सोहीबमोजिम सजाय हुने ठहर भएको र यी प्रतिवादी विजेन्द्र प्रजापतीले सहप्रतिवादी कमल कार्कीलाई लागु औषध बिक्री गर्ने व्यक्ति सुनील भन्नेको फोन नं. उपलब्ध गराइदिएको र निज कमल कार्कीले लागु औषध (ब्राउन सुगर) खरिद गरेको देखिन आएकोले यी प्रतिवादी विजेन्द्र प्रजापतीलाई सहप्रतिवादी कमल कार्कीलाई भएको सजायको आधा सजाय हुने ठहऱ्याएको सुरू जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७०।१२।०४ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी विजेन्द्र प्रजापतीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुनुपर्ने भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रत्यर्थी प्रतिवादी कमल कार्कीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ दफा ४(च) को कसुरमा ऐ. ऐनको दफा १४(१) (ङ) बमोजिम एक वर्ष कैद र रु.१०,०००।- (दश हजार) जरिवाना र प्रत्यर्थी प्रतिवादी विजेन्द्र प्रजापतीलाई ऐ. ऐनको दफा १७ बमोजिम ६ महिना कैद र रु.५,०००/- जरिवाना हुने ठहऱ्याएको सुरू जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७०।१२।०४ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने

इजलास अधिकृत : मनोज बराल

कम्प्युटर : प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७९ साल चैत २६ गते रोज १ शुभम्।

## इजलास नं. १३

### ४९

**मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७४-CR-०५९९, ०७४-CR-०७५७, ०७४-CR-१३८३, ०७४-CR-१६२२, ०७५-CR-०१२७, लागु औषध खैरो हिरोइन, कैलाश बस्नेत वि. नेपाल सरकार, भिमबहादुर बस्नेत वि. नेपाल सरकार, कविता गुरुङ वि. नेपाल सरकार, पासाङ्ग शेर्पा वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. पासाङ्ग शेर्पासमेत*

प्रतिवादी कैलाश बस्नेतसमेतको मिलेमतोमा लागु औषधको कारोबार गर्ने व्यक्तिलाई कानूनी कारबाहीको प्रक्रियामा नलगी आर्थिक लाभ हासिल गर्ने प्रलोभनमा परी लागु औषध कारोबारको कार्यमा संलग्न रहेको पुष्टि भएकोले कोही व्यक्तिको साथबाट लागु औषध बरामद नभएको भन्ने आधारमा मात्र आपराधिक दायित्वबाट उन्मुक्ति पाउन सक्ने भन्ने हुँदैन। आफूलाई सुराकी भनी दाबी गरेका प्रतिवादी कानून विरुद्धका कार्यमा लागेको मिसिल संलग्न अन्य परिस्थितिजन्य प्रमाणबाट देखिन आएको हुँदा अभियोग दाबी समर्थित प्रमाण अन्यथा पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा प्रतिवादीको अदालतको इन्कारी बयान र सुराकी रहेको भन्ने आधारमा मात्र प्रतिवादी कैलाश बस्नेतले कसुरबाट उन्मुक्ति पाउन सक्ने देखिएन। तसर्थ, प्रतिवादी कैलाश बस्नेतले दिएको सुराकीको आधारमा अन्य प्रतिवादीहरू फेला परेको भन्ने अधिकार प्राप्त अधिकारीसमक्षको बयानमा

उल्लेख गरेको र निजसँग लागु औषध बरामद भएको अवस्थासमेत नदेखिएको भन्नेलाई मात्र मध्यनजर राखी यी प्रतिवादी कसुरमा संलग्न नरहेको वा निर्दोष रहेको भन्ने मान्न मिल्ने नदेखिएको हुँदा यस अदालतको प्रत्यर्थी झिकाउने आदेशसँग सहमत हुन नसकिने।

अर्का प्रतिवादी भिमबहादुर बस्नेतले आफू घटनामा संलग्न नरहेकोले अभियोग मागदाबीबाट सफाइ पाउनुपर्छ भन्ने पुनरावेदन जिकिर सम्बन्धमा हेर्दा निज प्रहरी हवलदार पदमा कार्यरत रही घुमुवा प्रहरीको रूपमा सादा पोसाकमा रही अपराधको सूचना सङ्कलन गर्ने जिम्मेवारीमा रहेको देखिन्छ । निजले लागु औषधका कारोबारमा संलग्न प्रतिवादी पासाङ्ग शेर्पालाई पक्राउ गरेपछि निजलाई प्रतिवेदनसाथ प्रहरी कार्यालयमा पेस गर्नुपर्ने त्यसो नगरी पासाङ्ग शेर्पालाई निजको श्रीमतीलाई जिम्मा लगाएको भन्ने कुरा यी भिमबहादुर बस्नेतले अदालतमा गरेको बयानबाट देखिन्छ । प्रतिवादी भिमबहादुर बस्नेतको साथबाट ६ ग्राम लागु औषध खैरो हिरोइनसमेत बरामद भएको बरामदी मुचुल्काबाट देखिएको छ भने आफ्नो साथबाट ६ ग्राम लागु औषध बरामद भएको कुरालाई निजले अनुसन्धानको सिलसिलामा बयान गर्दा स्वीकार गरेको पाइन्छ । कैलाश बस्नेत, भिमबहादुर बस्नेत र ढालबहादुर तामाङ्गसमेत भई पासाङ्ग शेर्पालाई पक्राउ गरी पैसा लिई छाडिदिएको र निजको साथबाट बरामद गरिएको लागु औषध बिक्री गर्ने प्रयोजनको लागि कविता गुरुङलाई दिएको हो भन्ने सहप्रतिवादी ढालबहादुर तामाङ्गको मौकाको बयानबाट देखिन्छ । निज प्रतिवादीसमेतले पदीय हैसियतमा प्रतिवादी कैलास बस्नेतको सहयोग लिई लागु औषध बरामद गर्ने, जसको साथबाट लागु औषध बरामद भएको हो, सो व्यक्तिलाई छाडिदिने र बरामदी लागु औषध अर्कै व्यक्तिलाई बिक्री वितरणको लागि दिने गरेको भन्ने कुरा प्रतिवादीहरू कैलाश बस्नेत, ढालबहादुर तामाङ्ग र कविता गुरुङको मौकाको बयानबाट देखिन आएको छ। प्रतिवादी भिमबहादुर बस्नेतले अदालतमा बयान गर्दा आरोपित कसुरमा इन्कार गरी बयान गरेको भए पनि मौकामा बयान गर्दा कसुर स्वीकार गरिरहेको पाइन्छ । साथै प्रतिवादी कविता गुरुङले मौकाको बयानमा आफूसमेत आरोपित कसुरमा साबित भई भिमबहादुर बस्नेतसमेत भई आफूलाई बरामदी लागु औषध दिएको भनी यी प्रतिवादीलाई किटानी रूपमा पोल गरी बयान गरेको देखिन्छ । अनुसन्धानको सिलसिलामा बरामद गरिएको लागु औषध खैरो हिरोइन आफ्नो साथमा राखी सोलाई बिक्री गर्ने उद्देश्यका साथ कविता गुरुङलाई दिई निजबाट केही रकम लिएको र प्रतिवादी पासाङ्ग शेर्पालाई छोड्नको लागि निजको श्रीमतीसँग रकमसमेत लिएको मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट देखिन आएको र सो तथ्य एवम् प्रमाणहरूलाई प्रतिवादीहरू कविता गुरुङ र पासाङ्ग शेर्पाको अदालतमा भएको बयानले थप पुष्टि गरेको देखिएकोले प्रतिवादी भिमबहादुर बस्नेतले अभियोग दाबीबमोजिम कसुर गरेको देखिन आयो । अपराध न्यूनीकरण गर्न अनुसन्धान गर्ने दायित्व रहेको व्यक्ति नै प्रस्तुत वारदातमा मुख्य भूमिकामा रही आपराधिक कार्यमा संलग्न रहेको देखिन आएको हुँदा निजलाई मतियारसम्म मान्नुपर्ने भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने।

प्रतिवादी कविता गुरुङले अभियोग मागदाबीबाट सफाइ पाउनुपर्छ भनी लिएको पुनरावेदन जिकिर सम्बन्धमा हेर्दा निज ताहाचल बाफलमा घर कोठा भाडामा लिई बस्ने कोठाको पलङमा सिरानीतर्फको र्‍याकमा ३०० ग्राम खैरो हेरोइन बरामद भएको भन्ने बरामदी मुचुल्का रहेको र उक्त मुचुल्काको रोहबरमा यी प्रतिवादीको सहीछापसमेत रहेको देखिन्छ भने सो अनुसारको खैरो हेरोइन आफ्नो कोठामा लुकाई सञ्चय गरी राखेको अवस्थामा बरामद भएको भन्ने कुरालाई निजले मौकामा बयान गर्दा स्वीकारसमेत गरेको देखिएको छ । सुरू जिल्ला अदालतमा यी प्रतिवादीले आफ्नो कोठाबाट लागु

औषध खैरो हेरोइन बरामद भएको तथ्यमा इन्कार रही बयान गरेको भए तापनि आफूले अनुसन्धानको क्रममा स्वीकार गरी बयान गर्नुपर्नाको कारण खुलाउन सकेको नदेखिएको र आफ्नै रोहबरमा खडा भएको बरामदी मुचुल्कालाई अन्यथा हो भन्ने तथ्ययुक्त प्रमाण पेस गर्न सकेको नदेखिएको र आफ्नो इन्कारी बयानलाई पुष्टि हुने कुनै ठोस प्रमाण निजले प्रस्तुत गर्न सकेको नदेखिने।

प्रतिवादीहरू कविता गुरुङ, भिमबहादुर बस्नेत, ढालबहादुर तामाङ र पासाङ्ग शेर्पाले अभियोग दाबी अनुसारको कसुर गरेको ठहर्नाले निज प्रतिवादीहरूलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(६)(३) बमोजिम १५ (पन्ध्र) वर्ष कैद र रु.५,००,०००।– (पाँच लाख रूपियाँ) जरिवाना हुने गरी सजाय गरेको र प्रतिवादी कैलाश बस्नेतले अभियोग दाबी अनुसारको कार्य गरेको नदेखिँदा निजले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने तथा प्रतिवादीहरू भिमबहादुर बस्नेत र ढालबहादुर तामाङ्गको साथबाट बरामद रकम जफत हुने गरी सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।०६।३० मा भएको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादीहरू भिमबहादुर बस्नेत, कविता गुरुङ, पासाङ्ग शेर्पा र कैलाश बस्नेतसमेतलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(छ)(३) बमोजिम १५ (पन्ध्र) वर्ष कैद र रु.५,००,०००।– (पाँच लाख रूपियाँ) जरिवाना हुने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।०४।१७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : दीक्षा प्रधानाङ्ग

कम्प्युटर : सन्जय गुरुङ

इति संवत् २०७९ फाल्गुन २५ गते रोज २ शुभम्।